

न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वर पादपद्मेभ्यो नमः

श्रीपंचप्रतिक्रमणसूत्राणि

अनुक्रम से विधि सहित

संपादकः—

न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानंद सूरीश्वर (आत्माराम) जी महाराज के पट्ट प्रभावक युगवीर आचार्य १००८ श्री मद्विजयवल्लभ सूरीश्वर जी महाराज के शिष्य रत्न स्वर्गीय उपाध्याय १०८ श्री मनमोहनविजय जी महाराज के शिष्य पंन्यास श्री समुद्र विजय जी गणि।

प्रथमावृत्ति २००० वि०सं०२००७	वीर निर्वाण स० २४७६ आत्म स० ५५	मूल्य ३) ई० सन् १९५०

Printed by L. Sunder Lal Jain Secretary Shri Atmanand Jain Sabha Ambala City, at the Jain Printing Press Ambala City & published from Shri Atmanand Jain Sabha Ambala City

मूल श्लोक

योगा भोगानुगामी द्विज भजन जनिः
शारदा रक्ति रक्तो ।
दिग्जेता जेतृ जेता मतिनुति गतिभिः
पूजितो जिष्णु जिह्वैः ॥
जीयाद्दाया दयात्री खल बल दलनो
लोल लील स्वलज्जः ।
केदारौ दास्य दारी विमल मधु मदो-
द्दाम धाम प्रमत्तः ॥१॥

यह सामने का चित्र अम्बाला शहर निवासी स्वर्गीय सुप्रसिद्ध ला० गंगाराम जी के सुपुत्र लाला बनारसीदास जी ने चिरञ्जीवी विजय कुमार जी के पुत्र आनन्दकुमार की जन्म खुशी में सादर भेंट किया ।

जिनकी अनुपम विभूति नवयुग प्रवर्तक न्यायाम्भोनिधि ।।
युग प्रभावक जैनाचार्य ।।



श्री श्री १००८ श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी ।।
(आत्मारामजी) महाराज ।।

जन्म वि० संवत १८९६ चैत्र शुक्ल १	ढूंढक दीक्षा—वि० संवत १९१०
लेहरा (पंजाब)	मालेरकोटला (पंजाब)
संवेगी दीक्षा—वि० संवत १०३२	आचार्य पद—वि० संवत १९४४
अहमदाबाद (गुजरात)	पालीताणा (सौराष्ट्र)
स्वर्ग-गमन—वि० संवत् १९५- ज्येष्ठ शुक्ल ८	गुजरांवाला (पंजाब)

॥ समर्पण ॥

पू० पा० परम गुरुदेव, अज्ञान तिमिर तरणि, कलि
काल कल्पतरु, पंजाब केसरी, युगवीर,
जैनाचार्य १००८ श्रीमद् विजयवल्लभ
सूरीश्वर जी महाराज साहब के
पुनीत करकमलोंमें यहपुस्तक
सादर सविनय सनम्र
वंदनपूर्वक समर्पित
की जाती
है।

आपश्री परम गुरुदेव जी के पुनीत चरण-
कमलोपासक तुच्छ सेवक तथा कृपा एवं विश्वासपात्र

समुद्र



मूल श्लोक

युक्तो योगैः युगाद्यो विधिवर विभवः,
शस्त शस्तः शमाशः ।
सत्व स्वत्वः सनिस्वः सविजय सदजः,
वल्लभः पात्रनाभः ॥
सत्सेव्योऽयं सभव्यो विमल रविकलः,
सत्य सन्धः सदासः ।
तप्त्वा तुष्ट्या तनोतु प्रगतिम प्रमितिं,
धर्म कार्यें धरौकाः ॥१॥

❀ यह सामने का चित्र ❀

श्री छन्ना लाल सोहन लाल जी करनावट कलकत्ता की ओर से सादर भेंट ।

विश्ववत्सल, अज्ञान तिमिरतरणि, कलिकाल कल्पतरु, पजाब-केशरी

जैनाचार्य श्रीश्री १००८ श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज



जन्म सं० १९२७ कार्तिक शुदी २
बडौदा

दीक्षा-सं० १९४४ वैशाख शुदी १३
राधनपुर

आचार्यपद—सं० १९८१
मार्गशीर्ष शुक्ला ५, लाहौर

अज्ञान तिमिरतरणि पद सं० १९८९
वामनवाडा

प्रस्तावना

चार गति रूप अनाद्यनंत संसार में सभी जीव सुख को चाहते हुए अनेक प्रकार के व्यवसायों में व्यग्र हो रहे हैं। परंतु सच्चे सुख के स्वरूप के अनभिज्ञ होने से कृत्रिम सुख की प्राप्ति से संतोष मानने पर भी, अन्त में मृत्यु के आमंत्रण के समय अत्यंत निराश हो जाते हैं। ऐसा देखने पर भी मानव जाति सच्चे सुखको समझकर उसे प्राप्त करने की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देती।

सच्चा सुख मिशरी में मिठास की तरह आत्मा में रहता है यानि जैसे मिठास मिश्री से अलग नहीं रहती, वैसे ही सुख आत्मा को छोड़ कर अनात्मा (जड़ात्मा) वस्तुओं में नहीं रहता, क्योंकि सुख आत्मा का ही गुण है। परंतु अज्ञानी जीवों ने पुण्य कर्म के उद्भव से होने वाले पौद्गलिक वस्तुओं के अनुकूल संयोगों को ही सुख मान रखा है, जो कि कृत्रिम है। जब उन संयोगों का वियोग होता है तब दुख मानते हैं। या पाप के उदय से होने वाले प्रतिकूल जड़ात्मक संयोग से दुख मानते हैं। इस प्रकार संयोग जन्य वस्तु (मात्र) कृत्रिम होती है, और ऐसे सुख दुख में श्रद्धा रखने वाले, दुःखों से छूट कर सुखस्वरूप नहीं हो सकते।

सर्वज्ञ देव ने कर्मों को दुःख और आत्म स्वरूप को सुख बतलाया है। जब तक आत्मा कर्मों से मुक्त होकर विकसित नहीं होती, तबतक सच्चा सुख प्राप्त हो ही नहीं सकता। क्योंकि कर्मों का संसर्ग आत्मा के सुख स्वरूप को ढांप लेता है। अज्ञानी जीव कृत्रिम सुख (दुःख) को ही सुख मानता है। इसी लिये कषाय गर्भित राग द्वेष का अत्यंत आदर करता है, जिस से कि सच्चे सुख से वंचित रहता है। ऐसे जीवों की मिथ्या श्रद्धा हटा कर सम्यग् श्रद्धा द्वारा सच्चा सुख प्राप्त कराने के लिये पूर्व महर्षियों ने सामायिक-प्रतिक्रमण व वीतराग देव के स्तुति स्तोत्र की संकलना की है। जिसका आदर कर अनेक जीवों ने कर्म से मुक्त होकर शाश्वत सुख प्राप्त किया है।

निष्कारण बंधु-वीतराग भगवान् ने संसारी जीवों को दुःखों से छूटने के लिये प्रतिक्रमण को प्रधान योग बतलाया है। जो कि साधुओं और गृहस्थियों का सुबह शाम अवश्य कर्तव्य होने से इस को आवश्यक भी कहते हैं। सामायिक, चतुर्विंशति स्तव, वंदन, प्रतिक्रमण,

कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान इस तरह आवश्यक छः प्रकार का है।

इस छः प्रकार के आवश्यक से दिन व रात में कर्म के सहयोग से आत्मा के ऊपर गिरी हुई कर्म की रज झड़ जाती है। आवश्यक के स्वरूप से अनभिज्ञ को जीव कहते हैं(प्र०)दिन व रात में किये गये अपराधों का जिक्र किसी भी आवश्यक में नहीं आता, तो फिर आवश्यक क्रिया के सूत्रों को मुख से बोलने से क्या लाभ? क्योंकि उन से अपराध स्वरूप होने वाले पापों से मुक्ति नहीं होती?(उ०)जो इसप्रकार कहतेहैं उनको इस बात का ज्ञान नहीं है कि आवश्यक करने वाला प्रारम्भ में ही सव्वसवि. सूत्र को पढ़ता हुआ दिन में, व रात्रिमें मन, वचन और कायासे कियेहुए अपराधों की आलोचना करके मिथ्या दुष्कृत देता है। यानि वह यह कहता है कि मैंने दिन में या रात्रि में जो कुछ अपराध किया हो वह सब मिथ्या हो जाए। इस प्रकार सब आवश्यकों में पापों की आलोचना द्वारा किये हुए सभी अपराधों का स्मरण करके पश्चात्ताप पूर्वक मिथ्या दुष्कृत देकरके शुद्ध होना बतलाया है।

प्रथम सामायिक आवश्यक में सावद्य व्यापार (जिस में जीवों को दुःख होवे ऐसे व्यापार) न करने की प्रतिज्ञा करता है। चतुर्विंशति स्तव रूप दूसरे आवश्यक मे चौवीस तीर्थङ्कर रूप परमात्मा का ध्यानस्थ होकर स्मरण करता है। तीसरे वंदना आवश्यक से मार्ग दर्शक गुरुओं को वंदना करता है। फिर अठारह प्रकार से किये हुए पाप की आलोचना करता हुआ मन, वचन, काया से उस पाप की निष्फलता चाहता है। फिर संसार वासी जीव मात्र जो चौरासी लाख जीव योनियां कही जाती हैं उनको किसी भी प्रकार से दुःख दिया हो तो मन, वचन, काया से सब जीवों से क्षमा माँगता हुआ, अपराधों का मिथ्यादुष्कृत देता है। फिर चतुर्थ प्रतिक्रमण आवश्यक से जीवों को दुःख न हो, इस इरादे से की हुई प्रतिज्ञाओं में स्खलना द्वारा किये हुए अपराधों का स्मरण करके गुरु या आत्मसाक्षी उस को बुरा समझ निंदा करता हुआ शुद्ध होता है। पाँचवें कायोत्सर्ग आवश्यक से दर्शन-ज्ञान और चारित्र रूप आत्मा के गुणों के विपरीत आचरणों से होने वाली मलिनता को कायव्युत्सर्ग यानि स्थान, मौन और ध्यान द्वारा काया को निश्चल कर

के परमात्मा के गुणों का स्थिर चित्तसे ध्यान करता हुआ आत्मा को शुद्ध करता है, छट्ठे प्रत्याख्यान आवश्यक से मात्र देह और जीवन-पोषक आहार, कि जिस में जीवों की विराधना—प्राणों से मुक्त हो जाय ऐसी दुःखोत्पादक प्रवृत्ति की मर्यादित प्रतिज्ञा करता है। इस तरह छः आवश्यक का हेतु विचारते हैं तो कर्म-वश होकर जिस में खास करके मोहनीय कर्म की प्रेरणा से सकर्मक आत्मा जो अपराधी बनती है उन अपराधों से उसे छुड़ाने का ही प्रयत्न होता है।

इस पुस्तक में यही आवश्यक करनेका तरीका बतलाया गया है। पूर्व पुरुषोंने इसकी प्राकृत गद्यपद्य में संकलना की है। जबतक जीव अपराधके कार्योंसे निवृत्त नहीं होता। तब तक उसको प्रति दिन आवश्यक कार्य निरंतर आदर करनेकी जरूरत बनीरहती है। इस पुस्तकमें वीतराग स्वरूप शुद्धात्माओं के स्तुति स्तोत्र भी दिये गये हैं। जो आत्म शुद्धि के लिये अत्यंत आदरणीय हैं। इस लिये आत्मा शुद्धि को चाहना वालों को चाहिये कि इस पुस्तक को सरहस्य आद्यंत पढ़ कर अवश्य लाभ उठावें।

आचार्य श्री विजय कस्तूर सूरि जी महाराज।

निवेदन

प्रिय महानुभावो !

इस असार संसार में सब प्राणी सुख की अभिलाषा रखते हैं। सुख आवश्यकीय धार्मिक क्रियाओं के करने से ही प्राप्त हो सकता है, जैनसमाज में धार्मिक क्रियाओं का महत्व कितना है। यह बात किसी से छुपी नहीं है। अतः आवश्यक धार्मिक क्रियाओं की नितान्त आवश्यकता बनी रहती है।

हम बहुत दिनों से श्री गुरु देव जी के मुखसे सुन रहे थे कि उन का विचार एक ऐसी श्री पंचप्रतिक्रमण पुस्तक छपवाने का है जिस से अनुभव शून्य भी श्रावक पुस्तक पाठ को क्रमशः पढ़ता जाए और साथ ही साथ प्रतिक्रमण करता जाए।

गत वर्ष जैन भाइयों के परम सौभाग्य से पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय, पंजाब श्री संघ के प्राण, जैनाचार्य श्री १००८ श्री मद्विजयवल्लभ सूरीश्वर जी महाराज का चातुर्मास बीकानेर में हुआ, आप की ही असीम कृपा से तथा आप के शिष्यरत्न स्वर्गीय उपाध्याय जी महाराज श्री सोहन विजय जी के विनयी शिष्य पंन्यास महाराज श्री समुद्र विजय जी गणि के अथक परिश्रमसे अब हमें सात रंगीनचित्रों और बढ़िया काग़ज़

तथा सुन्दर अक्षरों से विभूषित इस पुस्तक को प्रकाशित करनेका सुअवसर मिला है, और केवल प्रचार भावना से ही अब हम इसे अपने पाठकवर्ग के कर कमलों तक सस्ते दामों में पहुंचाने में समर्थ हुए हैं। जिसकी हमें बड़ी प्रसन्नता है।

मैं अन्त में श्री ऋषभचन्द जी डागा कलकत्ता, का हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिन्हों ने कि अपना अमूल्य, समय देकर चित्र निर्माण कार्य को बड़ी कुशलता से निबाहा, तथा धर्म प्रभावना एवं श्रीगुरु भक्ति का प्रदर्शन कियाहै।

विशेषतः- मैं पं० परमानन्द जी शास्त्री ओ. टी., प्रधान- संस्कृताध्यापक श्री आत्मानन्द जैन हाई स्कूल अम्बाला शहर, की अमूल्य सहकारिता को स्वीकार करता हुआ, उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिन से कि हमें इस पुस्तक के शीघ्र तैयार करने और प्रकाशन, संशोधनादि में पूर्ण सहायता मिली है। श्री विजय कुमार जैन भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्हों ने कि समय समय पर पं० जी को पुस्तक सम्बन्धी परामर्श दिया है।

सुन्दर लाल जैन
मन्त्रीः-
श्री आत्मानन्द जैन सभा, अम्बाला शहर।

उपयोगी स्थूल स्थल विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

तीर्थ वन्दना—

प्रातःकाल के पच्चक्खाण

सीमन्धर जिनस्तवन—

स्नातस्स की स्तुति—

पाक्षिक वंदि सूत्र— ... २४३

चैत्यवन्दन विभागः—

स्तवनानिः—

श्री पर्युषण पर्व स्त०

अथ सज्झाय—

अथ नवस्मरणादि स्तो०

पौषध विधि

—: शुद्धि पत्राणि :—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध—	शुद्ध—
५	७	मुदुवत्ति	मुहवत्ति
११	६	पायल	पायालि
११	१०	निणत्रिवाई	जिणविवाई
१६	१०	मु त्रिड्ढ–	मुत्रिड्ढ
२६	१७	पोपट	पोसह
३७	२	पकिमण काले	पडिक्कमण काले
३८	१३	तित्तीन-नराय	तित्तीसन्नराए
३६	११	कोराय	कोराए
४०	३	आदिभत राइश्र–	आभितर राइश्र

३७७	३	नमोनिद्धाणं	नमोसिद्धाणंनमो आयरियाणं
,,	१४	तुज्झपणामो	तुज्झनणामो
३७६	११	मुतारयाऽमोयं	मुतारयाऽसोक्खं
३६६	४	तमसः परन्तात्	तमसः परस्तात्
,,	१४	तुभ्यं नमः	तुभ्यं नमः
४११	४	जन बांच !	जन बाँचय !
४३३	१८	परगोने	पर होने
४३४	३	,,	,,
४४०	६	सामादियं	सामाइयं
४४२	१७	सुदमेहिं	सुहमेहिं
४४४	१६	शुद्ध फुरसनामय	शुद्ध स्पर्शनामय
४६०	१०	थिईए	थिईए
४६८	६	तुहयेभावओ	तुहयभावओ
४७३	४	वइयकंतो	वइक्कंता
४७६	२	फेटा वदन करके	फेटा वंदन मरथ एण—वंदामि करके
४७८	१	श्री शत्रुंजय	श्री शत्रुञ्जय
,,	६	पृ० ७७	पृ० ४७
४७६	३	सहसागारे	सहसागारेणं
४८०	६	नीविविगरओ	नीविविगइओ
४८४	८	बैठ कर लेनी चाहिये	बैठ कर लेनी चाहिये
४८७	२	विद्यारे	विवाइं
४६१	१०	पृ० ४७८	४८५
४६३	१	पृ० ४७८	४८५
५०४	१३	ममदेवो	मह देवो
५१४	५	पदका लाभ लेकर	पद का नाम लेकर
५१७	५	दोष अहारे	दोष अठारे

चित्र नं० १

"नक्शाचित्र देखके पूर्व-स्थापना स्थापित करने की विधि"



"[illegible] [illegible] श्री नागचंद नरंजनदास ओसवाल 'जैन'
[illegible] [illegible] की ओर से सादर भेंट की गई"



* श्री वीतरागाय नमः *

न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्री मद्विजयानंद सूरीश्वर सद् गुरुभ्यो नमः

श्री पंच-प्रतिक्रमण सूत्राणि

अनुक्रम से विधिसहित

अथ सामायिक लेने की विधि

श्रावक श्राविका सामायिक लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बांये (वाम) हाथ में मुहपत्ति मुख के आगे रखकर दाहिने (जीमणे) हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकार मंत्र और पंचिंदिय पढ़े।

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं

च सव्वेसिं ॥ ७ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥

(एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥

ऐसे नवकार और पंचिंदिय कहके स्थापनाचार्य स्थापन करे (जो स्थापना चार्य होवे तो नवकार और पंचिंदिय कहके नये स्थापना चार्य जी स्थापने की कोई जरूरत नहीं) पीछे पंचांग नमा कर ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं, पडिक्कमामि ? इच्छं ॥ १ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे

॥४॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ २ ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न

पारेमि ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(यहां एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं, पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स, उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-

चित्र नं० ७

"काउस्सग्ग खड़े होकर तथा बैठकर लेने की विधि"



"यह तसवीर श्री सदासुखराय केसरदास ओसवाल 'जैन' अम्बाला शहर की ओर से सादर भेंट की गई"

मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ? "इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? "इच्छं"

(दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार पढ़े)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो

आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

(पीछे 'इच्छकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ?' ऐसे बोलकर 'करेमि भंते' उच्चरे । यदि गुरु महाराज हों तो उन से उच्चरावे । गुरुदेव की गैरहाजरी में अपने पहले किसी ने सामायिक ली हो तो उनसे उच्चरावे, नहीं तो स्वयं उच्चरे नीचे लिखे अनुसार)

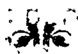
करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहि आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं"
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं"
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? "इच्छं"

(दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार पढ़े । फिर प्रतिक्रमण शुरु करे)



॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

(प्रथम ऊपर लिखे अनुसार सामायिक लेकर पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिणदुसुमिण-उड्डावणी-राइयपायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? "इच्छं" कुसुमिण-दुसुमिण-उड्डावणी-राइय-पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥२॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(चार लोगस्स चंदेसु-निम्मलयरातक (कुसुमिण आया हो तो सागर-वरगंभीरातक) या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना। काउस्सग्गपार के नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(कहकर चैत्यवंदन करना बांया घुटना ऊंचा करके)

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? इच्छं । जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह जगभाव-विअक्खण । अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठविणा-सण, चउवीसं पि जिणवर जयंतु अप्पडिहयसा सण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघ-यणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुं कोडिहिंवरनाण, समणह कोडिसहस्सदुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणी ॥ २ ॥ जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु नेमि-जिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं

चित्र नं० ३

"चैत्यवन्दन करने की विधि"



"यह तसवीर ला इन्द्रसेन प्रेमचन्द ओसवाल 'जैन' अम्बाला शहर की ओर से सादर भेंट की गई"

मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवर-विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागयसंपइअ वंदुं जिणसव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। बत्तिसय बासिआई, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोडिसयाइं, कोडिबायाल लक्ख अडवन्ना। छत्तीस सहस असिइं (असिआई) सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायाले माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जो-अगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं,

मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणं-तमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहरं पासं, पासंवंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ॥ नर–तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिण चंद ॥ ५॥

(दोनों हाथ जोड़कर मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं! भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-

पूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि नियाणबंधणं वीयराय! तुह समए। तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ। संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व-कल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

फिर

१–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। भगवान् हुं।

२–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। आचार्य हुं।

३–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। उपाध्याय हुं।

४–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधु हुं। फिर जो वृद्ध बड़ा श्रावक हो वह कहे इच्छकारी समस्त श्रावकों को वांदुं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय सदिसाहुं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं? "इच्छं"

(एक नवकार मंत्र पढ़कर)

॥ अथ-भरहेसर की सज्झाय ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो। सिरिओ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी। कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ । भद्दो दसण्णभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो। धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो, अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो

महागिरी । कालयसूरी संबो, पज्जुण्णो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पभवो विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ । सिज्जंस कूरगड्डुअ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिंनामग्गहणे, पावप्पबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन-बाला, मनोरमा मयणरेहा दमयंती । नमया-सुंदरी सीया नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥८॥ राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवी । जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावइ, पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥ बंभी सुंदरि रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती अ । देवइ दोवइ धारणि, कलावई पुप्फचूला अ ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लक्ख-मणा सुसीमा य । जंबूवई सच्चभामा, रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥ ११ ॥ जक्खा य जक्ख-दिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना अ । सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥

इच्चाइ महासइओ, जयंति अकलंकसीलकलि· आओ। अजवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥

(एक नवकार मंत्र पढ़े पीछे)

इच्छकारी सुहराइ, सुखतप शरीरनिराबाध सुखसंजमयात्रा निर्वहतेहोजी। स्वामी - साता है जी ?

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइयपडि· क्कमणे ठाउं ? "इच्छं"

(कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रखकर)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(बायां घुटना ऊँचा करके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगना· हाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं लोगपज्जोअग·

राणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गद-
याणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं,
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं,
धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडि-
हयवरनाण-दंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं
बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं
सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-
मव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं,
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥६॥
जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए
काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण
वंदामि ॥ १० ॥

(खड़े होकर हाथ जोड़के)

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं
पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि नं

कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

असलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ २ ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक 'लोगस्स' चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोगस्स नीचे लिखे अनुसार पढ़े)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसं पि केवली। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च। चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि

रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोएआरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्ति-आए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति आए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना फिर पढ़े)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्स—ब्भूअभावच्चिए ।

लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चा सुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्ति आए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जावअरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(अतिचार की आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करना, गाथा न आती हों तो आठ नवकार गिनना; वे आठ गाथाएँ नीचे लिखे अनुसार हैं)

नाणंमि दंसणंमिश्र, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि। आयरणं आयारो, इअ एसो-पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे। वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वि- तिगिच्छा अमूढदिट्ठीअ। उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे। अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणो-अरिया, वित्ती-संखेवणं रसच्चाओ, कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बल-विरिओ, पडिक्कमइ जो जहुत्त-

माउत्तो। जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८॥

(काउस्सग्ग पार कर नीचे लिखे अनुसार सिद्धाणंबुद्धाणं पढ़े)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमोसया सव्वसिद्धाणं॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं॥२॥ इक्कोविनमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिंवा॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

(यहां तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहकर नीचे लिखे अनुसार द्वादशावर्त वंदना देवे)

सुगुरुवंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणि-

ज्जाए निसी- हिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअव-इक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो, राईअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छो-वयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए असायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे

किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइवइ-क्कंता ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए असायणाए तित्तीस-न्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदु-क्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइ-क्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(खड़े खड़े हाथ जोड़कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते

सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जंखंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप-काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार-लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। इसी प्रकार चौरासी लाख जीवयोनियों में से मेरे जीवने किसी जीवको हनन किया हो, कराया हो, करते को भला जाना हो वह सब मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं।

पहला प्राणातिपात दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान चौथा मैथुन, पांचवाँ परिग्रह, छट्ठा

क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववां लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवां परपरिवाद, सत्रहवां मायामृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्वशल्य। इन अठारह पापस्थानों में से मेरे जीव ने जो कोई पाप स्थानक सेवन किया हो, कराया हो, करते को भला जाना हो, वे सब मन वचन कायासे मिच्छामि दुक्कडं ॥ ❀

❀ पोपध में सात लाख के स्थान में नीचे लिखे अनुसार बोलना "इच्छा कारेण संदिसह भगवन्! गमणा गमणे आलोउं? इच्छं इरिया समिति, भाषा समिति, एसणा समिति [illegible] समिति, पारिठाव- [illegible], वचन गुप्ति, काय गुप्ति, यह अष्ट (आठ) प्रवचन माता श्रावक धर्मे सामायिक पोपह में अच्छी तरह पाली

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं' तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(दाहिना गोडा ऊँचा कर के बैठ कर और हाथ जोड़ कर नीचे लिखे अनुसार पढ़े)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते! सामाइयं! सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

नहीं, खंडना, विराधना, हुई होवे वह मन, वचन, काया, कर मिच्छामि दुक्कडं" ॥



चित्र नं० ४

"वन्दित्तु का पाठ पढ़ने की विधि"



"यह तसवीर ला. इन्द्रसेन प्रेमचन्द ओसवाल 'जैन' अम्बाला शहर की ओर से सादर भेंट की गई"

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं ,पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्य सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदुत्तु (श्रावक प्रतिक्रमण) सूत्र

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ वायरो वा तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे वहुविहे अ आरंभे। करावणे, अ करणे, पडि-

क्कमे राइअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभि-योगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिं-गीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडि-क्कमे राइअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिअ-वयणविरईओ । आयरिअम-

प्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा-
रहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ।
वीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१२॥
तइए अणुव्वयम्मि, थूलग परदव्वहरण-विरई-
ओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं
॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरूद्धग-
मणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे राइअं
सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं
परदार-गमण विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे,
इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ
इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थ
वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १६ ॥
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरिअमप्पसत्थंमि।
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण—धन्न—खित्त—वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ
कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे
राइअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे,

दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १६ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलदुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाड़ी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत लक्खरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसलजंतग तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टणवन्नग,-विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।

दंडम्मि अणट्टाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्टाणे तहा सइ विहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइयारो, मा मज्झंहुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स
॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु सन्नाकसाय-
दंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो
अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि
हु पावं समायरे किंचि। अप्पो सि होई बंधो,
जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडि-
क्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं
उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा
हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं आलो-
अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥
कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरु-
सगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व
भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ
जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं काही

अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुण-उत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय-पावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउवीसजिणविणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरू-

वणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता ? जत्ताभे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराय जं-किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स

खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए-निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं! निसीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाय माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराय सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(दाहिना हाथ ज़मीन पर रख कर और बायां हाथ मुँह के साथ लगा कर, जमीन पर सिर रख कर, नीचे का पाठ पढ़े)

अब्भुट्ठिओमि (गुरुखामणा) सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरराइअं खामेउं 'इच्छं' खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमंवा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

(फिर दो वांदना देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए

पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसाय-णाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाय कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसाय-णाय जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसी-हि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअं वइक्कंता ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाय माणाए

मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छो-
वयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए जो मे अइआरो
कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(हाथ जोड़ के मस्तक को लगा कर)

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-
गणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगव-
ओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता,
खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स
जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥३॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं
पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुवि-
हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न
कारवेमि तस्स भंते-पडिक्कमामि निंदामि गरि-
हामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे राइओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हंगुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभ-ग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां पर तपच्चितवन का काउस्सग्ग करना न आता हो तो चार लोगस्स या सोलह नवकार का करना)*

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-

*तपचिंतन का काउस्सग्ग करने की विधि: काउस्सग्ग की तरह बैठ के या खड़े हो कर मन ही मन में चिंतन करे कि हे चेतन ! निकट उपकारी, शासनपति, चरम-तीर्थंकर श्रमण, भगवान्, श्रीमहावीरस्वामी जी ने छःमासी तप किया था अर्थात् छः मास तक चउविहार उपवास किये थे तो क्या तू कर सकता है ? उत्तर में

वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणंच ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।

चिंतवे की न शक्ति ही है और न परिणाम (भावना) ही है। फिर चिंतवे, एक उपवास कम छः मासी तप कर सकता है। उत्तर में न शक्ति ही है, न परिणाम ही है। इसी प्रकार दो उपवास कम, तीन उपवास कम यावत् उनतीस (२९) उपवास कम तक चिंतन करे। उत्तर में उसी प्रकार न शक्ति ही है और न परिणाम ही है, कहे। बाद में हे जीव! पंचमासी तप कर सकता है, चौमासी तप कर सकता है, तीन मासी कर सकता है, दो मासी भी कर सकता है, मास-खमण भी कर सकता है? उत्तर में उसी प्रकार न शक्ति ही है और न परिणाम ही है। पीछे एक उपवास कम मास-खमण, दो उपवास कम मास खमण, तीन उपवास कम मास खमण, इस तरह से यावत् तेरह कम उपवास मास खमण अर्थात् सत्रह उपवास तक चिंतन करना। उत्तर में उसी प्रकार न शक्ति ही है न परिणाम ही है, यह विचार

चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदीय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(छट्ठा आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहनी, फिर नीचे लिखे अनुसार दो खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निस्सीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे,

---

करना अर्थात् तू उगंत्रीस (२९) उपवास कर सकता है, अट्ठावीस कर सकता है, यावत् सत्रह (१७) उपवास तक चिंतन करे। बाद में फिर चौत्रीस (३४) भक्त यानी सोलह उपवास तू कर सकता है यावत् ४ भक्त तक यावत् एक उपवास तक चिंतन करना। उत्तर में उसी प्रकार न शक्ति ही है न परिणाम ही है, यह विचार करना।

राइअ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाय माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण

फिर आयंबिल, निवि, एकासना, बियासणा और अमड्ड परिमुड्ढ, साढपोरसी, नवकारसी, मुट्ठसी कुछ भी कर सकता है। यहां सब स्थानों में पहले जो तप न किया हो और करने की भावना न हो तो उसी तरह न शक्ति

भे, राइअ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाय कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो प-डिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

(हाथ जोड़ कर)

सकल तीर्थ वंदुं कर जोड़, जिनवर नामे मंग-ल कोड । पहिले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर

ही है न परिणाम ही है, विचार करना । कदाचित् शक्ति तो है परन्तु करने की भावना न हो तो यह चिंतवन करे-'यह तप करने की शक्ति तो है परन्तु परिणाम नहीं है' । अंत में जो तप करना हो वहां कहे कि शक्ति भी है और परिणाम भी है अर्थात् अमुक तप आज मैं करूंगा—ऐसा चिंतन कर 'नमो अरिहंताणं' कहके काउस्सग्ग पारे और प्रगट लोगस्सकहे ।

चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अट्ठा-
वीस कह्याँ, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां । चौथे
स्वर्गे अडलख धार, पाँचमे वंदुं लाख ज चार
॥ २ ॥ छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस
सहस प्रासाद । आठमें स्वर्गे छः हजार, नव
दशमें वंदुं शतचार ॥३॥ अग्यार बारमें त्रणसें
सार, नवग्रैवेयके त्रणसें अढार । पांच अनुत्तर
सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली
॥ ४ ॥ सहस्स सत्ताणुं त्रेविश सार, जिनवर
भुवन तणो अधिकार । लांबा सो जोजन
विस्तार, पचास उंचाँ बहोंतेर धार ॥ ५ ॥
एकसो एंशी बिंब परिमाण, सभासहित एक
चैत्ये जाण । सो कोड बावन कोड संभाल
लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसें उपर
साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रणकाल ।
सात कोड ने बहोंतेर लाख, भुवनपतिमां देव-
ल भाख ॥७॥ एकसो एंसी बिंब प्रमाण,

एक एक चैत्ये संख्या जाण । तेरसें कोड नेव्याशी कोड, साठ लाख वंदुं कर जोड़ ॥८॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ । तीर्च्छा लोकमां चैत्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥९॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह । ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥ समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीस । विमलाचल ने गढगिरनार, आबु ऊपर जिनवर-जुहार ॥११॥ शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार । अंतरीक वरकाणो पास, जिरावलोने थंभण पास ॥१२॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह । विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥१३॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस्स सिलांगना धार । पंच महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार ॥१४॥

बाह्य अभिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुणमणिमाल। नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं। जीव कहे भवसायर तरूं ॥ १५ ॥

हिन्दी तीर्थ वंदना।

(हरि गीत छन्द)

विहरमान जिनन्द वंदू उदित केवल भास्करम्।
असंख्य लोक निवास प्रभु के शाश्वता अघनाशकरम् ॥
अष्टापदे संमेत चंपा नेमि गढगिरि मंडणा।
श्रीवीर पावा विमलगिरिवर केसरा दुःख खंडणा ॥ १ ॥
आबू तरंगा दरस चंगा शिव अभंगा कारणा।
श्री अंतरीक्ष जिनंद पारस थंभणा दुःख वारणा ॥
शंखेश्वरा अलवेसरा जग पावना जीरावला।
चिंतामणि फलवधि पारस मल्लि भवोदधिनावला ॥ २ ॥
वरकाण राण नाडाले नगरे वीर घांणे गोडिये।
श्री नाडुलाइ सुवीर राता वंदीये अघ तोडिये ॥ ३ ॥
श्री पाली पाटण राज नगरे घणोघ मंडण पास जी।
इम जैमथानक चैत्य जिनवर भविक पूरे आश जी ॥
सहु साधु गणधर केवली फुनि संघ भवजल तारणा।
शुभ ज्ञान दर्शन चरण साचा महानंदे कारणा ॥
यह तीर्थ वंदन भवनिकंदन भविक शुभ मन कीजिये।
निज रूप धारी भरम फारी अनघ आतम लीजिये ॥ ४ ॥

अथ पच्चक्खाण सूत्र।

(सवेरा हो गया हो तो जो पच्चक्खाण करना हो सो नीचे लिखे पाठ से कर लेना। रात हो तो जो पच्चक्खाण धारना हो उसे धार लेना।)

दिन के पच्चक्खाण।

(१) नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं-पच्चक्खाणः-

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइमि। चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ वोसिरामि।

(२) पोरिसी साढपोरिसी—पच्चक्खाणः—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइमि। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं,

साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमा-हिवत्तियागारेणं वोसिरइ वोसिरामि ।

(३) पुरीमड्ढ—पच्चक्खाणः—

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं अवड्ढं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइमि । चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ वोसिरामि ।

(४) एगासण बिआसण तथा एकलठाणा*का पच्चक्खाणः—

* एकलठाने के पच्चक्खाण में 'आउंटणपसारणेणं' इतना पाठ छोड़ कर और सब पाठ एगासण के पच्चक्खाणका ही बोलना चाहिये । एकलठाने में भोजन करते समय मुह और दाहिने हाथ के सिवा अन्य किसी अंग को नहीं हिलाना चाहिये और जीम कर उसी जगह चउव्विहार कर लेना चाहिये ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढ-पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइमि । उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । विगइओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । एगासणं (बियासणं) पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारणेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेणवा बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ वोसिरामि ।

(५) आयंबिल-पच्चक्खाणः-

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढ-पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइमि। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। आयंबिलं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि, आहारं-असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्-

(इन में से जो पच्चक्खाण करना हो सो करके "सामायिक, चउवीसत्थो, वंदणा, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी" या धारा हो तो धारा है जी)

(यदि पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो नीचे लिखे अनुसार "विशाललोचन" कहें ।)

इच्छामि अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(बायाँ पांव खड़ा करके हाथ जोड़ के)

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दन्तांशुकेसरम् । प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः । तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कलङ्कनिर्मुक्तममुक्त पूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् । अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥३॥

(स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसारदावानल' नीचे लिखे अनुसार कहें)

संसार दावानलदाहनीरं, संमोहधूलिहरणे-समीरं मायारसादारणसारसीरं, नमामि-वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानव मानवेन, चूला विलोल कमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोक समीहितानि, कामं नमामि जिनराज पदानितानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा विरललहरी संगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणि संकुलंदूरपारं, 'सारं' वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

फिर

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आइगराणं तित्थयराणं सयंसंवुद्धाणं । पुरसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिस-वर पुंडरीआणं पुरिवरगंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणंचक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरण दयाणं बोहिदयाणं

धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्म-सारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिह-वरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणरा-वित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआ-ए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासि-

एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्जो मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रकट 'कल्लाणकंदं' की प्रथम थुइ कहे।)

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं। पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥ २ ॥

सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट कल्लाणकंदं की दूसरी थुइ कहना)

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं। सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥

तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगणनरिं-दमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणा-सणस्स, कल्लाणपुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्न-किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए। बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं,

भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके 'कल्लाणकंदं' की तीसरी थुइ कहना)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं । मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेई नरं व नारिं वा

॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसी-
हिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं
नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य
वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमा-
हिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-
एणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-
ग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-
चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दि-
ट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सि-

द्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर 'कल्लाणकंदं' की चौथी थुइ कहना)

कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना। वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था; सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआ-णं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं लोग-पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदया-णं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर–चाउरंत– चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण–दंसण–धराणं; विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं

मोक्खगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

फिर

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेण वंदामि । भगवान् हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए-मत्थेण वंदामि । आचार्य हं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेण वंदामि । उपाध्याय हं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

फिर जो वृद्ध (बड़ा) श्रावक हो वह कहे कि "इच्छाकारी समस्त श्रावकों को वांदुं ।"

(पीछे दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर अड्ढाइज्जेसु कहे)

अड्ढाइज्जेसु, दीव समुद्देसु, पन रससु कम्म-भूमीसु, जावंत केविसाहू, रयहरणगुच्छपडिग्गह-धारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंग-धारा, अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्रीसीमंधर स्वामी आरा-धनार्थं चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं'—

॥ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन ॥

श्रीसीमंधर वीतराग, त्रिभुवन उपगारी ।
श्रीश्रेयांस पिताकुले, बहुशोभा तुमारी ॥ १ ॥
धन्य धन्य माता सत्य की, जेणे जायो जय-कारी । वृषभलंछन विराजमान, वंदे नरनारी ॥२॥
धनुष पांच से देहडीए, सोहिए सोवनवान ।
कीर्त्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥ ३ ॥ इति

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं जे अ अईआ सिद्धा, जे अ

भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

॥ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो । मुज विनतडी, प्रेम धरीने इण परें तुमे संभलावजो ॥ (ए आंकणी) जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चौसठ इंद्र पायक छे । नाण दरसण जेहने खायक छे ॥ सुणो० ॥१॥ जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे । पुंडरीगणी नगरीनो राया छे ॥

सुणो० ॥२॥ बार पर्षदा मांहि विराजे छे, जस चौत्रीश अतिशय छाजे छे। गुण पांत्रीस वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥३॥ भविजननें ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे। रुप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥४॥ तुम सेवा करवा रसीओ छुं। पण भरतमां दूरे वसीओ छुं। महा मोहराय कर फसीओ छुं ॥ सुणो० ॥५॥ पण साहेब चित्तमां धरीओ छे, तुम आणा खड्ग कर ग्रहिओछे। तब कांईक मुजथी डरीओ छे ॥ सुणो० ॥६॥ जिन उत्तम पूंठे हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाऊं शूरो। तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥७॥ इति ॥

दूसरा श्री सीमंधर जिन स्तवन

(चाल भजनियों की)

श्री सीमंधर जिन राज जी प्रभु अरज सुणो इक म्हारी (प्र० अचली) ॥ तुम दरिशन को

चित्त हुलसावे, देव मदद देने नहीं आवे।
यहां बैठा विनवुंमैं भावे, मानो अर्ज महाराज
जी, मैं शरण लई है थारी प्रभु० ॥ १ ॥
पांचमे आरे में प्रभु जायो, दुषम काल महा
दुःख पायो, अतिशय ज्ञानी कोई न सहायो, सिद्ध
करूं किम काज जी, चिंता मन में है भारी
प्रभु० ॥ २ ॥ कर्म प्रभु मुझ पाछो लागे, पाप
कराते हैं वो आगे। पिण अब भाग्य प्रभु
मुझ जागे, जान्यो गरीब निवाज जी। दिल
में लियो धार विचारी प्रभु० ॥ ३ ॥ भाव धरी
प्रभु नमन करत हूँ, शरण चरण प्रभु मन में
धरत हूं। वार वार प्रभु पांव परत हूं, ज्ञान
वान शिर ताज जी। अब धारो जगहितकारी
प्रभु० ॥ ४ ॥ सम्यग् दृष्टि सुर सुरनारी,
साधर्मी वत्सल दिल धारी। कीजो अर्जप्रभु जी
को म्हारी, तारण तरण जहाज जी।
प्रभु शिव सुख पद दातारी ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

दीन दयाल दया कर स्वामी, आतम लक्ष्मी शिव सुख धामी। आत्म रूप आनन्द पद पामी, सेवक दीन अपाज जी। वल्लभ मांगे सब पारी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

(दोनों हाथ जोड़ के मस्तक को लगा कर)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-गुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निया-ण बंधणं वीयराय ! तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि-मरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्म्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(यहाँ एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमो ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसीमंधरजिन की थुइ कहे—)

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव।
अरिहंत सकलनी, भावधरी करुं सेव।
सकलागम पारग, गणधरभाषित वाणी।
जयवंती आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥

॥ श्रीसिद्धाचल जी का दोहा ॥

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मझार।
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार ॥ १ ॥
एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा साहमो जेह।
ऋषभ कहे भव कोडनां, कर्म खपावे तेह ॥ २ ॥
प्रायःए गिरि साश्वतो, महिमानो नहीं पार।
ऋषभजिणंद समोसर्या, पूर्व नवाणु वार ॥ ३ ॥
शेत्रुंजा समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव।
गौतम सरिखा गुरु नहि, वली वली वंदुं तेह ॥४॥
सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार।
शेत्रुंजी नदी नाह्यो नहि, तेनो एले गयो-
अवतार ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-

जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं'—

श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे। भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥१॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय। पूर्व नवाणुं रिषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥२॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवड-जक्ष अभिराम। नाभिराय कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइग-राणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहि-

आणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं । अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं । धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअवट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।,

॥ श्री सिद्धाचल जी तीर्थ का स्तवन ॥

सिद्धाचलगिरि भेटथारे, धन्य भाग्य हमारां ॥सिद्धा०॥ (टेर) ए-गिरिवरनी महिमा मोटी, कहतां नावै पारा । रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणुं वारारे ॥धन्य॥ सि० ॥१॥ मूलनायक श्री आदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार । अष्टद्रव्य सुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे ॥धन्य०॥ सि०॥ भाव भगति सुं प्रभुगुण गावे, अपना जनम सुधारा । यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरय तिर्यंच गति वारा रे ॥धन्य०॥ सि०॥३॥ दूर देशांतरथी हुँ आयो, श्रवण सुणी गुण ताहरा । पतित उद्धारण विरुद तुमारो, ए तीरथ जग सारारे ॥धन्य०॥ सि०॥४॥ संवत अठार वयांसी आषाढ़, वदि आठम भौमवारा । प्रभुजी के चरण प्रताप से संघ में, क्षमारतन प्रभु प्यारारे

॥ धन्य० ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

(लावणी)

॥ दूसरा श्री सिद्धक्षेत्र स्तवन ॥

तीर्थ श्री सिद्धाचल राजे, जहाँ प्रभु आदीनाथ गाजे ॥ तीर्थ अंचली ॥ श्री सिद्धगिरि तीरथ बड़ो, सब तीरथ सरदार, गणधर पुंडरीक मोक्षसे नाम पुंडरीक गिरिधार । नाभिनन्दन इणगिरि राजे—तीर्थ० ॥ १ ॥ विमलाचल कंचनगिरि, सिद्धक्षेत्र शुभ ठाम । जो सेवे भवी भाव से, पावे अविचल धाम । धाम गुण गण का ये छाजे तीर्थ० ॥ २ ॥ जय जय श्री जिन आदि देव, धर्म धुरंधर जान । पूर्व निन्नानवे नाथ जी, आप पधारे आन । आन ये तीरथ की बाजे तीर्थ० ॥ ३ ॥ यात्रा करने के लिये ठौर ठौर के लोग, आते हैं शुभ भाव से शुद्ध पुण्य के जोग । पापी इणगिरि आते लाजे तीर्थ० ॥ ४ ॥ नंदन दशरथ राय के, रामचन्द्र

गुण धाम । पाँडव पाँचों भरत जी पाये पद अभिराम । नाम सिमरण से अघ भाजे तीर्थ० ॥ ५ ॥ दर्शन कारणे, यह तीरथ शुभकार, द्राविड वारी खिल्लजी, दश कोटी परिवार । आये शिवपुर लेने काजे तीर्थ० ॥ ६ ॥ सूरि शुक शेलक थया था वच्चा ऋषिराय । षट् नंदन देवकी तणे, राम कृष्ण के भाय । हुए इण गिरि, शिवपुर राजे तीर्थ० ॥ ७ ॥ ऋषि तपी मुनि संयमी रत्नत्रयी के धार, अनशन करी मुक्ते गये, आतम वल्लभ तार । तारणे तीरथ सिरताजे तीर्थ० ॥ ८ ॥

(हाथ जोड के मस्तक को लगा कर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि

निव्वाण वंधणं वीयराय तुह समए। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहि-लाभो अ। संपज्जउ महएअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याण-कारणम्। प्रधानं सर्वधर्म्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंद-णवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवस-ग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो

अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसिद्धाचलजी की थुइ कहना)—

पुंडरगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध ।
विमलाचल भेटी, लहीये अविचल रिद्ध ।
पंचमी गति पहोता, मुनिवर कोडाकोड ।
इणे तीरथ आवी, कर्म विपातक छोड ॥ इति ॥

॥ इति राइप्रतिक्रमण विधि संपूर्ण ॥

अथ समायिक पारने की विधिः—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग–पणग–दग–मट्टी– मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-

संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पार के लोगस्स कहना)।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभि-

थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियंपयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(ऐसे कह कर मुहपति पडिलेहना–पीछे खमासमण देना–)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिअं पारेमि ? 'यथाशक्ति' ❀

❀ यदि गुरुमहाराज के समक्ष यह विधि की जावे तो "पुणोत्रिकायव्वं" इतना गुरु महाराज के कहे बाद

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअं पारिअं 'तहत्ति'

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर मस्तक झुकाकर एक नवकार मन्त्र पढ़ कर 'सामायिअवयजुत्तो' सूत्र पढ़े)—

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिअवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइअंमि उ कए,

"यथाशक्ति" कहना। इसी तरह दूसरे आदेश में गुरु महाराज "आयारो न मोत्तव्वो" इतना कहे बाद "तहत्ति" कहना।

समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

मैंने सामायिक विधि से लिया, विधि पूर्ण किया, विधि में जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके ये कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति सामायिक पारने की विधि समाप्त ॥

नोटः— प्रतिक्रमण की सब क्रिया समाप्त होने पर स्थापना किये हुए स्थापना चार्य जी का (दाहिने हाथ को सीधा स्थापना चार्य जी की ओर करके) एक नवकार पढ़कर उत्थापन करे।



चित्र नं० ५

"स्थापनाचार्य उत्थापन करने की विधि"



"यह तसवीर श्री सुन्दरलाल रोशनलाल ओसवाल 'जैन' स्टेशनर, अम्बाला शहर की ओर से सादर भेंट की गई"

अथ देवसिय-प्रतिक्रमण की विधिः–

प्रथम सामायिक लेने की विधिः–

श्रावक श्राविका सामायिक लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार वाली) आदि रख के जमीन पूंज कर आसन बिछाकर, चरवला और मुंह पत्ति ले कर बैठे।

बैठ के बांयें (वाम) हाथ में मुंह पत्ति रख के मुख के आगे रख कर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तकादि की स्थापना के सन्मुख कर के नवकार मन्त्र और पंचिंदिय पढ़े।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

(यहां पर यदि आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो 'पंचिंदिय' नहीं कहना और पुस्तक या नवकारवाली आदि की स्थापना की हुई हो तो 'पंचिंदिय' कहना—)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्ति-धरो। चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वयजुत्तो, पंचविहायार-पालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्ती-सगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥

(नवकार और पंचिंदिय पढ़ के स्थापना चार्य स्थापन करने चाहिये। यदि स्थापना चार्य होवें तो नवकार और पंचिंदिय पढ़ के नये स्थापना चार्य स्थापने की कोई जरुरत नहीं।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियाव-हियं पडिक्कमामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंगपणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया,

घत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया ठणाओठाणं संकामिया, जीवियाओववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे पार के, लोगस्स कहना—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिकमुहपत्ति पडिलेहुँ? 'इच्छं'

(ऐसे कह कर मुहपत्ति पडिलेहना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं'

(ऐसे कह कर एक नवकार पढ़ के पीछे)

"इच्छकारि भगवन्! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी"

(ऐसे कह कर दोनों हाथ जोड़कर 'करेमि भंते' यदि गुरु महाराज हों तो गुरु महाराज से या पहिले जिस किसी ने भी सामायिक ली हो उससे उचरावे। नहीं तो स्वयं उचरे-)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं

पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहु ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकरेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ! 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? 'इच्छं'

(तीन नवकार पढ़ें)

॥ इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्त ॥

अथ देवसिय प्रतिक्रमण विधिः-

(ऊपर लिखे अनुसार सामायिक लेकर चउविहार उपवास किया हो तो नहीं और पानी पीआ हो तो केवल मुहपत्ति पडिलेहना और भोजन किया हो तो वांदणा भी दो देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइकंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए

सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना)

अथ चउविहार का पच्चक्खाणः—

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थ-णाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व-सामाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ* ॥

अथ तिविहारका पच्चक्खाणः—

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ,※मि, तिविहं पि आहारं असणं, खाइअं साइमं अन्नत्थणाभो-गेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसामा-हिवत्तिआगारेणं वोसिरइ वोसिरामि ॥

(बिआसणा, एकासणा, आयंबिल, नीवी तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणाहार का पच्चक्खाण करना—)

*यदि दूसरा करे तो 'वोसिरइ' और आप करे तो 'वोसिरामि' पढ़े ।

※ दूसरे के लिए 'पच्चक्खाइ' और अपने लिए 'पच्चक्खामि' पढ़े ।

अथ पाणाहार का पच्चक्खाण:—

पाणाहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

देसावगासियं का पच्चक्खाण:—

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं, पच्चक्खाइ, (मि,) अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ । वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं'—

॥ श्री तीर्थों का चैत्यवंदन ॥

आज देव अरिहंत नमूँ, सिमरूँ ताहूँ नाम ।
जहाँ २ प्रतिमा जिनतणी, तहाँ २ करूँ प्रणाम ॥
शत्रुँजय श्री आदि देव, नेम नमूँ गिरनार ।
तारंगे श्री अजित नाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥

अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौवी से जोय।
मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय॥
सम्मते शिखर तीरथ बड़ो, जहाँ वीशे जिनपाय।
वैभार गिरिवर ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय॥
माँडवगढ़ नो राजियो नामे देव सुपास।
ऋषभ कहे जिन समरता, पहुँचे मन की आस॥

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र चैत्यवन्दनम्:—

विपुल निर्भर कीर्तिभरान्वितो जयति निर्जर नाथ नमस्कृतः। लघुविनिर्जित मोह धराधिपो, जगति यः प्रभु शान्ति जिनाधिपः॥१॥
विहित शान्ति सुधारस मज्जनं, निखिल दुर्जय दोप विवर्जितम्। परम पुण्यवतां भजनीयतां, गत मनन्त गुणैः सहितं सताम्॥२॥
तमचिरात्मजमी—शमधीश्वरं भविक पद्म विवोध दिनेश्वरम्। महिमधाम नमामि जग त्रयं वरमनुत्तर सिद्धि समृद्धये॥३॥

(त्रिभिर्विशेषकम्)

(इसके सिवा और संस्कृत-प्राकृत या अन्य भाषा का जो कोई चैत्यवंदन आता हो वह खुशी से बोल सकते हैं ।)

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आइ-गराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्त-माणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्म-देसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्म-वरचाउरंत चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंस-णधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं

मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय–मव्वाबाहम-पुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं जेअ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(अब खड़े हो कर बोलना)

अरिहंत चेइआणं, करेमि कउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर 'नमोअरिहंताणं' बोलके* "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुइ कहना—)

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं। पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च

* यह ख्याल ज़रूर रखना चाहिये कि 'काउस्सग्ग' पूरा होने पर 'नमो अरिहंताणं' ज़ोर से बोल के काउस्सग्ग पारना चाहिये ।

सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए,

धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ कहना—)

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं । सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥

तमतिमिरपडलविद्धं सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाई-जरामरण-सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खल-विसाल सुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुतरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिस-

ग्गोणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेस-कुवाइदप्पं। मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ

नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुइ कहना—)

कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना। वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था* ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ के बायां पांव ऊँचा करके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधह-त्थीणं। लोगुत्तमाणं। लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनाय-गाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अपडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरु-अमणंतमक्ख-

*इसके सिवा और संस्कृत, प्राकृत या दूसरी किसी भी भाषा की जो कोई थुइयां आती हों उन्हें बोल सकते हैं।

यमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं। जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अवट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(यहां चार वार एक एक 'खमासमण' दे कर 'भगवानहं' आदि एक एक पद कहना जैसे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। भगवान् हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि आचार्य हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। उपाध्याय हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधु हं।

[श्रावक] 'इच्छकारि' समस्त श्रावक वांदुं [कहे]

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिय पडिक्कमणे ठाउं? 'इच्छं'॥

(ऐसे कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर बायाँ हाथ मुहपत्ति सहित मुखके आगे रख कर, सिर झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब खड़ा होकर बोलना)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए, तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं

कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छितकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अतिचार की आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करना,

गाथा याद न हों तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे लोगस्स कहना)

अथ अतिचार की गाथाः—

नाणम्मि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तहय विरयम्मि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे । वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठीअ । उववूह—थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥ पणिहाण—जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारस विहम्मि वि तवे, सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे । अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण-मूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । काय-किलेसो संलिणया य बज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं उस्सग्गो विअ, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥७॥ अणिगूहिअ-बलविरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो, जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥ ॥इति॥

('नमो अरिहंताणं' बोल के काउस्सग्ग पार के)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं, पि केवली ॥१॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु

॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और दो बार वाँदना देना—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं. देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-

मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं। पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़ा हो कर बोलना)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

*सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख

* पोषध में सात लाख के स्थान में नीचे लिखे अनुसार इच्छाकारेण संदिसह भगवन् गमणा गमणे आलोउं, बोलना इच्छं इरिया समिति, भाषा समिति, एसणा समिति, आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति, पारिट्ठावणिया समिति,

वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाखतेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। एवं कुल चौरासी लाख जीवयोनियों में से किसी जीव का मैंने हनन किया हो, कराया हो करते को भला जाना हो वह सब मन, वचन,काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृपावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवां माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवा द्वेप

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, काय गुप्ति, ये अष्ट (आठ) प्रवचन माता श्रावक धर्म अच्छी तरह पाली नहीं, खडना, विराधना, हुई होवे वह मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवाँ परपरिवाद, सत्तरहवाँ मायामृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्वशल्य। इन अठारह पापस्थानों में से मेरे जीव ने जो कोई पाप स्थान सेवन किया हो, कराया हो, करते को भला जाना हो, वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं। तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(अब नीचे बैठ कर, दाहिना घुटना खड़ा कर के नीचे लिखे अनुसार बोलना चाहिये)

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रः—

वंदित्तु सव्वसिद्धे धम्मायरिए अ असव्वसाहू

अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्ध-मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसि-अं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पया-वणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥ पढमे

अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ। आय-
रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥
बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविर-
ईओ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसं-
गेणं ॥११॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ
कूडलेहे अ। बी अवयस्सइआरे, पडिक्कमे
देसियं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग-
परदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडि-
रुवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे
देसियं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं
परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे,इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर,
अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइ-
आरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणु-

व्वए पंचमम्मि आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धणधन्न खित्तवत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपये चउप्पयम्मि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढ अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ, मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलि अं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअंसव्वं॥२१॥इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं,असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा,पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥२४॥

ण्हाणुव्वट्टण वन्नग; विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोग-अइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुण-व्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणव-ट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेस-वणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासिय-म्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चार-विही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहवि-हिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थ सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ, दुहिएसु अ जामे अस्संजएसु अणुकं-पा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसुसंविभागो, न कओ तवचरणकरण-जुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरि-

हासि ॥३२॥ इहलोए परलोए जीविश्र मरणे
श्र आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा
मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स,
पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसि-
अस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणव-
यसिक्खागारवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु
अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे
॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समाय
रइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धं-
धसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्प-
रिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि
व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठ-
गयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं,
तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं,
रागदोषसमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदतो,
खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावो वि
मणुस्सो, आलोइय निंदिअ य गुरुसगासे।

होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिया पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धमस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम-

दिट्ठी देवा, दितु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥
एवमहं आलोइ अ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुडाए

कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो कायं काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स

खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अब्भुट्ठिओमि (गुरुखामणा) सूत्रः—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरदेवसिअं खामेउं । इच्छं, खामेमि देवसिअं । जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं । खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं,

आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देव-सिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं । खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसा-यणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए,

माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

(अब खड़ा हो कर हाथ जोड़ कर के)

आयरिअउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥३॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि

न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो। अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे लोगस्स कहना—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं,

पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पायासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए—अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं, अंगसं-

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना—)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठदस दो, अ वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ

ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे—"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर 'सुअदेवया' की थुइ कहना—)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मसंघायं। तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे, भत्ती ॥१॥

(यहां पर स्त्री वर्ग को 'कमलदल' की थुइ कहना चाहिये-)

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमल-

गर्भसमगौरी । कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥१॥

अथ खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं:–

अन्नत्थऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना पोछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर 'खित्तदेवया' की थुइ कहना)

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं । साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ

दुरिआइं ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

(बैठ कर छट्ठा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना पीछे द्वादशावर्त्तवंदना देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सियाए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्क-

डाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो कायं काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा-

समणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(पच्चक्खाण न किया हो तो यहां पर कर लेना चाहिये ।)

"सामाइअ, चउवीसत्थो, वांदणा, पडिक्कमणा, काउस्सग, पच्चक्खाण, किया है जी"

"इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं । नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

(कह कर–पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमानाय" कहे और स्त्रीवर्ग संसार दावा की तीन थुई कहे)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय स्पर्द्धमानाय कर्मणा। तज्जयावाप्त मोक्षाय, परोक्षायकुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविंदराज्या,ज्याय–:क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरितिसंगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥ भावावनामसुरदानव-मानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदप-दवीनीरपूराभिरामं, जीवहिंसाविरललहरीसंग-मागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूर-पारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥

नमुत्थणंअरिहंताणं,भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं,सयंसंबुद्धाणं,पुरिसुत्तमाणं,पुरिससी हाणं,पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर,गंधहत्थीणं,-लोगुत्तमाणं,लोगनाहाणं,लोगहियाणं, लोगपई-वाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं,

धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउ-रंतचक्कवट्टीणं ॥६ ॥

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं। विअट्टछउ-माणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वनूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि। "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः" पढ़ कर

(यहाँ पाँच गाथाएँ या अधिक गाथाओं वाला हर कोई स्तवन कह सकते हैं)।

स्तवन

(गजल)

नज़र टुक मेहरकीकरकेदिखादोगेतोक्याहोगा।

अनुपम रूप है प्रभुजी बता दोगे तो क्या होगा ॥ अंचली० ॥ प्रभु तुम दीन के रक्षक करो मुझ दीन की रक्षा। चौरासी लाख की फेरी मिटा दोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥ अनादि काल से भमता नहीं अभी अंत आया है। शरण अब आपकी लीनी हटा दोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥ अनादि काल से रुलिया बन्यो मिट्टी कभी पानी। तेऊ वाऊ हरि काया, बचा दोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥ बीती चउ जाति पंचेन्द्री पशु परवश दुःख पाया। अमर नर नार की रूपे छुड़ा दोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥ इसी संसार सागर में मेरी प्रभु डूबती नैया करी करुणा किनारे पर लगा दोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥ करो प्रभु पार भवो दधि से निजातम सम्पदा दीजे। सेवक को आसका 'वल्लभ' बना दोगे तोक्या होगा ॥ ६ ॥

वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभं विगतमोहम् । सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर-पूजितं वंदे ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान् हं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्य हं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्याय हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधु हं ।

"समस्त श्रावकों को वांदु" इस प्रकार जो वृद्ध (बड़ा) श्रावक हो वह कहे । फिर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रख, शिर झुका कर 'अड्ढाइज्जेसु' कहे ।

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु, कम्मभूमीसु, जावंत केवि साहू, रयहरणगुच्छ-पडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससह-

गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? इच्छं ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? इच्छं ॥

(ऐसे कहे पीछे एक नवकार कह कर हर कोई सज्झाय कहे)

॥ अथ विनय की सज्झाय ॥

पवयणदेवी चित्त धरीजी, विनय वखाणिश सार । जंबू ते पूछे कह्योजी, श्रीसोहम गणधार ॥१॥ भविकजन, विनय वहो सुखकार ॥ ए टेक ॥ पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्तराध्ययन मझार । सघला गुणमां मूलगोजी, जे जिनशासनसार ॥ २ ॥ भवि० ॥ नाण विनयथी पामीएजी, नाणे दरिसण शुद्ध ।

चारित्र दरिसणथी हुएजी, चारित्रथी गुण सिद्ध ॥ २ ॥ भवि०॥ गुरुनी आणा सदा धरेजी, जाणे गुरुनो भाव । विनयवंत गुण रागीओजी, ते मुनि सरल स्वभाव ॥ ४ ॥ भवि०॥ कणनुं कुंडुं परिहरीजी, विष्टासुं मन राग । गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सूअर उपमा लाग ॥ ५ ॥ भवि० ॥ कोह्या कानकी कुतरीजी, ठाम न पामेरे जेम । शीलहीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम ॥ ६ ॥ भवि० ॥ चंद तणी परे उजलीजी, कीरति तेह लहंत । विषय कषाय जीती करीजी, जे नर विनय वहंत ॥ ७ ॥ भवि० ॥ विजयदेव गुरु पाटवीजी, श्रीविजयसिंह सूरिंद । शिष्य उदय वाचक भणेजी, विनय सयल सुखकंद ॥ ८ ॥ भवि० इति विनयकी सज्झाय ॥

॥ सज्झाय ॥

(राग सोहणी)

करता नहीं कुछ सोच अब, मानुष हुआ तो क्या हुआ ॥ करता० अ० ॥ मोती व पन्ना हीरला, पुखराज नीलम चूँनिया। अपना हीरा तो देखा नहीं, ज्हौरी हुआ तो क्या हुआ ॥ क० ॥ १ ॥ सोना सुहागा आग से, देख खोट सगरी जारता। अपना सुवर्ण सोधा नहीं, सर्राफ हुआ तो क्या हुआ ॥ २ ॥ चाँदी व सोना वेचता, हुण्डी वज़ाजी देखता परलोक को देखा नहीं, व्यापारी हुआ तो क्या हुआ ॥ ३ ॥ मुद्दइ मुदाला देखता, कानून किताबें खोलता। अपना गुन्हा देखा नहीं, मुन्सिफ हुआ तो क्या हुआ ॥४ ॥ माता, पिता, सुत, बहन, भाई, और तिरिया जमाई रे। निज रूप आतम के बिना 'वल्लभ' हुआ तो क्या हुआ ०क० ॥ ५ ॥

(सज्झाय कहकर एक नवकार प्रगट बोलना पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं काउस्सग्ग करुं! 'इच्छं' दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(चार लोगस्स का संपूर्ण या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, यह शान्ति श्रवण कर पारना, समुदाय में से एक जन काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर शान्ति कहे)

अथ लघुशान्तिः—

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते, पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहासम्पत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसम्पूजिताय निजिताय । भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन—कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये ! परापरै-

रजिते ! ॥ अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधूनां च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृत-सिद्धे, निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभयप्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! सम्यग्दृष्टीनां धृतिरति मतिबुद्धिप्रदानाय ॥१०॥ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् । श्री सम्पत्कीर्तियशो-वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधरदुष्टग्रहराजरोग-रणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी-चौरेतिश्वापदा दिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरुस्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम ॥१३॥ भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति, तुष्टिपुष्टि-

स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रः य क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि-दर्शित-मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः ॥ सलिलादिभयविनाशी,शान्त्यादिकरश्च भक्ति-मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपस-र्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ इति ॥

(काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥

१ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभी-रा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु

सामायिक पारने की विधिः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंगपणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा–संकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परि-याविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्समि–च्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामिकाउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचा-

लेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव *अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न* पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एकलोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, बादमें लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंतेकित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए

अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(बायां घुटना ऊंचा कर हाथ जोड़के)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयगबाणमु-सुमूरणु॥ सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंति-कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणा-लिद्धउ। नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउं, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउं ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं सयंसंबुद्धाणं। पुरिसुत्तमाणं पुरि-ससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधह-

त्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहि-
आणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं,
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,स-
रणदयाणं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्म-
देसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं,
धम्मवरचउरंत चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरना-
णदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं
जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोह-
याणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्व-
दरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयम-
व्वावाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं
संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं। जेअ
अईआसिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि
अ लोए अ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो
तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिंतेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्म-घणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सयामणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंतिउवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलोहोइ। नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण ही अएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ॥ ५ ॥

(दोनों हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय ! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण वंधणं वीयराय ! तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्हचलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च वोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं तुह नाह ! पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ! प्रधानं सर्वधर्म्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिअंपारेमि "यथाशक्ति"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिअं पारिअं "तहत्ति"

(ऐसे कहकर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रखकर मस्तक को नमाकर एक नवकार कहके समायिक पारने की गाथा कहे।

सामाइयवयजुत्तो, जाव मणो होइ नियम संजुत्तो। छिन्नइअसुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा॥ १॥ समाइअंमि उकए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा॥ २॥

मैंने सामायिक विधिसे लिया, पूर्ण किया, विधिमें कोई अविधि हुइ तो मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके, एवं कुल बत्तीस दोषों मेंसे कोई भी दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

प्रति क्रमण की सब क्रिया समाप्त होने पर, स्थापित किये हुए स्थापनाचार्य का (दाहिने हाथ को सीधा स्थापनाचार्यकी ओरकरके) एक नवकार पढकर उत्थापन करे

इति दैवसिक प्रतिक्रमण विधि समाप्त :–

अर्हम् ।

अथ श्री पाक्षिक प्रति क्रमण–विधि :–

सामायिक लेने की विधि :–



श्रावक श्राविका सामायिक लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रख कर, ज़मीन पूंजकर, आसन बिछाकर. चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ कर बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकार मंत्र पढ़े।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पाव-प्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगु–त्तिधरो । चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणे-

हिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वयजुत्तो, पंचविहा-
यारपालणसमत्थो । पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्ती-
सगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, यदि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य हों तो वहां नवकार और पंचिंदिय नहीं कहना यदि न हों तो पुस्तक माला वगैरह का स्थापन कर दाहिना हाथ सामने करके नवकार और पंचिंदिय कहना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरि-यावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाण-क्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग–मट्टी–मक्कडासंताणा– संकमणे,जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ

ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं—
पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं। भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे नीचे लिखे अनुसार लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ? "इच्छं"। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए। निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? "इच्छं"

(ऐसेकहकर हाथ जोड़कर एक नवकार नीचे लिखेअनुसारपढ़े)

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

पीछे, इच्छाकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ? ऐसे बोल कर 'करेमि भंते' स्वयं उच्चरे यदि गुरु या वडील हों तो उनसे उच्चरावे)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहु ? इच्छं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? इच्छं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण

संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूँ ? 'इच्छं'

ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार पढ़े । पीछे उपवास करके पानी पीआ हो तो मुहपत्ति पडिलेहना, और भोजन किया हो तो दो बार वांदना भी देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसा-यणाए तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-

मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं । पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब यथाशक्ति, पच्चक्खाण करना, तिविहार उपवास आयंबिल, नीवी, एकासणा, बिआसणा आदि व्रत किया हो तो पाणाहारका पच्चक्खाण करना)

पाणाहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(पानी बिलकुल न पीना हो तो चउव्विहार करना),

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति- आगारेणं वोसिरइ ॥

(केवल पानी ही पीना हो तो तिविहार करना).

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारंअसणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति- आगारेणं वोसिरइ ॥

(पानी और मुखवास की छूट रखनी हो तो दुविहार करना)

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं असणं खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ (वोसिरामि)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूँ ! इच्छं ।

(ऐसे कहकर 'सकलार्हत् का चैत्यवदन कहे—)

सकलार्हत्प्रतिष्ठान-मधिष्ठानं शिवश्रियः। भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः पुनतस्त्रिजगज्जनम्। क्षेत्रेकाले च सर्वस्मि-न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परि-ग्रहम्। आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हन्तमजितं विश्व-कमलाकर-भास्करम्। अम्लानकेवलादर्श-संक्रान्त जगतं

स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनारामकुल्यातुल्या जयन्तु ताः । देशनासमये वाचः, श्रीसंभव-जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकान्तमताम्भोधि,-समुल्लासनचंद्रमाः । दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिनन्दनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रे-त्तेजितांघ्रिनखावलिः । भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ॥ ७ ॥ पद्म प्रभप्रभोर्देह भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् । अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारुणा ॥८॥ श्रीसुपार्श्व जिनेन्द्राय महेन्द्रमहितांघ्रये । नमश्चतुर्वर्णसंघ गगनाभोगभास्वते ॥९॥चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र-मरिचिनिचयोज्ज्वला । मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान-निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥१०॥ करामलकवद्विश्वं कलयन् केवलश्रिया। अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानन्द कन्दोद्भेदनवाम्बुदः । स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥ भवरोगार्त्तजन्तूना-

मगदंकारदर्शनः निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत-तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाचः ,कतकक्षोदसोदराः । जयन्ति त्रिजगच्चेतो जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि-करुणारसवारिणा । अनंतजिदनन्तां वः प्रयच्छतु। सुखश्रियम् ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण-मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् चतुर्द्धाधर्म्मदेष्टारं, धर्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना-निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा तमः शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥ श्रीकुन्थुनाथो भगवान्, स नाथोऽतिशयर्द्धिभिः । सुरासुरनृनाथाना-मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तु भगवां श्चतुर्थारनभोरविः । चतुर्थपुरुषार्थश्री-विलासं वितनोतु वः ॥२०॥ सुरासुरनराधीश मयूरनववारिदम् ।कर्म्मद्रून्मूलने

हस्ति-मल्लं मल्लीमभिष्टुमः ॥२१॥ जगन्महामो-हनिद्राप्रत्यूषसमयोपमम् । मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥ लुठन्तो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् । वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥२३॥ यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः । अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥२४॥ कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया । महानन्द-सरोराजमरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् विमलस्त्रासविरहित–स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२७॥ वीरः सर्व्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता, वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः । वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृतिकीर्त्तिकान्तिनिचयः

श्रीवीर! भद्रं दिश ॥ २८ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्। इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभवनानां भावतोऽहं नमामि ॥ २९ ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य-मादिमं परमेष्ठिनाम्। देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जांइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं,

धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं
॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, ॥८॥
सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयम-
व्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए
काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण
वंदामि ॥ १० ॥

(अब चरवला हो तो खड़े होकर न हो तो बैठे बैठे बोलना चाहिये)

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं,
वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्ति-
आए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए,
निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धार-
णाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं

छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर पहली थुइ कहना)

स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे शच्या विभोः शैशवे, रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा । उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोद-काशंकया, वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री-वर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ उसभ-

मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं
मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरम-
रणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे
पसीयंतु ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए
लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं,
समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि
काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए,
सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभ-
वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए,

मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, 'जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर दूसरी थुइ कहना)

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः,
कुंभैरप्सरसांपयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ।
एषां मन्दररत्नशैलशिखरेजन्माभिषेकः कृतः,
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओणमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भुअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर तीसरी थुइ कहना)

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः। मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं

॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, अ वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेआवच्चगराणं संतिगराणं, सम्मदिट्ठिस-माहिगराणं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमा-इएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं

नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्गकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर चौथी थुइ कहना)

निष्पङ्कव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् । आरुढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं,

धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं। अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं। जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुण-राविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, भगवान्-हं॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, आचार्य हं॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, उपाध्याय हं॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि, सर्वसाधु हं ॥
"इच्छकारि समस्त श्रावक वांदुं" ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ-पडिक्कमणे ठाउं ? इच्छं"

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर 'सव्वस्सवि' बोलना चाहिये)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो

अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, वारस-विहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं

अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अतिचार की आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करना)

(अतिचार की आठ गाथाएँ वा पंचाचार की गाथाएँ)

नाणंमिदंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहअ निण्हवणे। वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठीअ। उववूहथिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥ पणिहाण जोगजुत्तो' पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं एसचरित्तायारो, अट्ठविहो होई नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर बाहिरे, कुसलदिट्ठे अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ कायकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥६ ॥ पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव

सज्झाओ झाणं उस्सग्गो विअ अब्भिंतरओ तवो होई ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बलविरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो जुंजइ अ जहाथामं नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवं-दियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(अब नीचे बैठकर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और दो वार वंदना देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो कायं काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि

निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे। दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि

(अब खड़े हो कर बोलना चाहिये)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं

आलोउं ? इच्छं, आलोएमि । जो मे देवसिओ आइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं* ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख

---

*पौषध में सात लाख के स्थान मे नीचे लिखे अनुसार बोलना— इच्छा कारेण संदिसह भगवन् । गमणागमणे आलोउं ! इच्छं, इरिया समिति, भाषा समिति, एसणा समिति आदान भंडमत्त निक्खेवणा समिति, पारिट्ठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति कायगुप्ति, ये अष्ट (आठ) प्रवचन माता श्रावक धर्म सामायिक पौषह में अच्छी तरह पाली नहीं, खंडना, विराधना, हुई होवे वह मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कड ।

दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। इसी प्रकार कुल चौरासी लाख जीवयोनियों में से मेरे जीवने किसी जीव का हनन किया हो, कराया हो या करते हुए को भला जाना हो वह सब मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहला प्राणातिपात, दूजा मृषावाद, तीजा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवाँ परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवां माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवाँ परपरिवाद, सत्रहवाँ मायामृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्व-शल्य। इन अठारह पापस्थानों में से मेरे जीव ने जो कोई पापस्थानक सेवन किया हो-कराया हो या करते हुए को भला जाना हो

वे सब मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चितिअ, दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसहभगवन्! इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब नीचे बैठ कर जीमणा (दाहिना) गुटना खड़ा करके)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो ! सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ

उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, वारसविहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु श्रावकप्रतिक्रमण–सूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं।

रागेण व दोसेण व. तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्सइआरे. पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा, चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयण-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे. इत्थ पमायप्प-संगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे

अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणु-व्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणु-रागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण–धन्न–खित्त–वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्प-यम्मि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥

मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, वीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं, च वजिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण वन्नग,-विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे।

सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थ सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥

चंदणवयसिक्खागा–रवेसु संन्नाकसायदंडेसु, गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोसमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे

तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केव-
लिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,
विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो,
वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइ-
आइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥
जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं
॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयस-
हस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ
वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता,
सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी
देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ अलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय[1]मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं ॥

(यहां मुहपत्ति पडिलेहना, और दो वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे[2] पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे?

(१) चउमासी प्रतिक्रमण में "चउमासीअ मुहपत्ति पडिलेहु इच्छ"। संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअ मुहपत्ति पडिलेहु! इच्छ"। पढना चाहिये।

(२) चउमासी प्रतिक्रमण में "चउमासीअ वइक्कंता" संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअ वइक्कंता" पढना चाहिये॥

खामेमि खमासमणो पक्खिअं[2] वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए,[4] आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो[2] वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं[3] वइक्कम्मं,

(२) चउमासी प्रतिक्रमणमें "चउमासीअ वइक्कंता" संवच्छरी प्रतिक्रमणमें "संवच्छरीअ वइक्कंता" ॥ (३) चउमासी प्रति क्रमण में "चउमासीअ वइक्कम्मं" संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअं वइक्कम्मं" पढ़ना चाहिये। (४) का नोट २०५ पर देखिये।

पडिक्कमामि खमासमणाणं,[४] पक्खिए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पीछे

*इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भितरपक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे

(४) चउमासी प्रतिक्रमण में "चउमासी अ आसायणाए"॥ संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरी अ आसायणाए" पढ़ना चाहिए।

* चउमासी प्रतिक्रमणमें "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संबुद्धा खामणेण अब्भुट्ठिओहं अब्भितरचउमासिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि

अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं† आलोउं? इच्छं, आलोएमि, जो मे पक्खिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ

चउमासिअं, चउमासाणं, अट्ठपक्खाणं, एकसौ बीस राइंदिवसाणं" ।

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झविणय परिहीणं, सु हुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर संवच्छरिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, बारहमासाणं चउवीस पक्खाणं, तीन सौ साठ राइंदिवसाणं जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय, परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

†चउमासी पडिक्कमण में पक्खिअं के स्थान में चउमासीअं और संवच्छरी पडिक्कमण में संवच्छरीअं बोलना चाहिए ।

उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो सावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं, कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय-अतिचार आलोउं? इच्छं।

(चउमासीअ प्रतिक्रमण में चउमासीअ अतिचार आलोउं?) और संवच्छरीअ प्रतिक्रमण में सवच्छरीअ अतिचार आलोउं? ऐसा कहे)

(ऐसे कहकर पक्खियअतिचार कहे)

॥ अथ पाक्षिक-अतिचार ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों

आचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें*
सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो
वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि
दुक्कडं ॥

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार–"काले
विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे।
वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो"
॥ २ ॥ ज्ञान नियमित समयमें पढ़ा नहीं।
अकाल समयमें पढ़ा। विनय रहित, बहुमान,
रहित, योगोपधानरहित पढ़ा। ज्ञान जिससे
पढ़ा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा।
देववंदन, गुरुवंदन, करते हुए तथा प्रतिक्रमण,
सज्झाय, पढते या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा।
लघु कानामात्रा न्यूनाधिक कही, सूत्र असत्य

* चउमासी प्रतिक्रमणमें इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार चउमासीअ दिवस में सूक्ष्मआदि संवच्छरीअ प्रतिक्रमण में इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार संवच्छरीअ दिवस में सूक्ष्मआदि पढ़ना चाहिये।

कहा, अर्थ अशुद्ध किया, अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य (झूठ) कहे, पढ़कर भूला, असज्झायके समयमें थविरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धांत पढ़ा। अपवित्र स्थान में पढ़ा या विना साफ की हुई घृणित (खराब) भूमि पर रखा। ज्ञानके उपकरण तख्ती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम दवात, आदि के पैर लगा, थूक लगा, अथवा थूकसे अक्षर मिटाया, ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, अथवा पास में लिए हुए आहार का निहार किया, ज्ञानद्रव्य भक्षण करने वाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्यकी सारसंभाल न की, उल्टा नुकसान किया, ज्ञानवंत के ऊपर द्वेष किया, ईर्ष्या की, तथा अवज्ञा आशातना की, किसी के पढ़ने गुणने में विघ्न डाला, अपने जानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधि ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और

केवलज्ञान, इन पांचों ज्ञानोंमें श्रद्धा न की। गूंगे तोतलेकी हँसी की, ज्ञानमें कुतर्क किया, ज्ञान के विपरीत प्ररूपणा की। इत्यादि ज्ञानाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शनाचारके आठ अतिचार—"निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥ देवगुरुधर्म में निःशंक न हुआ। एकांत निश्चय न किया। धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया। साधु साध्वी की जुगुप्सा (नफरत) निंदा की। मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देखकर मूढ दृष्टिपना किया। कुचारित्रीको देखकर चारित्र-वाले पर भी अभाव हुआ। संघमें गुणवान् की प्रशंसा न की। धर्मसे पतित होते हुए जीवको स्थिर न किया। साधर्मीका हित न

चाहा। भक्ति न की। अपमान किया। देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्यकी हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होने पर भी भली प्रकार सारसंभाल न की। साधर्मीसे कलह, क्लेश करके कर्मबंधन किया। मुखकोश बांधे विना वीतराग देवकी पूजा की। धूपदानी, खसकूची, कलश आदिकसे प्रतिमाजीको ठपका लगाया, जिनबिंब हाथसे गिरा। श्वासोच्छ्वास लेते समय जिन मंदिर तथा पौषधशालामें थूका, तथा मल श्लेश्म किया, हँसी मश्करी की, कुतूहल किया। जिनमंदिर संबंधी चौरासी आशातनाओंमें से और गुरु महाराज संबंधी तेतीस आशातनाओंमें से कोई आशातना हुई हो! स्थापनाचार्य हाथसे गिरे हों या उनकी पडिलेहण न की हो। गुरुके वचनको मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म

या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचारके आठ अतिचार—"पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठ विहो होइ नायव्वो"॥४॥ ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति और पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायागुप्ति, ये आठ प्रवचन माता सामायिक पौषधादिकमें अच्छी तरह पाली नहीं। चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्मसंबंधी श्रीसम्यक्त्व मूल बारह व्रत सम्यक्त्वके पाँच अतिचार— "संका कंख विगिच्छा" शंकाश्रीअरिहंत

प्रभुके बल अतिशय ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादि-गुण शाश्वती प्रतिमा चारित्रवान्‌के चारित्रमें तथा जिनेश्वर देवके वचनमें संदेह किया। आकांक्षा–ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गूगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रह-पूजा, गणेश, हनुमान्, सुग्रीव, वाली, माता मसानी, आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्रके अलग अलग देवादिकोंका प्रभाव देखकर, शरीरमें रोगांतक कष्ट आने पर, इहलोक परलोकके लिए पूजा मानता की। बौद्ध, सांख्यादिक सन्यासी, भगत, लिंगिये जोगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनियों के मंत्र यंत्रके चमत्कार देखकर परमार्थ जाने विना मोहित हुआ। कुशास्त्र पढ़ा। सुना। श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखडीपूनम–(राखी), अजा-एकम, प्रेत दूज, गौरी तीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, स्कंदषष्ठी, झीलणा छठ, शील-

सप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनौमी, विजयादशमी, एकादशी-व्रत, वामन द्वादशी, वत्स द्वादशी, धन तेरस, अनंत चौदश, शिवरात्री, कालीचउदश, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण याग भोगादि किये कराये, करते को भला माना। पीपलमें पानी डाला डलवाया। कूआँ, तालाब, नदी, द्रह, बावडी, समुद्र, कुंड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान तथा दान किया कराया, या अनुमोदन किया। ग्रहण, शनिश्चर, माघमास, नवरात्रिका स्नान किया। नवरात्रि व्रत किया। अज्ञानियोंके माने हुए व्रतादि किये, कराये। वितिगिच्छाधर्मसंबंधी फलमें संदेह किया। जिन-वीतराग अरिहंत भगवान् धर्मके आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्ग दातार इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की। इहलोक परलोक संबंधी भोग वांछाके लिये पूजा की। रोग आतंक कष्टके

आने पर क्षीण वचन बोला। मानता मानी। महात्मा महासतीके आहार पानी आदिकी निंदा की। मिथ्यात्वदृष्टिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा तथा प्रीति की। दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना। मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

पहले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतके पांच अतिचार—"वंह बंध छविच्छेए" द्विपद, चतुष्पद आदि जीवको क्रोध वश ताडन किया, घाव लगाया, जकड कर बांधा। अधिक बोझ लादा। निर्लांछन कर्म-नासिका बींधवाई, कर्ण छेदन करवाया, खस्सी किया। दाना घास पानीकी समय पर सारसंभाल न की, लेनदेनमें किसीके बदले किसीको भूखा

रखा, पास खडा होकर मरवाया। कैद करवाया। सड़े हुए धानको विना शोधे काम में लिया, तथा अनाज विना देखे पिसवाया, धूप में सुकाया। पानी जयणासे न छाना। ईंधन, लकडी, उपले, गोहे आदि विना देखे ही उनमें सर्प, विच्छू, कानखजूरा कीडी, मकोडी, सरोला, मांकड, जुआ, गिंगाडा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया। दुःखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीडी) मंकोडीके अंडे नाश किये, लीख फोडा दीमक, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगिआ, देडका, अलसियां, ईअल, कूंद।, डांस, मसा, मगतरां, माखी टीड्डी प्रमुख जीवका नाश किया। चील्ह, काग, कबूतर आदि के रहनेकी जगह का नाश किया। घौंसले तोड़े। चलते फिरते या अन्य कुछ

काम काज करते निर्दयपन किया। भली प्रकार जीव रक्षा न की। विना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया, कपड़े धोये। जयणा पूर्वक कामकाज न किया। चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूपमें रखे। डंडे आदिसे झड़काये। जीवाकुल (जीव संसक्त) ज़मीन को लीपा। दलते, कूटते, लीपते या अन्य कुछ कामकाज करते जयणा न की। अष्टमी चौदश आदि तिथिका नियम तोड़ा। धूनी करवाई, इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत के पांच अतिचार—"सहस्सा रहस्सदारे" ॥१२॥ सहसात्कार–विना विचारे एकदम किसी को

अयोग्य आल कलंक दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट की, अथवा अन्य किसी का मंत्र भेद मर्म प्रकट किया। किसीको दुःखी करने के लिये झूठी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी साक्षी दी। अमानत में ख़यानत की। किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी। कन्या गौ, भूमि संबंधी लेने देने में लड़ते झगड़ते वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदि की गाली दी। मर्म वचन बोला। इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार–"तेनाहडप्पओगे०" ॥१४॥ घर, बाहिर, खेत, खला में, विना मालिक के

भेजे वस्तु ग्रहण की अथवा आज्ञा विना अपने काम में लाई। चोरी की वस्तु ली। चोर को सहायता दी। राज्य विरुद्ध कर्म किया। अच्छी, बुरी, सजीव, निर्जीव, नई, पुरानी वस्तु का मेल संमेलन किया। जकात की चोरी की, लेते देते तराजू की डंडी चढ़ाई। अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिश्वत खाई। विश्वासघात किया, ठगाई की, हिसाब किताब में किसी को धोखा दिया। माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदिकों के साथ ठगी कर किसी को धन दिया, अथवा पूंजी अलाहदा रखी। अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया। पड़ी हुई चीज़ उठाई, इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमणव्रत के पांच अतिचार–"अप्परिगहिया इत्तर" ॥१६॥ परस्त्रीगमन किया। अविवाहिता कुमारी, विधवा, वेश्यादिक से गमन किया। अनंगक्रीडा की। काम आदि की विशेष जागृति की, अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी चौदश आदि पर्वतिथि का नियम तोड़ा। स्त्री के अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चिंतन किया। पराये नाते जोड़े। गुड्डे गुड्डियों (ढींगला ढींगली) का विवाह किया या कराया। अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्न स्वप्नांतर हुआ। कुस्वप्न आया। स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य किया। स्वस्त्री में संतोष न किया, इत्यादि चौथे स्वदारा संतोषपरस्त्रीगमन विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर

जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पांचवें स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत के पांच अतिचार—"धण-धन्न-खित्त-वत्थू०" ॥१८॥ धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना, चांदी, वर्त्तन आदि । द्विपद—दास दासी; चतुष्पद—गौ, बैल, घोड़ा आदि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया । लेकर बढ़ाया । अथवा अधिक देखकर मूर्च्छावश माता पिता पुत्र स्त्री के नाम किया । परिग्रह का प्रमाण नहीं किया, करके भुलाया याद न किया । इत्यादि पांचवें स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

छट्ठे दिक्परिमाणव्रत के पांच अतिचार—"गमणस्सउ परिमाणे०" ॥१६॥ ऊर्ध्वदिशि,

अधोदिशि, तिर्यग्दिशि जाने आने के नियमित प्रमाण उपरांत भूल से गया। नियम तोड़ा। प्रमाण उपरांत सांसारिक कार्य के लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई। अपने पास से वहाँ भेजी। नौका जहाज़ आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया! एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा में अधिक गया। इत्यादि छट्ठे दिक्परिमाण व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

सातवें भोगोपभोगव्रत के भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पंद्रह अतिचार—"सच्चित्ते पडिवद्धे०" ॥२१॥ सचित्त-खानपान की वस्तु नियम से अधिक स्वीकार की। सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ

औषधि का भक्षण किया। अपक्व आहार, वा दुपक्व आहार किया। कोमल इमली, बूँट,* भुट्टे, फलियां आदि वस्तु खाई। सच्चित्त[१] दव्व[२] विगई[३] वाणह[४] तंबोल[५] वत्थ[६] कुसुमेसु[७]। वाहण[८] सयण[९] विलेवण[१०] बंभ[११] दिसि[१२] ण्हाण[१३] भत्तेसु[१४] ॥१॥ ये चौदह नियम लिये नहीं। लेकर भूलाये। वड़,[१] पीपल,[२] पिलंखण[३] कठुंवर,[४] गूलर,[५] ये पाँच फल; मदिरा,[६] मांस,[७] शहद,[८] मक्खन[९] ये चार महा विगई, बरफ,[१०] ओले[११] कच्ची मिट्टी, (विष)[१२] रात्रिभोजन,[१३] बहुबीजाफल,[१४] अचार,[१५] घोलवडे,[१६] द्विदल,[१७] वैंगण,[१८] तुच्छफल,[१९] आजानाफल,[२०] चलित-रस,[२१] अनंतकाय,[२२] ये बाईस अभक्ष्य। सूरन—जिमीकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरक, कुवांरपाठा, थोर, गिलोय, लसुन, गाजर, गठा-प्याज, गोंगलू,

* हरे चने।

कोमलफल-फूल-पत्र, थेगी, हरा मोत्था, अमृतवेल, मूली, पदम्रहेडा, आलू, कचालू, रतालू, पिंडालू, आदि अनंतकाय का भक्षण किया। दिवस अस्त होने पर भोजन किया। सूर्योदय से पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान—इंगाल- कम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, ये पांच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, ये पाँच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्म, निल्लंछनकम्म, दवग्गि-दावणिया, सरदहतलायसोसणया, असइ पोसणया ये पाँच सामान्य, एवं कुल पंद्रह कर्मादान महा आरंभ किये कराये करते हुए को अच्छा समझा। श्वान विल्ली आदि पोषे पाले। महा सावद्य पापकारी कठोर काम किया। इत्यादि सातवें भोगोपभोग विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में

सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदंड के पांच अतिचार—"कंदप्पे कुक्कुइए०" ॥२६॥ कंदर्प—कामाधीन होकर नट, विट, वेश्या आदिक से हास्य खेल क्रीडा कुतूहल किया। स्त्रीपुरुष के हाव, भाव, रूप, श्रृंगार संबंधी वार्ता की। विषयरसपोषक कथा की। स्त्रीकथा, देशकथा, भक्तकथा, राजकथा, ये चार विकथाएँ कीं, पराई भांजगड की, किसी की चुगलखोरी की। आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। खांडा, कटार, कशि, कुल्हाड़ी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तुएँ दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दीं। पापोपदेश दिया। अष्टमी चतुर्दशीके दिन दलने पीसने का नियम तोडा। मूर्खतासे असंबद्ध वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तेल, दूध, दही, गुड़, छाछ, आदिका भाजन

खुला रखा, उससें जीवादिका नाश हुआ। वासी मक्खन रखा और तपाया। न्हाते धोते दाँतन करते जीव आकुलित मोरीमें पानी डाला। झूलेमें झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर (डंगर) खरीदवाये। कर्कश वचन कहा। किचकिची ली। ताडना तर्जना की। मत्सरता धारण की। शाप दिया। भैंसा साँढ, मेंढा, मुरगा, कुत्ते, आदिक लड़वाये या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान् की ऋद्धि देख ईर्षा की। मिट्टी, नमक, धान, विनोले, विना कारण मसले। हरी वनस्पति खूंदी। शस्त्रादिक वनवाये। रागद्वेष के वश से एक का भला चाहा। एक का बुरा चाहा। मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पिंजरे में डाला। इत्यादि आठवें अनर्थदंड विरमण व्रत संवंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या

बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

नववें सामायिक व्रत के पांच अतिचार—"तिविहे दुप्पणिहाणे०" ॥२७॥ सामायिक में संकल्प विकल्प किया । चित्त स्थिर न रखा । सावद्य वचन बोला । प्रमार्जन किये बिना शरीर हिलाया, इधर उधर किया । शक्ति होने पर भी सामायिक न किया । सामायिक में खुले मुंह बोला । नींद ली । विकथा की । घर संबंधी विचार किया । दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा । सचित्त वस्तु का संघट्टन हुआ । स्त्री तिर्यंच आदि का निरंतर परस्पर संघट्टन हुआ । मुहपत्ति संघट्टी । सामायिक अधूरा पारा, बिना पारे उठा । इत्यादि नवमें सामायिकव्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर

मिच्छामि दुक्कडं ।

दशवें देशावगाशिक व्रतके पांच अतिचार— "आणवणे पेसवणे० ॥२८॥ आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, वहियापुग्गलपक्खेवे । नियमित भूमिमें वाहिर से वस्तु मंगवाई । अपने पास से अन्यत्र भिजवाई । खुंखारा आदि शब्द करके, रूप दिखाके या कंकर आदि फेंककर अपना होना मालूम कराया । इत्यादि दशवें देशावकाशिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रतके पांच अतिचार— 'संथारुच्चार विही०' २९। अप्पडिलेहिअ, दुप्पडिलेहिअ, सिज्जासंथारए । अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि । पौषध लेकर सोने की जगह विना पूंजे प्रमार्जे सोया ।

स्थंडिल आदि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं। लघुनीति वड़ीनीति करने या परठने के समय "अणुजाणह जस्सुग्गहो" न कहा। परठे वाद तीन वार 'वोसिरे' न कहा। जिनमंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए 'निसीहि' और वाहिर निकलते हुए 'आवस्सही' तीन वार न कही। वस्त्र आदि उपाधिकी पडिलेहणा न की। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टन हुआ। संथारा पोरिसी पढ़नी भुलाई। विना संथारे जमीन पर सोया। पोरिसी में नींद ली, पारना आदि की चिंता की। समयसर देववंदन न किया। प्रतिक्रमण न किया। पौषध देरीसे लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथिको पोसह न लिया। इत्यादि ग्यारहवें पौषधव्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अनजानते लगा हो वह सव मन, वचन,

कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

बारहवें अतिथि संविभाग व्रतके पाँच अतिचार- 'सचित्ते निक्खिवणे०'।३०। सचित्त वस्तुके संघट्टे वाला अकल्पनीय आहार पानी साधु साध्वी को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कहा। देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कहा। न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कहा। न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कहा। गोचरी के समय इधर उधर हो गया। गोचरी का समय टाला। बेवक्त साधुमहाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान् की भक्ति न की। शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को पड़ता देख मदद न की। दीन दुःखी पर अनुकंपा न की। इत्यादि बारहवें अतिथिसंविभाग व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते

अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

संलेषणा के पांच अतिचार–"इहलोए परलोए०"॥३३॥ इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इह लोकसंबंधी राजऋद्धि भोगादि की वांछा की। परलोक में देव, देवेन्द्र, चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तपाचार के बारह भेद–छः बाह्य छः आभ्यंतर।"अणसणमुणो अरिया०" ॥६॥ । अनशन–शक्तिके होते हुए पर्वतिथिको उपवास आदि तप

न किया। ऊनोदरी–दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप–द्रव्य–खाने की वस्तुओंका संक्षेप न किया। रस विगय त्याग न किया। काय-क्लेश–लोच आदि कष्ट न किया। संलीनता-अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाणतोड़ा। भोजन करते समय एकासणा, आयंबिल, प्रमुख में चौकी, पटड़ा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण पारना भुलाया, बैठते नवकार न पढ़ा। उठते पच्चक्खाण न किया। निवि, आयंबिल, उपवास आदि तप में कच्चा पानी पीया। वमन हुआ। इत्यादि बाह्य तपसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

आभ्यंतर तप–"पायछित्तं विणओ०"॥७॥ शुद्ध अंतःकरण पूर्वक गुरुमहाराज से आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना संपूर्ण न

की। देव गुरु संघ साधर्मीका विनय न किया। बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वेयावच्च न की। वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा—लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं। आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त दश बीस लोगस्स का काउस्सग्ग न किया। इत्यादि अभ्यंतर तप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं॥

वीर्याचार के तीन अतिचार-'अणिगूहिय बल-विरिओ०'॥ ८॥ पढ़ते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य में, मन, वचन, काया का बल वीर्य पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक

पंचांग खमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदन की विधि भली प्रकार न की। अन्य चित्त निरादर से बैठा। देववंदन प्रतिक्रमण में जल्दी की इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

"नाणाई अट्ठ पइवय, समसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु।
बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अइयारा ॥"

"पडिसिद्धाणं करणे०" ॥४८॥ प्रतिषेध—अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ, परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म, सामायिकादि छः आवश्यक, विनयादिक, अरिहंत की भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा की। तथा प्राणातिपात, मृषावाद,

अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया, मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ये अठारह पाप-स्थान किये कराये अनुमोदे। दिनकृत्य प्रति-क्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया। और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा से विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया। इन चार प्रकार के अतिचार में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रतसंबंधी एकसौ चौवीस अतिचारों में से जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सव्वस्स वि पक्खिअं† दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इच्छाकारी भगवन् पसाय करी‡ पक्खिय तप प्रसाद करोजी ।

*पक्खिके लेखे एक उपवास, दो आंबिल, तीन निवि, चार एकासना, आठ बिआसना और दो हज़ार सज्झाय करी पइट्ठ पूरनी जी ।

(यहां तप किया हो तो ,पइट्ठिओ' कहना । करना होतो 'तहत्ति' कहना । न कहना हो तो मौन रहना)

† चउमासीअ प्रतिक्रमण में चउमासीअ और संवच्छरीअ प्रतिक्रमण में संवच्छरीअ पढ़ना चाहिये ।

‡ चउमासीअ प्रतिक्रमण में चउमासीअ तप और संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरीअ तप पढ़ना चाहिये ।

* चउमासिक प्रतिक्रमण में चउमासिके लेखे दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना, सोलह बिआसना और चार हजार सज्झाय करी पइट्ठ पूरनी जी" ऐसा कहना चाहिये सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में-सांवत्सरिक के लेखे एक अट्ठा अर्थात् तीन उपवास, ६ आयंबिल, नौ (९)निवि, बारह एकासना, चौबीस बिआसना, छह हज़ार सज्झाय करी पइट्ठ पूरनी ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो [1]। जत्ता भे, जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं [2] आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिए आसायणाए [3] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं ।

---

१ चउमासी प्रतिक्रमण मे चउमासीअ वइक्कंता (२) चउमासीअ वाइक्कमं, (३) चउमासीअ आसायणाए पढना चाहिये ।

निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? [१] जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं,[२] पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए. आसायणाए,[३] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए. कोहाए माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पत्तेय-खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर *पक्खिअं

१ संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरो वइक्कंतो (२) संवच्छरीअं वइक्कम्मं, ३ संवच्छरीअ आसायणाए, पढ़ना चाहिये।

*चउमासि प्रतिक्रमण में चउमासिअं खामेउं ? इच्छं, चउमासिअं, चारमास्स अट्ठपक्खाणं एकसौ बीस राईदिवसाणं जं किंचिआदि बोलना और संवच्छरी प्रतिक्रमण में " संवच्छरीअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरीअ, बारहमासाणं चउवीसपक्खाणं तीनसौ साठ राई दिवसाणं जं किंचि आदि बोलना चाहिये।

खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(यहां प्रत्येक जन से खमतखामणा करके पीछे दो वंदना देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं, काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ?[1] जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं,[2] आवस्सि-

---

१ चउमासी प्रतिक्रमण में चउमासीअ वइक्कंता, चउमासीअं वइक्कम्मं २ चउमासीअ आसायणाए पढ़ना चाहिये।

आए पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए, आसायणाए, [३] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि। अहो कायं, काय संफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो। [१] जत्ता भे जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो, पक्खिअं वइक्कम्मं। [२] पडिक्कमामि खमासमणाणं। पक्खिए आसायणाए, [३]

---

३ संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरो वइक्कंतो, संवच्छरीअं वइकम्मं, संवच्छरीअ आसायणाए, पढ़ना चाहिये।

नं० १ और २ का नोट पृष्ठ २३६ पर देखिये।

[illegible]

[illegible] जो मे [illegible]

[illegible] पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

([illegible])

देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खिअं पडिक्कमुं ? सम्मं पडिक्कमामि इच्छं ।

करेमि भंते सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि .जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं.वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि [illegible] [illegible]णं वोसिरामि ॥

[illegible]

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ[1] अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिसूत्र[2] पढ़ूं? 'इच्छं'

(ऐसे कहकर प्रगट तीन नवकार कहकर साधु हो पक्खिसूत्र कहे और साधु न हो तो श्रावक हाथ जोड़ खड़े हो कर वंदित्तुसूत्र कहे)

---

१ चउमासी प्रतिक्रमण में जो मे चउमासीओ अइयारो. संवच्छरी प्रतिक्रमण में जो मे संवच्छरीओ अइयारो. पढ़ना.

२ चउमासी प्रतिक्रमण में चउमासीअ सूत्रपढ़ूं संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरीअं सूत्र पढ़ूं ऐसा पढ़ना चाहिये ।

वंदित्तु श्रावकप्रतिक्रमण-सूत्र ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ-आरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं* सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिं-दिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ

* चउमासीय प्रतिक्रमण में चउमासीअं सव्वं, संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरीअं सव्वं, पढ़ना चाहिये। जहां २ पक्खिअं आवे वहां २ चउमासीअं। और संवच्छरीअं पढ़ना चाहिये।

पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा,
उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं,
गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च
चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे
अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं
॥१०॥ वीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवय-
णविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमा-
यप्पसंगेणं ॥११॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे
अ कूडलेहे अ। वीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे
पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुयव्वयंमि,
थूलगपरदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे,
इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे,
तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे,
पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४॥ चउत्थे अणु-

व्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आय-रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणु-रागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण–धन्न–खित्त–वत्थू, रुप्प–सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्प-यम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि स मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोग-परिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी,

भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग—तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२४॥ ण्हाणुव्वट्टण वन्नग,—विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगा-सियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे

चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थ सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खा-गा-रवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व

सुसक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोषसमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे

अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४६॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीअकम्मसंघायं । तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥१॥

(अब नीचे बैठकर दाहिना घुटना खड़ा करके एक नवकार, 'करेमि भंते' और 'इच्छामि पडिक्कमिउं' कहकर वंदित्तासूत्र कहे)

नमो अरिहंताणं ॥ नमो सिद्धाणं ॥ नमो आयरियाणं ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ सव्वपा-वप्पणासणो ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते सामाइअं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ *अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं

* चउमासी प्रतिक्रमण में चउमासीओ अइआरो, संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरीओ अइयारो, पढ़ना चाहिये ।

चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं सावग धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे, अ करणे पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं* ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥

* चातुर्मासी प्रतिक्रमण में चउमासीअं सव्वं, संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवच्छरिअं सव्वं, पढना चाहिये। और जहां २ पक्खिअं सव्वं आता है वहां २ चउमासीअं सव्वं तथा संवच्छरीअं सव्वं, पढना।

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयंमि परिथूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअम-प्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसार-हस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥

तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुल-कूडमाणे, पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरई-ओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाह-तिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न-खित्तवत्थू; रुप्प-सुवन्ने-अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्प-यम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, वीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहि-

भक्खणाया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं
॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं
च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं
च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे
मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे
पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण वन्नग,-
विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे
पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए,
मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि
अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे ।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे
॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ
पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खा-
वए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह

चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २६ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे चउत्थ सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स॥३४॥ वंदणवयसिक्खा-गा–रवेसु सन्नाकसायदंडेसु । गुत्तीसु अ अमि-ईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सिहोइ वंधो, जेण न

निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिश्रावं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिश्रो विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिश्रं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावश्रो ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिश्र गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंत-किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलो-अणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेह अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिण॰ विणिग्गय–कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(अब खडे होकर बोले)

करेमि भंते सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ* अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

* चउमासी प्रतिक्रमण में चउमासीओ अइआरो, संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरीओ अइआरो, पढ़ना चाहिए ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(बारह* (१२) लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक का या अड़तालीस (४८) नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे काउस्सग्ग पारकर नीचे लिखे अनुसार लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,

* चउमासी प्रतिक्रमण में बीस लोगस्स या चंदेसु निम्मलयरा तक अस्सी नवकार का काउस्सग्ग करना. और संवच्छरी प्रतिक्रमण में ४० लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक और एक नवकार का काउस्सग्ग करना, या १६० नवकार का ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउव्वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(मुहपत्ति पडिलेहना. और दो वंदना देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि,

अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो[1] वइक्कंतो। जत्ता भे, जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो पक्खिअं[2] वइक्कम्मं आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिए[3] आसायणाए तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोव-याराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्क-मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो काय कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे

१ चउमासी प्रतिक्रमण में–चउमासीओ वइक्कंता, २ चउमासीअवइक्कम्मं.
३ चउमासीअ आसायणाए। संवच्छरी प्रतिक्रमण में १ संवच्छरोवइक्कंतो।
२ संवच्छरीअं वइक्कम्मं। ३ संवच्छरीअ आसायणाए (पढ़ना चाहिये)।

[1]पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो [2]पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, [3]पक्खिए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर *पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स

नं० १, २ और ३ का नोट पृष्ठ २६१ पर देखिये ।

* चउमासी प्रतिक्रमणमें "चउमासिअं खामेउं इच्छं खामेमि चउमासिअं, चार मासस्स अट्ठपक्खाणं एकसौ वीस राई दिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये । और संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउ ? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं बारहमासाणंच छवीसपक्खाणं तीनसौ साठ राईदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये ।

पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् [1]पक्खि खामणा खामुं? इच्छं।

(ऐसे कहकर नीचे लिखे अनुसार चार खामणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(कहकर दाहिना हाथ चरवले या आसन पर रखकर मस्तक झुकाकर बोलना)

---

[1] चउमासीअ प्रतिक्रमण में चउमासी खामणा खामुं संवच्छरीअ प्रतिक्रमण में संवच्छरी खामणा खामुं पढना चाहिये।

१ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

३ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्प-

णासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

४. इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

(अब दैवसिक प्रतिक्रमणमें वंदित्तासूत्र कहने के बाद जो विधि है इस के अनुसार कहना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं, काय संफासं, खमणिज्जो, भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए, पडिक्कमामि

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं, काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, माणाए, मायाए, लोभाए,

सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं, काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो,

देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए,

कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़े होकर कहना चाहिये)

आयरिअ-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि

न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक का या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे काउस्सग्ग पारकर नीचे लिखे अनुसार लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ,

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर भुवनदेवता की थुइ कहना)

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥
खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइ एहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं,

मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर क्षेत्रदेवता की थुइ कहना)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरिआणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो! सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

(अब बैठकर छट्ठा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना, बाद में दो वंदना देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं, काय संफासं, खमणिज्जो, भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च मे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो कायं, काय संफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता मे जवणिज्जं च मे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए,

लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! "सामायिक, चउवीसत्थो, वंदना, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण, किया है जी"

(ऐसे छः आवश्यक स्मरण करना पीछे)

"इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

(कहकर पुरुषवर्ग 'नमोऽस्तुवर्द्धमानाय' कहे और स्त्रीवर्ग संसारदावा की तीन थुई कहे)

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा। तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या। सदृशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ कषायतापार्दित-

जन्तुर्निर्वृत्तिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥

संसार दावा

संसार दावानलदाहनीरं, संमोह धूली हरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं नमामि वीरं गिरि सार धीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानव-मानवेन, चूला विलोलकमलावलिमालितानि।

संपूरिता भिनतलोक समीहितानि, कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥

बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरललहरी संगमागाहदेहं चूलावे लं गुरुगममणी संकुलं दूरपारं। सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं

पुरीसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणराविति-सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(ऐसे कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर अजितशांति स्तवन कहे.)

॥ अथ अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंत-

सव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय-मंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजियजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं । तह य धिइमइप्प-वत्तणं, तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेस-विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥

अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुर असुर गरुलभुयगवइपययपणिवइअं । अजिअ-महमवि‌अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरण-मुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवण मे ॥७॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तम-सत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थ-विच्छिन्नसंथिअं, थिरसरिच्छवच्छं मयगललीला-यमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं । हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणा-भिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुं दुहिनिनायमहु-रयरसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे

भयवं ॥१०॥ रासालुद्धश्रो ॥ कुरुजणवय-हत्थिणाउरनरीसरो पढमं तश्रो महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगर-निगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणु-श्रायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिच-उसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहय-गयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामकोडि-सामी श्रासिजो भारहंमि भयवं ॥११॥ वेड्ढश्रो॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ रासानंदियं ॥ इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण, विगयतमा विहुश्ररया॥ श्रजिउत्तम तेश्रगुणेहिं महामुणिश्रमिश्रबला विउलकुला । पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसुरवंद हट्ठतुट्ठ-जिट्ठपरम,-लट्ठरूव धंतरुप्प पट्ट सेश्र सुद्ध

निद्ध धवल । दंतपंति संति म्त्तिकित्तिमुत्ति-जुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअभाविअप्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥१४॥ नारायओ ॥ विमलससि-कलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरे-असारं ॥१५॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ वले अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणे हिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथु-अच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणि

सरणमुवणामे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय-
सिरिरइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं,
विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो।
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा,
गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा
॥१९॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं,
किन्नरोरगणमंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं,
समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं
अणहं, अरयं अरुयं अजिअं अजिअं, पयओ
पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगया
वरविमाणदिव्वकणग,—रहतुरयपहकरसएहिं
हुलिअं । ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल,—
कुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥
वेड्ढओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता
भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठु-
सुविम्हिअसव्वबलोघा । उत्तमकंचणरयणपरू-
विअभासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणय

भेत्तिवसागय पंजलिपेसियसीसपणामा ॥२३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोह वज्जिअं। देवदाणवनरिंद-वंदिअं, संतिमुत्तमसहातवं नमे ॥२५॥ खित्तयं॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस-वहुगामिणि आहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणि-कंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं । वर-खिंखिणिणेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं, रइ-करचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि । अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं

संगयंगयाहिं, भत्तिसंनिविट्ठवंदणागयाहिं हुंति
ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥
तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ।
धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२६॥
नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं,
तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स
जगुत्तमसासणअस्सा भत्तिवसागयपिंडिआहिं
देव वरच्छरसावहु आहिं, सुरवर रइगुण
पंडिआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतं-
तितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए
कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगी-
अपायजालघंटिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउ-
राभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं
हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं
वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं
तिलोअ सव्वसत्त संतिकारयं, पसंतसव्वपाव-
दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥

नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा । दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया । संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव वलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं वहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा वि य सुहनंदिं, मम य

दिसउ संजमे नंदिं ॥३॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सो अव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढइ जो अ नि सुणइ, उभओकालं पि अजिअ संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ गाहा ॥ इति ॥

वरकनकशंखविद्रुम,–मरकतघनसंनिभं विगतमोहम् सप्ततिशतं जिनानां सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, भगवान् हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, आचार्य हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, उपाध्याय हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, सर्वसाधु हं।

इच्छकारि समस्त श्रावको वांदु यह जो वृद्ध (बड़ा) श्रावक हो वह कहे।

(अब दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर थापन करके मस्तक नमाकर 'अड्ढाइज्जेसु' कहना)

अड्ढाइज्जेसु, दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंत केवि साहू, रयहरण-गुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारस-सहस्ससीलंगधारा, अक्खयायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि।

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं

काउस्सग्ग करूं ? इच्छं, देवसिअपायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

चंदेसु निम्मलयरातक

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना. पार कर लोगस्स कहना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

(अब नीचे बैठ कर बोलना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं इच्छं ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण

हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानव-मानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरल-लहरी संगमागाहदेहं। चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरि-मलालीढलोलालिमाला, झंकारारावसारामल-दलकमलागारभूमिनिवासे! छायासंभारसारे! वर कमलकरे! तारहाराभिरामे!, वाणी-संदोहदेहे! भवविरहवरं देहि मे देवि! सारम् ॥ ४ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं, न

पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(संपूर्ण चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना. यह शांति सुनकर पारना. जिसको आदेश मिला हो वह बड़ीशांति कहे और सब काउस्सग्ग सुनें ।)

॥ अथ बृहत् (बड़ी) शांतिः—

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्ह-दादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेश-विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः

शान्तिमुद्घोषयति। यथा ततोऽहं कृतानुकार-
मिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्था,
इति भव्य जनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं
विधाय शांतिमुद्घोषयामि; तत्पूजायात्रा-
स्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं
दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा। ॐ पुण्याहं
पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः
सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-
स्त्रिलोक्यपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः।
ॐ ऋषभ—अजित-संभव—अभिनन्दन-सुमति-
पद्मप्रभ—सुपार्श्व— चन्द्रप्रभ—सुविधि— शीतल—
श्रेयांस-वासुपूज्य—विमल-अनन्त—धर्म्म-शान्ति-
कुंथु—अर—मल्लि—मुनिसुव्रत-नमि—नेमि—पार्श्व-
वर्द्धमानान्ताः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा
भवन्तु स्वाहा। ॐ मुनयो मुनि प्रवरा
रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु
वो नित्यं स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं धृति—मति-

कीर्त्ति– कान्ति– बुद्धि– लक्ष्मी– मेधा– विद्या– साधन–प्रवेश–निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः । ॐ रोहिणी–प्रज्ञप्ति-वज्रशृंखला–वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा–पुरुषदत्ता-काली–महाकाली–गौरी–गांधारी, सर्वास्त्रा-महाज्वाला–मानवी वैरोट्या–अच्छुप्ता–मानसी-महामानसी–षोडश–विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारक बुधवृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोक-पालाः सोम–यम–वरुण–कुबेर–वासवादित्य– स्कन्द–विना–यकोपेताः । ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा । ॐ पुत्र–मित्र–कलत्र–भ्रातृ–सुहृद्-स्वजन– सम्बंधि– बंधु– वर्गसहिताः नित्यं

चामोदप्रमोदकारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डला-
यतननिवासिसाधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां
रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय
शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-
मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि
शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु
स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्ति-
विधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीशमुकुटाभ्य-
र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्,
शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां,
येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्ट-दुष्ट-
ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । सम्पादितहित-
सम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥
श्रीसंघजगज्जनपदराजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिकपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्
॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु,
श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां

शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति। नृत्यन्ति नित्यं* मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः। दोषा प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु† लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया सिवादेवी

---

* सुरवं इति पाठान्तरम्। † भवतु इति पाठान्तरम्।

तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥

(अब काउस्सग्ग पारकर फिर लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा,

तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिअं पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ इति पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि समाप्तः ॥

(अब समायिक पारने के लिये नीचे लिखे प्रमाण बोलकर समायिक पारे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया

वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयण-

वाणमुसुमूरण । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि-किरणालिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं; विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वनूणं

सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयम-व्वाबाहमपुणराविति्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-

घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि

निश्राण वंधणं वीअराय ! तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च वोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुह नाह ! पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना. पीछे)

इच्छामि-खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिअं पारेमि "यथाशक्ति."

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिअं पारिअं. "तहत्ति"

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर मस्तक को नमाकर नीचे लिखे अनुसार बोलेः-)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

सामाइअवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियम संजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, समाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं, वहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ मैंने सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में कोई अविधि हुई हो तो मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मन

के, दस वचन के, बारह काया के, एवं कुल बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(पुस्तक या माला आदि की स्थापना करके प्रतिक्रमण किया हो तो एक नवकार दाहिने हाथ को सीधा रखकर बोलना चाहिये और गुरु या स्थापनाचार्य के सामने प्रतिक्रमण किया हो तो नवकार बोलने की ज़रूरत नहीं परन्तु प्रतिक्रमण पूर्ण होने के बाद देव गुरु की जय अवश्य बोलनी चाहिये,)

—:: विशेष सूचना ::—

चउमासी प्रतिक्रमण में कुल विधि पक्खिप्रतिक्रमण की तरह से ही समझना। जो फ़र्क़ है वह नीचे लिखा जाता है:—

१ पाक्षिक प्रतिक्रमण में वांदना देते समय ("पक्खो वइक्कंतो") और ("पक्खिअं वइक्कमं")

कहते हैं उस स्थान पर ('चउमासीअ वइक्कंतो') और ('चउमासीअं वइक्कम्मं') कहना चाहिये ॥

२ वंदित्तासूत्र में ("पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं) के बदले ('पडिक्कमे चउमासीअं सव्वं') कहना.

३ अतिचार बोलते समय जो जो स्थान पर ('पाक्षिक अतिचार भणुं') और ('पाक्षिक दिवसमांहि जो कोइ अतिचार लगा हो') उस स्थान पर ('चउमासी अतिचार भणुं') और ('चउमासीअ दिवस मांहि जो कोइ अतिचार लगा हो') इस प्रकार बोलना.

४ पाक्षिक प्रतिक्रमण में ('प्रत्येक-अब्भुट्ठिओहं, संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं') और ('समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओहं') आते हैं वहाँ प्रत्येक समय ('एक पक्खस्स पन्नरसण्ह दिवसाणं, पन्नरसण्ह राइआणं')

कहते, हैं उस स्थान पर ('चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एकसौ वीस राइदिवसाणं') कहना. और ('पक्खियखामुं') के बदले ('चउमासीअ खामुं') कहना.

५ ('पक्खि तप प्रसाद करोजी'–चउत्थेणं, एक उपवास, दो आयंबिल, तीन नीवि, चार एकासणा, आठ वि आसणा दो हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करी पइट्ठ पूरनी जी') ऐसे बोलते हैं उस स्थान पर ('चउमासीअ तप प्रसाद करो जी"–छट्ठेणं दो उपवास, चार आयंबिल, छः नीवि, आठ एकासणा, सोलह बियासणा, चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करी पइट्ठ पूरनी जी') ऐसे बोलना.

६ ('पक्खिसूत्र पढ़') उस स्थान पर ('चउमासीअ सूत्र पढ़') ऐसे बोलना.

७ पाक्षिक प्रतिक्रमण में ('बारह लोगस्स

का काउस्सग्ग') करते हैं उस जगह ('वीस लोगस्स का काउस्सग्ग') करना.

८ जिस जिस जगह पर सूत्रों में ('पक्खिअं') शब्द आता है वहां वहां ('चउमासीअं') बोलना.

—: संवच्छरी प्रतिक्रमण की विधि :—

इसमें भी कुल विधि पाक्षिक प्रतिक्रमण के अनुसार समझना. फ़रक इतना ही है कि–

१ जहां जहां ('पक्खिअं') शब्द आता हो वहां वहां ('संवच्छरीअं') शब्द कहना.

२ पाक्षिक–('अब्भुट्ठिओ') में ('एक पक्खस्स.') इत्यादि पाठ के स्थान पर ('बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तीनसौ साठ राइ दिवसाणं') पाठ बोलना.

३ पाक्षिक तप की जगह पर ('संवच्छरी

तप प्रसाद करोजी'—अट्ठ भत्तं, तीन उपवास, छः आयंबिल, नवनीवि, बारह एकासणा, चौवीस बियासणा, छः हज़ार सज्झाय यथाशक्ति तप करी पइट्ठ पूरनी जी') बोलना.

४ पाक्षिक प्रतिक्रमण में जहां बारह लोगस्स का काउस्सग्ग करते हैं, वहां चालीस लोगस्स और एक नवकार का काउस्सग्ग करना, लोगस्स न आता हो तो एकसौ साठ (१६०) नवकार का काउस्सग्ग करना.

॥ इति पाक्षिक, चउमासीअ और संवच्छरीअ प्रतिक्रमण विधि समाप्तः ॥

पाक्षिक आदि प्रतिक्रमण में छींक आने से आलोयणा करने की विधिः—

(पाक्षिक, चौमासी और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते समय पाक्षिक अतिचार से पहिले छींक आ जावे तो प्रतिक्रमण शुरू से दूसरी वार करना। और अतिचार के बाद छींक आवे तो "दुक्खक्खयकम्मक्खय" का

काउस्सग्ग करने से पहिले और सज्झाय के बाद नीचे की विधि करना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं

संति च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पया-सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'क्षुद्रोपद्रव ओहडावणार्थं करेमि काउस्सग्गं 'इच्छं.'

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार लोगस्स का 'सागरवरगंभीरा तक' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग कर, पारके नीचे की थुइ तीन वार कहना.)

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ।
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वन्दे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासु पुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा; आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥



॥ ॐ ॥

॥ अर्हं नमः ॥

अथ चैत्यवंदन स्तवन स्तुत्यादि-विभागः—

सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त्त मेघो,
दुरिततिमिर भानुः कल्प वृक्षोपमानः।
भवजल निधिपोतः सर्व संपत्तिहेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः ॥१॥

श्री सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन

विमल गिरिवर सयल अघहर भविकजन मन रंजनो, निज रूप धारी पाप टारी आदि जिन मद भंजनो। जगजीव तारे भरम फारे, सयल अरिदल गंजनो, पुंडरीक गिरिवर शृंग शोभे आदिनाथ निरंजनो ॥१॥ अज अमर अचर आनंदरूपी जन्म मरण विहंडनो,

सुर असुर गावे भक्ति भावे, विमलगिरि जग मंडनो। पुंडरीक गणपति राम पाँडव आदि ले बहु मुनिवरा, जिहां मुक्तिरामा वर्या रंगे, कर्मकंटक सहु जरा ॥ २ ॥ कोई तीर्थ जग में अन्य नाहीं, विमल गिरि सम तारकं, जे दूर भविया जे अभविया, सदा दृष्टि निवारकम्। एक तीजे पाँच में भव वरे, शिव सुख-कारकं, यह आसधारी, सरण थारी, आतमा दुःखवारकं ॥ ३ ॥

श्री महावीर स्वामी का चैत्यवंदनः—

सिद्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो।
क्षत्रियकुल मां अवतर्यो सुरनरपति गायो ॥ १ ॥
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय।
बहोंतेर वर्षनुं आउखुं, वीरजिनेश्वर राय ॥ २ ॥
खिमा विजयजिनरायना, उत्तम गुण अवदात।
सात बोल थी वरणव्यो पद्मविजयविख्यात ॥३॥

श्री वीश स्थानक तप चैत्यवंदनः—

पहेले पद अरिहंत नमुं बीजे सर्व सिद्ध ।
त्रीजे प्रवचन मन धरो आचारज सिद्ध ॥१॥
नमो थेराणं[1] पांचमे, पाठक[2] गुण छट्ठे ।
नमो लोए सव्व साहूणं, जे छे गुण गरिट्ठे ॥२॥
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन पद ध्यावो ।
विनय करो गुणवंतनो, चारित्र मन भावो ॥३॥
नमो बंभवय धारिणं तेरमे किरियाणं ।
नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥४॥
चारित्रं[3] नाण[4] सुअस्सने[5] ए, नमोतित्थस्स जाणी
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाणी ।५।

दूज तिथि का चैत्यवंदनः—

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा अभिनंदन ।
बीजे जन्म्या ते प्रभु, भव दुःख निकंदन ॥१॥

---

१ स्थविर । २ उपाध्याय । ३ संयम । ४ ज्ञान । ५ श्रुतज्ञान, अथवा श्रुत–सिद्धान्त, जो ४५ आगम है ।

दुविध ध्यान तमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान।
इम प्रकाश्युं सुमति जिने, ते चविया बीज दिन।३।
दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीये।
मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण।
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलज्ञान॥४॥
निश्चय ने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीये।
अरजिन बीज दिने चवी, एम जन आगल कहीये
वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण।
बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण॥६॥
एम अनंत चोवीशीए, हुआं बहु कल्याण।
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण।७।

पंचमी का चैत्यवन्दन.

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे।
त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे॥१॥
आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली।
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली॥२॥

ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार।
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥३॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, कास कुसुम उपमान।
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥४॥
ज्ञानी श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो छेह।
पूर्व कोडी वरसां लगे, अज्ञानी करे तेह ॥५॥
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान।
ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान्।६।
पंच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी।
पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥७॥
एकावन ही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो।
उजमणुं करो भावशुं, टालो भव फेरो ॥८॥
एणी परे पंचमी आराधीए, आणी भाव अपार।
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥९॥

श्री अष्टमी का चैत्यवन्दनः—

माह शुदी आठम दिने, विजया सुत जायो।
तेम फागण शुदि आठमे, संभव चवी आव्यो।१।

चैत्र वदिनी आठमें, जन्म्या ऋषभ जिनंद ।
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ।२।
माधव[1] शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर ।
अभिनंदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥३॥
एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिनंद ।
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इंद ॥४॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ।
नेम अषाड शुदि आठमे, अष्टमी[2] गति पामी ।५।
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जग भाण ।
नेम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ॥६॥
भाद्रवा वदी आठम दिने, चविया स्वामी सुपास
जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥७॥

श्री एकादशी का चैत्यवन्दन. (१)

अवधिज्ञाने आभोगीने.[1] निज दीक्षा काल ।
दान संवच्छरी जिन दीये, मनोवांछित तत्काल ।१
धन कण[2] कंचन कामिनी, राज्य ऋद्धि भंडार ।
छंडी संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥२॥

१ वैशाख मास । २ मोक्ष । ३ देख कर । ४ धान्य ।

मृगशिर शुदि एकादशी, संयम लीए महाराय।
तस पद पद्म सेवन थकी, सीझे सघलां काज।३।

श्री एकादशी का चैत्यवन्दन.(२)

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो।
संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो॥१॥
माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ।
इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ॥ २॥
एकादशसो चउ गुणा,[१] तेहनो परिवार।
वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार॥३॥
जीवादिक संशय हरी, एकादश गणधार।
वीरे थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार॥४॥
मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी।
ऋषभ, अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनाशी
पद्मप्रभ शिव वास पास, भव–भवना तोड़ी।
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोड़ी॥६॥

१ चुँवालीस सौ–४४००।

दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणसें कल्याण ।
वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥७॥
अगीयार अंग लखावीये, एकादश पाठां ।
पुंजणी ठवणी वींटणी, मषी कागल ने काठां ।८।
अगीयार अव्रत छांडवां ए, वहो पडिमा अगीयार
क्षमाविजय जिनशासने, सफल करो अवतार ।९।

सिद्धचक्रजी का चैत्यवन्दनः—

पहेले पद अरिहंतना, गुण गाओ नित्ये ।
बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥१॥
आचारज त्रीजे पदे, प्रणमो विहुं कर जोडी ।
नमीये श्रीउवझायने, चोथे पद मोडी ॥२॥
पंचम पद सव साधुनुं, नमतां न आणो लाज ।
ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥३॥
दंसण—शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो ।
सर्व नाण पद सातमे, क्षण एक न विसारो ॥४॥
चारित्र चोखुं चित्तथी, पद अष्टम जपीये ।
सकल भेद बीच दान-फल, तप नवमे तपीये ॥५॥

ए सिद्धचक्र आराधतां, पूरे वंछित कोड ।
सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे कर जोड ।६।

दीवाली का चैत्यवन्दनः—

सिद्धारथ नृप कुल-तिलो, त्रिशला जस मात।
हरि[1] लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ।१।
त्रीश वरस गृहवास छंडी, लिये संयम भार।
बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥२॥
त्रीश वरस इम सवि मली, बहोंतेर आयु प्रमाण।
दीवाली दिन शिव गया, नय कहे ते गुण खाण ।३।

अथ स्तवनानिः—

श्री सिद्धाचल तीर्थ स्तवन

(हमें क्यों छोड़ चले वन माधो—चाल)

अब तो पार भये हम साधो, श्री सिद्धाचल दरस करीरे ॥अ०॥ आदीश्वर जिन मेहर करी अब, पाप पटल सब दूर भयो रे। तन मन पावन भविजन केरो, निरखी जिनंदचंद सुख थयो रे ॥अ० १॥ पुंडरिक पमुहा मुनि

बहु सिद्धा, सिद्धक्षेत्र हम जाच लह्यो रे । पशु पंखी जिहां छिनक में तरिया, तो हम दृढ़ विसवास गह्यो रे ॥ २ ॥ जिन गणधर अवधि-मुनि नाहीं, किस आगे हूं पुकार करूं रे । जिम तिम कर विमलाचल भेट्यो, भवसागर से नाहीं डरूं रे ॥ ३ ॥ दूर देशांतर में हम ऊपने, कुगुरु कुपंथ को जाल पर्यो रे । श्रीजिन आगम हम मन मान्यो, तब ही कुपंथ को जाल जर्यो रे ॥ ४ ॥ तो तुम शरण विचारी आयो, दीन अनाथ को शरण दियो रे । जयो विमलाचल पूरण स्वामी, जनम जनम को पाप गयो रे ॥ ५ ॥ दूर भवी अभव्य न देखे, सूरि धनेसर एम कह्यो रे । विमलाचल फरसे जो प्राणी, मोक्ष महल तिण वेग लह्यो रे ॥ ६ ॥ जयो जगदीसर तूं परमेसर, पूर्व ननानवे वार थयो रे । समवसरण रायण-तले तेरी, निरखी अघ मम दूर गयो रे ॥ ७ ॥

श्री विमलाचल मुझ मन वसीयो, मानुं संसारनो अंत थयो रे। यात्रा करी मन तोष भयो अब, जनम मरण दुःख दूर गयो रे॥ ८॥ निर्मल मुनिजन जो तैं तार्या, तेतो प्रसिद्ध सिद्धांत कह्यो रे। मुझ सरीखा निंदक जो तारो, तारक विरुद् ए साच लह्यो रे॥ ९॥ ज्ञानहीन गुणरहित विरोधी, लंपट धीठ कषाय खरोरे। तुझ विन तारक कोई न दीसे, जयो जगदीसर सिद्ध गिरो रे॥ १०॥ तिर्यंच नरक गति दूर निवारी, भवसागर की पीर हरो रे। 'आतमराम' अनघ पद पामी, मोक्ष वधु तिण वेग वरो रे॥ अ० ११॥

॥ श्री सुमतिनाथजिनस्तवन ॥

(वढंस ॥ नाथ कैसे गज के फंद छुडाये ॥ एदेशी ॥)

सुमति जिन तुम चरणे चित्त दीनो। एतो जनम जनम दुःख छीनो ॥ सु० ॥ आंकणी ॥ कुमति कुटल संग दूर निवारी,

सुमति सुगुण रस भीनो। सुमतिनाथ जिन मंत्र सुण्यो है, मोह नींद भइ खीनो ॥सु०॥१॥ करम परजंक वंक अति सिज्या, मोह मूढता दीनो। निज गुण भूल रच्यो परगुण में, जनम मरण दुःख लीनो ॥सु०॥२॥ अव तुम नाम प्रभंजन प्रगट्यो मोह अभ्र छय कीनो। मूढ अज्ञान अविरती एतो, मूल छीन भये तीनो ॥सु०॥३॥ मन चंचल अति भ्रामक मेरो, तुम गुण मकरंद पीनो। अवर-देव सव दूर तजत है, सुमति गुपति चित दीनो ॥सु०॥४॥ मात तात तिरिया सुत भाई, तन धन तरुण नवीनो। ए सब मोह जाल की माया, इन संग भयो है मलीनो ॥सु०॥५॥ दरसण ज्ञान चारित्र ए तीनों, निज गुण धन हर लीनो। सुमति प्यारी भई रखवारी, विषय इंद्रि भइ खीनो ॥सु०॥६॥ सुमति सुगति समतारस सागर, आगर ज्ञान

भरीनो। आतम रूप सुमति संग प्रगटे, शम दम दान वरीनो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्रीपद्मप्रभस्तवन ॥

(तखत हजारेनु गयो मैनू छड के ॥ एदेशी ॥)

पद्मप्रभु मुझ प्यारा जी मन मोहन गारा। पद्म० अंचलि ॥ चंद चकोर मोर घन चाहे, पंकज वन रवि सारा जी ॥ मन० ॥ १ ॥ त्यूं जिनमूर्त्ति मुझ मन प्यारी, हिरदे आनन्द अपारा जी ॥ मन० ॥ २ ॥ अब क्यों वेर करी मुझ स्वामी, भवोदधि पार उतारा जी ॥ म० ॥ ३ ॥ पंच विघन भय रति तुम जीती, अरति काम विडारा जी ॥ म० ॥ ४ ॥ हास सोग मिथ्या सब छारी, नींद अत्याग उखारा जी ॥ म० ॥ ५ ॥ राग द्वेष धीन मोह अज्ञाना, अष्टादश रोग जारा जी ॥ म० ॥ ६ ॥ तुम ही निरञ्जन भये अविनाशी, अब सेवक की वारा जी ॥ म० ॥ ७ ॥ हूं अनाथ तुम त्रिभुवननाथा-

वेग करो मुझ सारा जी ॥ म० ॥ ८ ॥ तुम पूरण गुण प्रभुता छाजे, आतमराम, आधारा जी ॥ म० ॥ ९ ॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथजिनस्तवन ॥

(मन्दिर पधारो मारा पूजजी ॥ एदेशी ॥)

श्री सुपास मुझ विनती । अब मानो दीनदयाल जी । तरण तारण तुम विरुद छे । भगत वछल किरपाल जी । श्रीसु० ॥ १ ॥ अक्षर भाग अनन्त में । चेतनता मुझ छोर जी । करम भरम छाया महा । जिन कीनो तम महा घोर जी । श्रीसु० ॥ २ ॥ घन घटा छादित रवि जिसो । तिसो रह्यो ज्ञान उजास जी । किरपा करो जो मुझ भणी । थाये पूरण ब्रह्म प्रकास जी । श्रीसु० ॥ ३ ॥ विन ही निमित्त न नीपजे । माटी तनो घट जेमजी ! तिम ही निमित्त जिनजी विना । उज्जल थाउं हूं केमजी । श्रीसु० ॥ ४ ॥ त्रिकरण शुद्ध थावे

यदा। तदा सम्यग दर्शन पास जी। दूजे त्रिक ब्रह्म ज्ञान है। त्रिक मिटे शिवपुर ठाम जी ॥ श्रीसु० ॥ ५ ॥ एही त्रिण त्रिक मुझ दीजिए। लीजिये जस अपार जी। कीजिए भक्त सहायता। दीजिए अजर अमार जी। श्रीसु० ॥ ६ ॥ अब जिनवर मुझ दीजिए। आतम गुण भरपूर जी। कर्म तिमिर के हरण को। निर्मूल गगन ज्यूं सूर जी। श्रीसु० ॥ ७ ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभजिनस्तवन ॥

(चाहत थी प्रभु सेवा करूंगी उल्टी कम बनाईरी ॥ एदेशी ॥)

चाह लगी जिनचंद्र प्रभु की, मुझ मन सुमति ज्यूं आइ री। भरम मिथ्यामत दूर नस्यो है, जिन चरणांचित लाइ सखी री चा० अंचलि ॥ १ ॥ सम संवेग निरवेद लस्यो है, करुणारस सुखदाइ री। जैन वैन अति नीके सगरे, ए भावना मन भाई स० चा० ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रति संसा, कुगुरु संग

छिटकाइ री। परसंसा धर्म हीन पुरुप की, इन भवमांहि न कांइ ॥ स० चा० ॥ ३ ॥ दुग्ध सिंधु रस अमृत चाखी, स्याद्वाद सुखदाइरी। जहर पान अब कौन करत है, दुर्नय पंथ नसाइ स० चा० ॥ ४ ॥ जब लग पूरण तत्व न जाण्यो, तब लग कुगुरु भुलाइ री ॥ सत भंगी गर्भित तुम वाणी भव्य जीव सुखदाइ स० चा० ॥ ५ ॥ नाम रसायण सहु जग भाखे, मर्म न जाने काइ री। जिन वाणी रस कनक करण को, मिथ्या लोह गमाइ ॥ स० चा० ॥ ६ ॥ चंद किरण जस उज्जल तेरो, निर्मल जोत सवाइ री। जिनसेव्यो निज आतम रूपी, अवर न कोइ सहाइ ॥ स० चा० ॥ ७ ॥

॥ श्री शांतिनाथ जिनस्तवन ॥

(भविकजन नित्य ये गिरिवन्दो ॥ एदेशी ॥)

भविक जन शांति हे जिन वंदो। भव भवना पाप निकंदो। भविक जन शांति

हे जिन वंदो ॥ १ ॥ पूरव भव शांति करीनो, कापोत पाल सुख लीनो। करुणा रस सुध मन भीनो। तैंतो अभयदान बहु दीनो ॥ भ० ॥ २ ॥ अचिरा नंदन सुखदाइ। जिन गर्भे शांति कराई। सुर नर मिल मंगल गाइ। कुरु मंडन मारि नसाइ ॥ भ० ॥ ३ ॥ जग त्याग दान बहु दीना। पामर कमलापति कीना। शुद्ध पंच महाव्रत लीना। पाया केवल ज्ञान अईना ॥ भ० ॥ ४ ॥ जग शांतिक धरम प्रकासे। भव भवना अघ सहुनासे। शुद्ध ज्ञान कला घट भासे। तुम नामे परम सुख पासे ॥ भ० ॥ ५ ॥ तुम नाम शांति सुख दाता। तुम मात तात मुझ भ्राता। मुझ तस हरो गुणज्ञाता। तुम शांति के जगत विधाता ॥ भ० ॥ ६ ॥ तुम नामे नव निधी लहिये। तुम चरण शरण गहि रहिये। तुम अर्चन तन मन वहिये। एही शांतिक भावना कहिये

॥ भवि० ॥ ७ ॥ हुंतो जनम मरण दुःख दहियो । अब शांति सुधारस लहियो । एक आतम कमल उमहियो जिन शांति चरण कज गहियो ॥ भवि० ॥ ८ ॥

॥ श्री नमिनाथ जिनस्तवन ॥

(आमिलवे वंसी वाला कान्हा ॥ एदेशी ॥)

तारो जी मेरे जिनवर सांइ, बांह पकड़ कर मोरी । कुगुरु कुपंथ फंद थी निकसी, सरण गही अब तोरी । ता० ॥ १ ॥ नित्य अनादि निगोद में रुलतां, भूलतां भवोदधि मांही । पृथ्वी अप तेज वात स्वरूपी, हरित काय दुख पाइ । ता० ॥ २ ॥ विति चउरिंद्री जाति भयानक, संख्या दुखकी न कांइ । हीन दीन भयो परवस पर के ऐसे जनम गमाइ । ता० ॥ ३ ॥ मनुज अनारज कुल में उपनो, तोरी खबर न कांइ । ज्यूं त्यूं कर प्रभु मग अब परख्यो, अब क्यों बेर लगाइ ।

ता० ॥ ४ ॥ तुम गुण कमल भ्रमर मन मेरो, उडत नहीं है उडाइ । तृषत मनुज अमृत रस चाखी, रुच से तप्त बुझाई । ता० ॥ ५ ॥ भव-सागर की पीर हरो सब मेहर करो जिन राइ । दृग करुणा की मोह पर कीजो लीजो चरण छुहाई । ता० ॥ ६ ॥ वप्रानंदन जगसुखकंदन, भगत वछल सुखदाई । आतमराम रमण जग स्वामी, कामित फल वर दाई ॥ ता० ॥ ७ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥

(राग वढंस)

मूरति पासजिनंद की सोहनी । मोहनी जगत उधारण हारी । मू० ॥ आंकणी ॥ नील कमल दल तन प्रभु राजे, साजे त्रिभुवन जन सुखकारी । मोह अज्ञान मान सब दलनी, मिथ्या मर्दन महा अघ जारी । मू० ॥ १ ॥ हूं अति हीन दीन जगवासी, माया मगन भयो शुद्ध बुद्ध हारी ॥ तो करे

करुणा, वेगा लो अब खवर हमारी मू० ॥२॥ तुम दरसन विन वहु दुख पायो, खाये कनक जैसे चरी मतवारी। कुगुरु कुसंग रंगवस उरझयो, जानी नहीं तुम भगति प्यारी। मू० ॥ ३ ॥ आदि अंत विन जग भरमायो, गायो कुवेद कुपंथ निहारी। जिन रस छोर अन्य रस गायो, पायो अंत महा दुख भारी। मू० ॥ ४ ॥ कौन उद्धार करे मुझ केरो, श्री जिन विन सहु लोक मझारी। करम कलंक पंक सब जारे, जो जन गावत भगति तिहारी। मू० ॥ ५ ॥ जैसे चंद चकोरन नेहा, मधुकर केतकी दल मन प्यारी। जनम जनम प्रभु पास जिनेसर, वसो मन मेरे भक्ति तिहारी। मू० ॥ ६ ॥ अश्वसेन वामा के नंदन चन्दन सम प्रभु तस बुझारी। निज आतम अनुभव रस दीजो, कीजो पलक में तनु संसारी। मू० ॥ ७ ॥

श्री सुमेर मंडन श्री शान्तिनाथ

जिनस्तवनः—

तुमे तो भले विराजोजी, श्री शान्ति नाथ महाराज सुमेरे भले॰ शांतिनाथ शांति के करता हरता भवदुःख भारी। तिन कारण सेवे भवी भावे सुर अमरी नर नारी ॥ तुमे तो॰ १ ॥ देव नहीं कोइ तुम सम जग में, निरदोसी नीरागी, भव अटवी में, पुण्ये मिलिया, पुण्यवंत वडभागी ॥ तुमे तो॰ २ ॥ वीतराग प्रभु तुमको त्यागी माता मसाणी माने, समकित लाधो उसने नहीं प्रभु निश्चय तुम ही जाने ॥ तुमे तो॰ ३ ॥ देश देश से यात्रा कारण आवत हैं नर नारी यात्रा करके आनंद पावे वार वार वलिहारी ॥ तुमे तो॰ ४ ॥ दे सूरी से पांच मील है, पांच मील नाडलाई। पांच तीरथ की यात्रा वाले, ख्याल रखें सव भाई ॥ तुमे तो॰ ५ ॥ शोभा सुन

कर मैं भी आया, साधु आठके संगे। देसूरी वागोल बीजोवा श्रावक पूजे नव अंगे ॥ तुमे तो० ६ ॥ उन्नीसो त्र्यासी एकादशी वदी आषाढ सुहावे, आत्म लक्ष्मी यात्रा करके वल्लभ अतिहरखावे ॥ तुमे तो० ॥ ७ ॥

ढाल–४ (राग-आनंद का डंका दुनिया में)

पर्वों में पर्व पजुषण है, बतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ आराधक भविभव पार होवे, फरमा दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ अंचली ॥ कोई ज्ञान पढ़े, कोई ध्यान धरे, कोई शुभ भावे तप ज़ोर करे। कर्मों के पुञ्ज के पुञ्ज जरे, बतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ १ ॥ कोई मासखमण, कोई पास धरे, चत्तारी अठ दश दोय करे। चौबीस जिनद के पांव परे, बतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ २ ॥ सामायक पौषध पडिक्कमणां, पूजा करते भवि शुद्ध मना। पावे फल निर्जरा पुण्यघना बतला

सूचनाः-पृष्ठ ३४२ पर गलती से पर्युषणपर्व स्तवन की चौथी ढाल छपी है, पाठक सुधारकर (बाद में पढने की कृपा करें।

॥ पर्युषणापर्व का स्तवन ॥

ढाल—१ (राग—मेरी अरजी)

पूजा वीर जिणंद की भावे करो, पर्व-पर्युषणा में आनंद धरो, पूजा वीर जिणंद०॥ अंचली ॥ सप्तदश भेदे प्रभु पूजा करी शुभ भावसे, श्रवण करीए सूत्र उत्तम, कल्पसूत्र उल्लास से, पर्वाराधन करी भवि कर्म हरो ॥ पूजा०॥१॥ देव में अरिहंत मोटा, मंत्र में नवकार है, तीर्थ में पुंडरगिरी तिम कल्पसूत्र उदार है, प्रभु जीवन तारणहार खरो ॥ पूजा वीर जिणंद की भावे करो ॥ २ ॥

ढाल—२ (राग—विमलाचल धारा)

पर्युषणा पर्वे मिलकर सर्वे, पूजो श्री भगवान् । निज कर्तव्यधारी, भवि नरनारी, आनंदकारी—पूजो० ॥ अंचली ॥ जीवाभिगम सूत्र में रे, वर्णवे श्री गणधार, द्वीप नन्दीश्वर आठमे रे, शाश्वताजिन अधिकार रे, पर्युषणा पर्वे०॥ १ ॥ तीर्थंकर कल्याणकेरे, तीन चौमासा

धार, पर्युषण शुभ पर्व में रे, देवता चार प्रकार रे॥ पर्युषण०॥ २ ॥ अट्ठाई महोत्सव कारणेरे, जाते अति आनंद, पूजन करी सुख मानतेरे, जय जय श्री जिनचंद रे ॥ पर्युषण पर्व०॥३॥ पर्वाराधन कीजियेरे, तिमपूजा भगवंत । पूजन फल जिनवर कहेरे, पदवरे सादि अनंतरे, पर्युषणापर्वे मिलकर सर्वे, पूजो श्रीभगवान् ॥४॥

ढाल-३ (राग-चंदाप्रभु भजिए परम सुख पावना)

आराधन करीए, प्रभुके गुण गावना ॥अंचली॥ पर्व पर्युषण उत्तम कहिये, पाप सकल हरिये, प्रभु का फरमावना ॥ आराधन करिए०॥१॥ दानशीयल तप भावनाचारी शुद्ध हृदय धरिये, आतम गुण पावना ॥ आराधन करिये०॥२॥ प्रभु तुम शुद्ध धर्म उपदेस्यो, करी भवतरिये, न फिर आवना ॥ आराधन करिये०॥ ३ ॥ वीर जिनंद जन्मोत्सव होवे, हर्ष हृदय भरिये आनंद मन लावना ॥ आराधन करिये प्रभु के गुण गावना ॥ ४ ॥

दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ ३ ॥ तपस्या शांति पूर्वक कीजे, व्याख्यान सुनने में मन दीजे। उत्तम नरभव लाहा लीजे, वतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥ ४ ॥ पर्वों में पर्व पजुषण है ॥

अथ श्री पर्युषण पर्वस्तवनम्:—

(मेहबूव जानि मेरा देशी)

उत्तम पर्युषण आये, श्री वीर जिनंदा। पूजा सतरां भेदे केरी, सेवो भविचन्दा ॥ उ० १ ॥ शाश्वती चैतर आसु दो, चउमासे तीन सोहन्दा। भादो पर्युषण चउथी, अट्ठाई कहंदा ॥ उ० २ ॥ जीवाभिगम में देखो, चउविह सुर इन्दा। नन्दीश्वर जाके महोत्सव अट्ठाइ करंदा ॥ उ० ३ ॥ ठामे निज नर विद्याधर, जिन चैत्य अमंदा। अट्ठाइ महोत्सव करके, टारे भवफंदा ॥ उ० ४ ॥ अमारी आठ दिवस तप, अट्ठम अति नंदा। करी खामणा सुध भावों से, निज कर्म जरंदा ॥ उ० ५ ॥ परिपाटी चैत्य सुहंकर परमानन्द

कंदा। साधर्मी वत्सल करके, पुण्यभार भरंदा ॥ उ० ६ ॥ मंतर में पंच पर मिट्ठी तीरथ में सिद्ध गिरिन्दा। पर्वों में पर्व पजूसण, सूत्रों में कल्प अमंदा ॥ उ० ७ ॥ छठ करके बड़ा कल्प का, सुनिये श्री वीर जिनंदा। एकम एकम दिन जन्म महोत्सव, मंगल वरतंदा ॥ उ० ८ ॥ तेलाधर गणधर सुणिये, अति-वाद करंदा। निर्वाण महोत्सव करते, मिल सुर नर इंदा ॥ उ० ९ ॥ पारस नेमि जिन अंतर, श्री ऋषभ जिनंदा। गुर्वावलि अरु वारां से, सामाचारी नंदा ॥ उ० १० ॥ सुन के वाचनी नवभावें, शिव लक्ष्मी वरंदा। निज 'आतम राम' सरूपे 'वल्लभ' हर्षंदा ॥ उ० ११॥

॥ दीवाली स्तवन ॥

(भैरवी–अब तो प्रभुजी का लेलो सरन)

जयो जगस्वामी वीर जिनंद ॥ टेर ॥

नगर आपापा में प्रभु आये, भविजन

को उपकार करंद ॥ ज० १ ॥ निज निरवान समय को जानी, सोलां पहर प्रभु धर्म कहंद ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पंदरस की राते प्रातःकाल प्रभु मुक्ति लहंद ॥ ज० ३ ॥ परमातम पद छिनक में लीनो, आठ कर्म को दूर हरंद ॥ ज० ४ ॥ कल्याण निर्वाण महोत्सव, कारण मिल कर आये सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पापा नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां ज्ञान दिनंद ज० ६ ॥ नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में धरंद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अब जग से, द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ ज० ८ ॥ तिस कारण दीवाली होइ, ध्यान धरो प्रभु वीर जिनंद ॥ ज० ९ ॥ कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौतम केवल-ज्ञान गहंद ॥ ज० १० ॥ आतमराम परम पद पावे, वल्लभ चित में हर्ष अमंद ॥ ज० ११ ॥

श्री शान्तिनाथ जिन स्तवनः—

(कव्वाली)

न जाने किं गतं भावि, यदि मां त्रास्यसे स्वामिन् ! वदन्ति पण्डिता नित्यं, भवन्तं तारकं स्वामिन् ! (ध्रुवपदम्) कृता शान्ति स्त्वयाऽऽगत्या—ऽभिधा शान्तिर्धृता तेन । तथेदानीमपि शान्तिं प्रवर्त्तस्वाऽभितः स्वामिन् ! ॥ न० १ ॥ त्वमेवार्हन्, जिनो बुद्धो हरिर्ब्रह्मा शिवोऽसि यत् । गुणैर्जन्येऽभिधाने को विचारो युज्यते स्वामिन् ! ॥ न० २ ॥ दृशा त्वामेव पश्यामि, नमामि त्वां स्मरामि त्वाम् । सदा त्वामेव पूजामि, विशेषोक्तेन किं स्वामिन् ! ॥ न० ३ ॥ विभो ! चित्तेप्सितं दाने, फलं दातारमेव त्वाम् । सुर द्रुभ्योऽधिकं जाने, वदामि नानृतं स्वामिन् ! ॥ न० ४ ॥ निजात्मा-नन्द सम्पत्कृत्, जहि दुःखं सुखं देहि । प्रभो

त्वं वल्लभो नृणामिति याचेऽनिशं स्वामिन्! ॥न० ५॥

श्री शान्तिनाथ जिन स्तवनः—

(गजल ताल–कव्वाली)

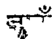
देवस्त्वमेव भगवन्!, ज्ञातं मयेति सम्यक्। अन्यो न त्वत्समानो ज्ञातं मयेति सम्यक् ॥ देव० १ ॥ रागादि दोप रहितो, महितो नरामरेंद्रैः। देवाधिदेव त्वत्तो, देवोऽस्ति नैव सम्यक् ॥ देव० २ ॥ स्याद्वादी-त्वं न यन्नो मयवाद युक्तवचनैः। व्रूपे पदार्थ सार्थं, ज्ञातं मयेति सम्यक् ॥ देव० ३ ॥ वस्तु कथंचिदस्ति, नास्ति कथञ्चिदेवम्। नित्यं तथा ह्यनित्यं, गदितं त्वयेति सम्यक् ॥ देव० ४ ॥ क्रोधाग्निनातिदग्धं, मानाहि नानि जग्धम्। वद्धं हि नाथ! माया जालेन हंन सम्यक् ॥ ५ ॥ लोभाधिनम माषि व्याधिभिः

पीडितं माम् । जानासि किं ब्रु वेऽहं, पाहि जिनेश ! सम्यक् ॥ देव० ६ ॥ मत्तेभ सिंह दलने, शूरान-मारहनने । कन्दर्प दर्प हरणे, शूर स्त्वमेव सम्यक् ॥ देव० ७ ॥ आत्मानमात्मना सह, साम्यं कुरु ममार्हन् । देहात्मलक्ष्मी हर्ष वल्लभ देव सम्यक् ॥ देव० ८ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्र स्तवन ॥

(गज़ल—गिरिराज दर्श पावे—यह चाल)

सिद्ध चक्र महिमा भारी, विभु वीर ने उच्चारी—सिद्ध० अंचली ॥ नवपद का ध्यान धरना, संसार पार करना । जरा जन्म मरण टारी—विभु० ॥ १ ॥ भावारि दूर करके, अरिहंत नाम धरके । हुए बारां गुण के धारी—वि० ॥ २ ॥ गुण आठ सिद्ध धर्त्ता, निज आत्मरूप कर्त्ता । आठों करम को जारी—वि० ॥ ३ ॥ आचार्य गच्छ धोरी,

हुए आत्म-शक्ति फोरी । षट्त्रिंश गुण विहारी—वि० ॥ ४ ॥ गुण पंचविंश सोहे उवज्झाय मन मोहे । मुनि पाठनाधिकारी—वि० ॥ ५ ॥ गुण सात वीस धारी, मुनिराज ब्रह्मचारी । भवि जीव मददगारी—वि० ॥६॥ धर्मी ये पांच जानो, चारों को धर्म मानो । नव पद की महिमा भारा—वि० ॥ ७ ॥ सडसठ भेद दरसन, सम्यक्त्व शुद्ध फरसन । सब धर्म का आधारी—वि० ॥ ८ ॥ पांच भेद ज्ञान कहिये, पचास एक लहिये । विना ज्ञान करणी खारी—वि० ॥ ९ ॥ गुण सत्तरि प्रभावे, चारित्र शुद्ध थावे । संसार पारकारी—वि० ॥ १० ॥ तप बारां भेद तपता, भवि जीव कर्म खपता । समता के हो भंडारी—वि० ॥ ११ ॥ दो देव तत्त्व सुन्दर, गुरु तत्त्व तीन अन्दर । हैं धर्मतत्त्व चारी—वि० ॥ १२ ॥ नव पद सिद्ध जानी, शाश्वत चक्र 
वारी—वि० ॥ १३

आराधी, लियो आत्मरूप साधी । श्रीपाल मयणा नारी—वि० ॥ १४ ॥ आतम लक्ष्मी दाता, 'वल्लभ' हर्ष पाता । सिद्धचक्र सेवा सारी—वि० ॥ १५ ॥

॥ पद १ ॥

आशा औरन की क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे ॥ भटके द्वारा द्वार लोकन के, कूकर आशा धारी । आतम अनुभव रस के रसीया, उतरे न कबहु खुमारी ॥ आ० १ आशा दासी के जे जाया, ते जन जग के दासा । आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासा ॥ आ० २ मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि परजाली । तन भाठी अवटाई पिये कस, जागे अनुभव लाली ॥ आ० ३ अगम पीयाला पीयो मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा । आनंदघन चेतन व्है खेले, देखे लोक तमासा ॥ आ० ४

अथ स्तुति भागः–

॥ श्री ऋषभदेव जी की स्तुति ॥

(इन्द्र वज्रा । देशी कल्याण कंद ॥)

श्री आदि देवा पद पद्म सेवा, श्री मारु देवा सुत पाप खेवा । युगादि देवा वृप चिन्ह लेवा, नमामि भक्त्या शिव पंथ मेवा ॥ १ ॥ सहस्र चारी जिन आदि धीरो, सो मल्लि पासो त्रय एक वीरो । दीक्षा शतों से पट् वासु पूज्यो, शेषा सहस्रा इक पाप धूजो ॥ २ ॥ जिनेंद्र वानी गुणरत्न खानी, निर्वाण ठानी सब कर्म हानी । अर्थ प्रदानी सुख की निशानी, सुधा समानी हर मान मानी ॥ ३ ॥ चक्केसरी शासन शांतिकारी, गोमुख यक्षो हित संघकारी, आनन्द सूरि तप गच्छ धोरी, सदा नमे वल्लभ हाथ जोरी ॥ ४ ॥

श्री सिद्धाचल जी की स्तुति

(१)

विमलगिरि सहु तीरथ राजा, नाभिको नंदन जिनवर ताजा, भवजलधि को जहाजा। नेमि विना जिनवर तेवीस, समवसरे सहु विमल गिरीस, भविजन पूरे जगीस॥ सिद्धक्षेत्र जिन आगम भासे, दूरभवी अभव्य निरासे, गिरि दरिसण नवि पासे। कवड यक्ष चक्केसरी देवी, तीरथ सानिध्य कर सुख लेवी, आतम सफल करेवी॥ १॥

(२)

पुंडरगिरि महिमा आगममां परसिद्ध, विमलाचल भेटी लइये अविचल रिद्ध। पंचमी गति पहूंता मुनिवर कोडाकोड, इण तीरथ आवी कर्म विपाक विछोड़॥ १॥

(३)

श्री शत्रुञ्जय आदिजिन आव्या पूर्व नवाणुं

वार जी, अनंत लाभ तिहां जिनवर जाणी समोसर्या निरधार जी। विमलगिरिवर महिमा म्होटो सिद्धाचल ते ठाम जी, कांकरे कांकरे अनंता सिद्धा एकसोने आठ गिरिनाम जी॥१॥

(४)

पुंडरीक मंडन पाय प्रणमीजे आदीश्वर जिन-चंदाजी, नेमिविना त्रेवीस तीर्थंकर गिरि चढ़िया आनंदा जी। आगम मांहे पुंडरीक महिमा भाख्यो ज्ञानदिनंदा जी, चैत्री पूनमदिन देवी चक्केसरीसौभाग्य दियो सुखकंदाजी॥१॥

॥ श्री दीवाली की स्तुति ॥

मनोहर मूर्त्ति महावीर तणी,
जिणे सोल पहोर देशना पभणी।
नवमल्ली नवलच्छी नृपति सुणी,
कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥
शिव पहोंच्या रिषभ चउदश भक्ते,
बावीस लह्या शिव मास थीते।

छट्ठे शिव पाम्या वीर वली,
कार्त्तिक वदि अमावस्या निर्मली ॥२॥
आगामी भावी भाव कह्या,
दीवाली कल्पे जेह लह्या।
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या,
सवी तहत्ति करी ने सद्दह्या ॥३॥
सवी देव मिली उद्योत करे,
परभाते गौतम ज्ञान वरे।
ज्ञान विमल सद्गुण विस्तरे,
जिन शासन मां जयकार करे ॥४॥

॥ श्री पर्युषण पर्व की स्तुति ॥

सत्तर भेदी जिन, पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी। ढोल ददामा, भेरी नेफेरी झल्लरी नाद सुणीजे जी॥ वीर जिन आगल, भावना भावी मानव भव फल लीजे जी। पर्व पजुषण, पूरव पुण्ये आव्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली, दसम दुवालस,

चत्तारि अट्ठ कीजे जी। उपर वली दश, दोय करीने, जिन चौवीस पूजीजे जी॥ वडा कल्पनो, छट्ठ करीने, वीर वखान सुणीजे जी। पडवे ने दिन, जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे, अमर पलावी, अट्ठमनो तप कीजे जी। नाग केतुनी परे, केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीये जी॥ तेलाधर दिन, त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदीजे जी। पास नेमीसर, अंतर तीजे, रिषभ चरित्र सुणीजे जी ॥ ३ ॥ वारसें सूत्र ने, समाचारी, संवच्छरी पडिक्कमीये जी। चैत्य प्रवाडी, विधिशुं कीजे, सकल जंतु खामीजे जी॥ पारणाने दिन, स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाइजी। मानविजय कहे, सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धाइ जी ॥ ४ ॥

॥ श्री पर्युषण पर्व स्तुति ॥

(स्रग्धरा)

पूजां कृत्वाऽनिभक्त्या चरमजिनपतेः सत-

दिग्भेदयुक्ताम् । प्रोद्दामाडंबरेण परमसुखकरीं पापहृच्युक्तियुक्ताम् ॥ कार्यः स्नात्रोत्सवोपि प्रमदपरिभृतैर्धर्मनिष्ठैर्मनुष्यै–रायाते पर्ववर्स्ते सुकृतपरिवशाद्वार्षिके पुण्यहेतौ ॥ १ ॥ कृत्वा शुद्धं प्रकृष्टं जनितधृतितपः कर्मनिर्घातनार्थं । सर्वज्ञा वीतरागा विविधसुमगणैः पूजनीयाः प्रमोदात् ॥ श्रोतव्यं वीरवृत्तं दृढतरमनसा सम्यगासेव्य षष्ठं । मांगल्यं जन्मकृत्यं प्रतिपदि दिवसे ज्ञातपुत्रस्य कार्यम् ॥ २ ॥ घस्रानष्टावमारिं सकलजनपदे घोषयित्वा स्वशक्त्या । कार्यं कैवल्यहेतुर्व्रतमतिसुखदं नागकेत्वाष्टमाख्यम् ॥ कल्याणानि स्वयम्भोः शृणुत गणभृतो गौतमादेर्विवादं । वृत्तं श्रीपार्श्वनेम्योस्तदनु भविजनाः सांतरं चार्षभीयम् ॥ ३ ॥ कल्पाख्यं मूलसूत्रं चरणगुणयुतं वाचितं तत्त्वविद्भिः । श्राव्यं क्षम्याश्च जीवास्त्रिकरणशुचिभिश्चैत्ययात्रा च कार्या ॥ कार्या

संघस्य पूजाशनविधिसहिता वार्षिके वासरेस्मि-न्नानंदं .संघसार्थे सपदि कुरु शुभे देवि सिद्धायिके त्वम् ॥ ४ ॥

श्री मौनेकादशी स्तुतिः–

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपते–र्ज्ञानमतुलं ।
तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥
वलक्षैकादश्यां सहसिलस दुद्दाम महसि ।
क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचक मदः ॥१॥

सुपर्वेंद्र श्रेण्या गमन गमनैर्भूमिवलयं ।
सदा स्वर्गत्यैवा हमहमिकया यत्र सलयं ॥
जिनानामप्यायुक्तणामति-सुखं नारक सदः ।
क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचक मदः ॥२॥

जिना एवं यानि प्रणिजग दुरात्मीय समये ।
फलं यत्कर्तृणा मितिच विदितं शुद्धसमये ॥
अनिष्टा रिष्टानां क्षिति रनुभवेयु–र्बहुमुदः ।
क्षितौ कल्याणानां क्षपतु

सुरास्सेंद्रा स्सर्वे सकल जिन चंद्र प्रमुदिताः।
तथाच ज्योतिष्का खिल भवननाथा समुदिताः॥
तपो यत्कर्त्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः।
क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचक मदः॥४॥

श्री आदि जिन स्तुतिः—

नौम्यादीशं कर्मोन्मुक्तं ॥ १ ॥
सर्वज्ञा वो मुक्ति रान्तु ॥ २ ॥
जैन सूक्तं तच्च्यात् कर्म ॥ ३ ॥
गो वक्त्रो वः श्रीस्यो भूयात् ॥ ४ ॥

श्री शांति जिन स्तुतिः—

दद्यादर्हन् शांतिः शांतिम् ॥ १ ॥
सार्व स्तोमं स्तौम्यस्ताघम् ॥ २ ॥
सिद्धान्तः स्ताज्जै मुक्त्यै ॥ ३ ॥
निर्वाणी वो विघ्न हन्यात् ॥ ४ ॥

श्री नेमि नाथ स्तुतिः—

नेमिं नाथं वन्दे बाढं ॥ १ ॥
सर्वे सार्वाः सिद्धिं दद्युः ॥ २ ॥

जैनी वाणी सिद्ध्यै भूयात् ॥ ३ ॥
कल्याणं मे दद्यादम्बा ॥ ४ ॥

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुतिः—

पार्श्वो नाथो जीयान्नित्यं ॥ १ ॥
सार्वः संघो दद्याच्छं मे ॥ २ ॥
अर्हद् वाक्यं सिद्धि दद्यात् ॥ ३ ॥
भद्रं नित्यं देयात् पद्मा ॥ ४ ॥

श्री महावीर स्वामीजी की स्तुतिः—

वीरं देवं नित्यं वन्दे ॥ १ ॥
जैनाः पादाः युष्मान्पान्तु ॥ २ ॥
जैनं वाक्यं भूयाद् भूत्यै ॥ ३ ॥
सिद्धा देवी दद्यात् सौख्यम् ॥ ४ ॥

लोकाधारं शान्ताकारं, वन्दे वीरं वीरं वीरम् ॥१॥
सिद्धा बुद्धा ये श्री देवाः तेषां भावैः कार्या सेवा ॥२॥
श्रोतीर्भक्तिश्चित्ते येषां प्रज्ञा जातं पुण्यं तेषाम् ॥३॥
जैना यत्ता रत्ता दत्ता दिशन्तु मे धर्मे शित्ता ॥४॥

वीरं हीरं सेवे भक्त्या ॥ १ ॥
सर्वेऽर्हन्तः शांतिं कुर्युः ॥ २ ॥
जैनं वाक्यं सिद्धिं दद्यात् ॥ ३ ॥
सिद्धा देवी दद्यात् विद्याम् ॥ ४ ॥

श्री सामान्य जिन स्तुतिः—

गर्भे जन्मनि दीक्षायां, केवले निर्वृत्तौ तथा ।
यस्य इन्द्रा महश्चक्रुस्तं जिनं नौमि भक्तितः ॥१॥
मोहेभ्य कुम्भ निर्भेद विधौ कंठीरवोपमाः ।
जिनास्तत् पद्मम्भोजं नमस्याम्य घनाशनम् ॥२॥
अंगोपांग जलापूर्णं, नय कल्लोल संकुलम् ।
सद्दर्शनादि रत्नाख्यं, वन्दे जैनागमो दधिम् ॥३॥
सर्वेयक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्त्य करा जिने ।
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥४॥

स्यालकोट मंडन श्री शाश्वता जिन स्तुतिः—

ऋषभ जिनंद प्रथम महाराया, वर्धमान अंतिम
सुखदाया भरते दो जिन राया ।

चंद्रानन प्रभु प्रथम कहाया, वारिषेण अंतिम पद पाया, ऐरावते दो गाया ॥
वर्तमान चौवीसी सुनाया, चारों नाम शाश्वत जिन आया, समवायांगे पढ़ाया।
चारों शाश्वत जिनवर भाया, वंदी पूजी मन वच काया, शाश्वतपद उपजाया ॥ १ ॥

पांच भरत ऐरावत जानो, पांच मिली दश चेत्र बखानो, चार नाम उर आनो।
उर्ध्व अधो और तिरछा मानो, शाश्वता चैत्य कहे जिनरानो, सिद्धायतन अभिधानो ॥
संख्यातीत प्रभु फरमानो जिन प्रतिमा भी असंख्य प्रमानो, भाखे जिनवर मानो।
पूजन वंदन मोत्त निदानो, सम्यग् दृष्टि शुद्ध सरधानो, आतम भाव पिछानो ॥ २ ॥

सूत्र सिद्धांत वदे जिनचंदा, चारों शाश्वत नाम जिनंदा वंदे सुरगण इंदा।
भगवती जीवाभिगम लहंदा, जंबूद्वीप पन्नत्ति कहंदा, रायपसेणी पढंदा ॥

गणा अंग पाठ सुहंदा, देख देख भवीजन हुल संदा, पावे परमानंदा।
सम्यग् दृष्टि करणी नंदा, नंदीश्वर जा करत आनंदा, उत्सव भाव अमंदा ॥ ३ ॥
देव देवी मिल चार प्रकारी, जिन कल्याणक दिल में धारी, भक्ति भाव विचारी।
सम्यग् दृष्टि सुर सुर नारी, संघ में निश दिन शांतिकारी, जिन शासन अनुसारी ॥
श्री तपगच्छ धुरंधर भारी, विजयानंद सूरि वलिहारी आत्म लक्ष्मी दातारी।
तास पटोधर आनंद कारी, विजय वल्लभ सूरि पद धारी, मांगे हर्ष अपारी ॥ ४ ॥

अष्टाह्निक स्तुतिः—

अष्टानिक उत्सव मनोहारी,
करते देवता चार प्रकारी।
हृदय आनंद भारी ॥

अष्टानिक उत्सव मनोहारी,
देवलोक के सुख को विसारी।
उतारे भव पारी ॥
अष्टानिक उत्सव मनोहारी,
नंदीश्वर द्वीपे अवधारी।
संख्या अष्टम सारी ॥
अष्टानिक उत्सव मनोहारी,
शाश्वती जिनवर चैत्य जुहारी।
आनंद हर्ष अपारी ॥१॥
अंजनगिरि पर्वत है चारी,
पर्वत दधिमुक सोला उदारी।
रतिकर बतीस धारी ॥
ए बावन पर्वत विस्तारी,
पर्वत पर्वत चैत्य जुहारी।
जिन पडिमा चार चारी ॥
ऋषभ चन्द्रानन अभिधा धारी,
वारीषेण वर्धमान दातारी।
पूजा अष्ट प्रकारी ॥

इंद्र इंद्राणी सुर सुर नारी,
गीत गान पूजा सहचारी।
करते जय जय कारी ॥२॥

फाल्गुन चैत्र आषाढ़ अठाई,
भादों पर्युषणा की वड़ाई।
आश्विन कार्तिक गाई॥
जिन कल्याणक दिवस वधाई,
जीवाभिगम सूत्र कहाई।
जिण गणधर फरमाई॥
शाश्वती चैत्र आसूज कहाई,
उत्तराध्ययन निर्युक्ति वताई।
सिद्धचक्र सुखदाई॥
जिन पडिमा जिन सम फरमाई,
रायप सेणी सूत्र सहाई।
श्रद्धालु मन भाई ॥३॥
षट् अठाई अराधे भावे,
धन नर–नारी सफल भव थावे।
अन्ते मोक्षे जावे॥

सम्यक् दृष्टि सुर गुण गावे,
संघ की रक्षा करी सुख पावे।
संघ के विघ्न हटावे ॥
तप गच्छ गगन में सूर्य कहावे,
विजयानंद सूरि पद पावे।
वल्लभ शीश नमावे ॥
वेद ऋषि युगकर सन आवे,
वीर प्रभु निर्वाण कहावे।
अमृतसर में बनावे ॥४॥

श्री महावीर जिन स्तुतिः—

दीवाली दिन श्री महावीर,
भव दावानल शीतल नीर।
माया भूमि शीर ॥
दीवाली दिन श्री महावीर,
मोह कटक वारण महाधीर।
सागर सम गंभीर ॥

दीवाली दिन श्री महावीर,
ध्याता ध्येय ध्यान एक थीर।
मोक्ष गये प्रभु वीर॥
दीवाली दिन श्री महावीर,
सेवे भविजन भव शुभ धीर।
पामे भव जल तीर॥१॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदा,
सुमति पद्म सुपारस चंदा।
सुवधि शीतल जिन चंदा॥
श्री श्रेयांस वासु पूज्य नंदा,
विमल अनंत धर्म सुख कंदा।
शांति शांति करंदा॥
कुंथुनाथ अरनाथ नरिंदा,
मल्लिनाथ मुख पूनम चंदा।
मुनि सुव्रत नमे इंदा॥
नमि नेमि पारस जिन,
वर्धमान महावीर कहंदा।
सेवो सर्व जिनंदा॥२॥

अपापा नगरी प्रभु आवे,
समवसरण सुर असुर बनावे ।
जहां प्रभु वीर सुहावे ॥
देशना अमृत प्रभु वरसावे,
पाप पुण्य का फल फरमावे ।
संघ सुने शुद्ध भावे ॥
कार्तक मावस स्वाति थावे,
कर्म सर्व प्रभु वीर खपावे ।
परमानंद पद पावे ॥
भाव उद्योत भरत उठ जावे,
द्रव्य उद्योत दीपक प्रगटावे ।
दीवाली मह गावे ॥३॥
सम्यक् दृष्टि सुर सुर-नारी,
शासन रक्षा के अधिकारी ।
संघ सकल हितकारी ॥
कीजो शांति अशांति निवारी,
जिन शासन मंगल जयकारी ।
भव जल पार उतारी ॥

तप गच्छ गगन प्रकाशनकारी,

श्री विजयानंद सूरि बलिहारी ।

वल्लभ तस पटधारी ॥

संवत् दोय हजारें चारी,

दीवाली दिन स्तुति उच्चारी ।

अमृतसर मनोहारी ॥४॥

चाल विमलगिरि सहुतीर्थ राजा, जंडियाला गुरु (पंजाब)

जिन मंदिर स्तुतिः—

जग चिन्तामणि जगदाधारी, वीतराग शंकर शिवकारी, देवाधिदेव निहारी । ब्रह्मा विष्णु बुद्ध अवतारी, तीर्थंकर सर्वज्ञ जितारी निरंजन निराकारी ॥ आदीश्वर आदि करतारी, धर्म-धुरंधर आदि विचारी युगलाधर्म निवारी । नाभिनंदन ऋषभ जुहारी, कीजे पूजा अष्ट प्रकारी शुभ भावे नर—नारी ॥१॥ शान्तिनाथ शान्ति करतारी, धर्मनाथ प्रभुधर्म दातारी सोहे मूल गंभारी । मल्लीनाथ प्रभु

बैठक सारी दोपासे शान्ति बलिहारी दर्शन आनंदकारी ॥ सुविधि पद्म महावीर दातारी, पार्श्वनाथ महा उपकारी शान्ति साताकारी । संभवनाथ चंदा प्रभु भारी, भवसागर से पार उतारी पूजा करे नर—नारी ॥२॥ अंग उपांग एकादश बारी, छेद ग्रंथ षट् मन में धारी मूल सूत्र हैं चारी । पयन्ने दश अनुयोगद्वारी, नंदी सूत्र अनुपमधारी आगम संख्या सारी ॥ चूर्णि भाष्य टीका अनुसारी, निर्युक्ति जिन वाणी उच्चारी स्याद्वाद जयकारी । सातों नय निक्षेपा चारी, माने भवि निश्चय व्यवहारी समकितवंत नर—नारी ॥३॥ नगर जंडियाला मंदिर भारी, गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी सारी माणी भद्र हितकारी । विक्रम सम्वत् दोय हजारी, मास रहे आनंदे चारी भाई दूज शनिवारी ॥ विजयानंद सूरि पद धारी, आत्माराम गुरु बलिहारी तपगच्छ शोभाकारी । तास

पटोधर आनंदकारी, आत्म लक्ष्मी हर्ष अपारी
नमे वल्लभ नर–नारी ॥ ४ ॥

श्री रायकोट मंडन

श्री सुमति नाथ स्तुतिः–

रायकोट मंदिर अतिसुंदर, सुमति नाथ जिन चंदा जी–श्री सुपार्श्व जिन सुविधि नाथ प्रभु पूजो आनंद कंदा जी। आगम वाणी भवी मन मानी, स्याद्वाद नय नंदा जी। तुंवरु देव देवी महाकाली वल्लभ संघ आनंदा जी ॥ १ ॥

श्री सिद्धचक्र जी की स्तुतिः–

(तर्ज़–विमल गिरि सहुतीर्थ राजा)

सिद्धचक्र महिमा अति भारी,
इन्दभूति गणधर उच्चारी।
वीर वचन अनुसारी० ॥
नवपद मंगल अति सुखकारी,
और नहीं इस सम दुःख हारी।
जिम मंत्रे नवकारी० ॥

तीर्थों में शत्रुंजय भारी,
देवों में अरिहंत दातारी।
गुण गण के भंडारी० ॥
विजयानन्द सूरि जयकारी,
आराधे भावे नर–नारी।
सिद्धचक्र बलिहारी ॥१॥
प्रथम पदे अरिहंत विचारी,
अष्टादश दूषणों को निवारी।
द्वादश गुण अवधारी ॥
दूजे पदा सिद्ध अड गुणधारी,
अष्ट करम को दूर निवारी।
अष्टमी गति के विहारी ॥
तीजे सूरि छत्तीस गुणधारी,
चौथे पाठकयण बीसधारी।
जिनशासन आधारी ॥
पंचवें पद साधु सहकारी,
सत्तावीस गुण के भंडारी।
परमेष्ठि अधिकारी ॥२॥

दर्शन ज्ञान चारित्र सुहावे,
तप पद मिलि नवपद ए कहावे ।
आराधे भविभावे ॥

षड् सठ एकावन गुण गावे,
सीत्तेर द्वादश गुण को मिलावे ।
भवि जन आनन्द पावे ॥

गुण सम लोगस्स गुणणु गावे,
नोकार वाली वीस गणावे ।
आंबेल नव करेभावे ॥

श्रीपाल मयणा चरित्र सुनावे,
इम एक ओली पूरण थावे ।
नव ओली फरमावे ॥३॥

॥ राग—सोहणी ॥

करता नहीं जिनका भजन, भव पार कैसे पावेगा ॥ अं० ॥ देविंद वा नर इंद हो, मुनि इंद वा असुरिंद हो । भजन बिना जिनदेव के, नहीं मुक्ति के सुख पावेगा ॥ क० १ ॥ लंकापति रावन बली, निज हाथ में वीणा धरी । शुभ नाच

पृष्ठ ३७२

पंक्ति १३

अधिठायक विमलेश्वर जाणो, चक्केसरी देवी सहमानो ;

सम्यक् दृष्टि बखानो ।

संघ चतुर्विध सेवा ठाणो, देव देवी कर्तव्य पिछाणो ;

आनन्द मन में आणो ।

तपगच्छ गगन प्रकाशनभानो, विजयानन्द सूरी महाराणो;

हर्षं वल्लभ गानो ।

वेद मुनि युग युग्म ठाणो, सवत् वीर प्रभु निर्वाणो ॥४॥

अमृतसर (में) मणाणो ।

थावेगा ॥ क० ५ ॥

अथ सज्झायः—

जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंद सूरि (आत्माराम) जी महाराज कृत

यौवन धन थिर नहीं रेहनारे ॥ अंचली ॥

जो नजरे आवे, मध्य

नहीं मध्याने सो नहीं

थिर गेयन० ॥ १ ॥

वादर शरीर तम

जल तरङ्गवत चपला, क्यों बांधे मन आसे ॥ योवन० ॥ २ ॥ वल्लभ संग सुपनसी माया, इनमें रागहि कैसा । छिन में उड़े अर्कतूल ज्यों योवन जग में ऐसा ॥ योवन० ॥ ३ ॥ चक्री हरी पुरन्दर राजे, मद माते रस मोहे । कौन देश में मरी पहुँचे, तिनको खवर न कोहे ॥ योवन० ॥ ४ ॥ जग माया में नहीं लोभावे, आतमराम सयाने । अजर अमर तूं सदा नित्य है, जिन धुनि यह सुनी काने ॥ योवन० ॥ ५ ॥

(राग सोरठा ॥ कुबजा ने जादु डारा ॥ एदेशी)

उरझायो आतम ज्ञानी, संसार दुखां की खानी ॥ उरझायो० अंचली० ॥ वेदपाठी मरी पाणज होवे, स्वामी सेवक पामी । ब्रह्मा कीट द्विजवर रासभ, नृप वर नरक ही गामी ॥ उर० ॥ १ ॥ सुरवर खर खर जगपति होवे, रङ्क राज विसरामी । जग नाटक में नटवत्

नाच्यो, कर नाना विध तानी ॥ उर० ॥ २ ॥ कौन गति में जीव न जावे, छोड़े नहीं कुण थानी । संसारी कर्म संगथी पूर्यो, कचवर कुटी जग नामी ॥ उर० ॥ ३ ॥ एक प्रदेश नहीं जग खाली, जनम मरण नहीं ठानी । पवन झकोरे पत्र गगन ज्यों उड़त फिरे जड़ कामी ॥ उर० ॥ ४ ॥ सत् चिद् आनन्द रूप संभारो, छोरो कुमत कुरानी । जिनवर भाषित मग चले चेतन, तो तूं आतम ज्ञानी ॥ उर० ॥ ५ ॥

आप स्वभाव की सज्झायः—

आप स्वभाव मेरे, अवंधु सदा मगन में रहना । जगत जीव है कर्माधीना, अचरज कछु न लीना ॥ आ० १ ॥ तुम नहीं केरा कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा । तेरा है सो तेरी पासे, अवर सभी अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥

वपु विनाशी तू अविनाशी, अव है इनका विलासी। वपु संग जव दूर निकासी, तव तुम शिव का वासी ॥ आ० ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए: तुम दुःख का दीसा। जव तुम इनको दूर करीसा, तव तुम जन का ईसा ॥ आ० ४ ॥ पर की आशा सदा निराशा, ए है जग जन पाशा। ते काटन कूं करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा ॥आ०५॥ कवहिक काजी, कवहिक पाजी, कवहिक हुआ अपभ्राजी। कवहिक जग में कीर्ति गाजी, सव पुद्गल की बाजी ॥ आ० ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी। कर्म कलंक कूं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ७ ॥

॥ इति स्तवन-स्तुत्यादि भागः समाप्तः ॥



॥ अथ श्रीनवस्मरण-सूत्राणि ॥

(अथ प्रथमं (१) नवकार स्मरणम्)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥
इति प्रथमं स्मरणं ॥ १ ॥

(अथ द्वितीयं (२) उवसग्गहरं स्मरणं)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-
घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-
आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ
जो सया मणुओ । तस्स गह रोग मारी,
दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो,
तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु
वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं (दोहग्गं)

॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपाय-वब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥

(अथ तृतीयं (३) संतिकर स्मरणं)

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं। समरामि भत्तपालग, निव्वाणी-गरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं संतिसामिपायाणं। झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं। सौँ ह्रीँ नमो सव्वोसहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा। गहदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया। वज्जंकुसि

चक्केसरि, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ
वइरुट्टा । अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसि-
आओ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महजक्ख,
तिमुह जक्खेस तुंवरु कुसुमो । मायंगो
विजयाजिअ, वंभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य
जक्खिदो । कूवर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास
मायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ चक्केसरि, अजिआ
दुरिआरि कालि महाकाली । अच्चुअ संता
जाला, सुतारयाऽसोयं सिरिवच्छा ॥ ९ ॥
चंडा विजयंकुसी, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ
धरणी । वइरुट्ट दत्त गंधारि, अंव पउमावई
सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तित्थरक्खण रया, अन्नेवि
सुरासुरी य चउहावि । वंतरजोइणी पमुहा,
कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिट्ठि
सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो ।

मज्झ त्रि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअ-महिमा ॥१२॥ इअ संतिनाहसम्म, दिट्ठिरक्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥

(अथ चतुर्थं (४) तिजयपहुत्त स्मरणं)

तिजय पहुत्तपयासय, अट्ठ महापाडि-हेरजुत्ताणं, समय क्खित्तठिआणं। सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो। नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा। गह भूअ रक्ख साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो। वाहिजलजलणहरिकरि, चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा। रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः। आलिहिय नाम गब्भं, चक्कं किर भव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वंजअंकुसिआ। चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महजाला माणवी वइरुट्ट तह य अच्छुता। माणसि महमाणसिआ, त्रिज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण-सयं। विविहरयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ६ ॥ चउतीस अइसय जुआ, अट्ठ महापाडिहेरकयसोहा। तित्थयरा गयमोहा, भाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंख-विद्दुम, मरगंयघणसन्निहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे, स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम, स्वाहा ॥ १२ ॥

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं। एगंतराइ गहभूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसय जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं। दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

(अथ पंचमं (५) नमिऊण स्मरणम्)

नमिऊण पणयसुरगण—चूडामणिकिरण-रंजिअं मुणिणो। चलणजुअलं महाभय—पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडियकर चरण नह मुह, निबुड्डनासा विवन्नलायन्ना। कुट्ठ-महारोगानल, फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणाराहण, सलिलंजलि सेयवुड्ढि-उच्छाहा। वणदवदड्ढा गिरिपा—यवव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे। संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविद-लिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं।

पसुजिण चलणजुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोगभीसण–फुरिआरुण नयण तरल जीहालं । उग्गभुअंगं नवजलय सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीड सरिसं, दूरपरिच्छूढविसम विसवेगा । तुह नामक्खर फुडसिद्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर–पुलिंद सद्दूलसद्दभीमासु भयविहुर वुन्नकायर–उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह! पणाम मत्तवावारा । ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरविआरियमुहं महाकायं । नहकुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणयससंभम-

परिथव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स । तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्डि उच्छाहं । महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न वि गणंति । जे तुम्ह चलण-जुअलं, मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा–भिघाय पविद्ध उद्धुय कवंधे । कुंतविणिभिन्न करिकलह-मुक्क सिक्कार पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धुररिउ–नरिंद निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पावपसमिण !, पासजिण ! तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहरचोरारि मइंद गय रण भयाइं । पासजिणनामसंकि–त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं । भवियजणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ रायभय जक्ख

रक्खस-कुसुमिणा दुस्सउण रिक्ख पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठासुरम्मि झाणाओ जो न संचलिओ । सुरनरकिन्नरजुवइहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारे, अट्टारस अक्खरेहिं जो मंतो । जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठ हिअएण। अट्टुत्तर सय वाहिभय-नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥ इति ॥

(अथ षष्ठं (६) अजित शान्ति स्मरणम्)

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंत-सव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय-मंगुलभावे, तेहं विउलतवनिम्मलसहावे ।

निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं । सया अजिअ संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिअ जिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम कित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं । अजिअं संति च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअं । अजिअमहमवि

अ, सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि–दिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम नित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्ति समाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ विच्छिन्न संथियं, थिरसरिच्छवच्छं मयगल लीलायमाण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं। हत्थि हत्थ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवरलक्खणोवचिअ सोम चारुरूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं! ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर, नरीसरो पढमं तओ

महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर निगम जणवयवई, बत्तीसा रायवर सहस्साणुयाय मग्गो। चउदसवर रयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवई, चुलसी हय गय रह सय सहस्ससामी, छण्णवइगामकोडिसामी आसी जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढओ। तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ इक्खाग! विदेह नरीसर! नरवसहा! मुणिवसहा! नवसारयससि सकलाणण! विगयतमा! विहुअरया!। अजिउत्तम! ते अगुणेहिं, महामुणि अमि अबला! विउल कुला! पणमामि ते भवभयमूरण! जगसरणा! मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद! हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम-लट्ठरूव! धंत रूप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल दंतपति!

संति ! सत्ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर !,
दित्त तेअवंद ! धेअ ! सव्वलोअ भाविअप्प-
भाव ! णेअ ! पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥
नारायओ ॥ विमल ससि कलाइरे अ-सोमं,
वितिमिर सूर कराइरे अ तेअं । तिअसवइ
गणाइरे अ रूवं, धरणिधर प्पवराइरे असारं
॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं,
सारीरे अ वले अजिअं । तव संजमे अ
अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥
भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं
नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसर-
यरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥
खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तम रय रहियं,
धीर जण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं । संति-
सुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संतिमहं महामुणिं
सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय

सिररइअंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं,
विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुअमहिअच्चिअं
बहुसो। अइरुग्गय सरय दिवायर समहिअ-
सप्पभं तवसा, गयणंगण वियरण समुइअ-
चारण वंदिअं सिरसा ॥ १६ ॥ किसलयमाला ॥
असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं।
देवकोडिसय संथुअं, समणसंघ परिवंदिअं
॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं।
अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसिअं ॥ आगया वरविमाण, दिव्व
कणग रह तुरय पहकर—सएहिं हुलिअं।
ससंभमोअरण खुभिअ लुलिअ चल कुंडलंगय
तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढओ ॥
जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता,
आयर भूसिअ संभम पिंडिय, सुट्ठु सुविम्हिअ
सव्वबलोघा। उत्तम कंचण रयण परूविअ,
भासुर भूसण भासुरिअंगा। गाय समोणय

भत्तिवसागय, पंजलि पेसिय सीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, राग दोस भय मोह वज्जिअं। देव दाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंसवहु गामिणिआहिं । पीण सोणि थण सालिणिआहिं; सकल कमल दल लोअणि-आहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभर विणमिय गायलआहिं; मणि कंचण पसिढिल-मेहल सोहिअ सोणितडाहिं । वरखिंखिणि णेउर सतिलय वलय विभूसणिआहिं; रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडाल-

एहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिंवी। अवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति–संनिविट्ठ–वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअ सव्व किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअ वंदिअयस्सा रिसिगण देवगणेहिं, तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तम सासणअस्सा, भत्ति वसागय पिंडिअयाहिं। देववरच्छरसा बहुआहिं, सुरवररइ गुण पंडि-अयाहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्द मीसए कए अ, सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीअ पायजाल घंटिआहिं, वलय मेहला कलाव नेउराभिराम सद्द मीसए कए अ। देवनट्टिआहिं हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं। वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं

तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं, पसंत सव्व पाव दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिया, झयवर मगर तरय सिरिवच्छ सुलंछणा । दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिया, सत्थिअ वसह सीह रह चक्क वरंकिया ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण धुअ सव्व पावया, सव्व लोअ हिअ मूल पावया । संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संतिजिण जुअलं । ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा ॥ तं बहु गुणप्पसायं मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ

अ परिसा वि अ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संति थयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुपन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

(अथ सप्तमं (७) भक्तामरस्तोत्र स्मरणं)

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय-

तत्त्वबोधा-दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ !, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या। कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश ! कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान् माम् । यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥ त्वत्संस्तवेन

भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीर-भाजाम् । आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेदमारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः । तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, ? भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशिकर-द्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः

परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललाम-भूत ! । तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ! । बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य ?, यद्वासरे भवति पांडुपलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति । ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर ! नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् । कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,

स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति । नांभोधरो-दरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोह-महांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतय-ज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः? ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणा-कुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं

त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस-मादित्यवर्णममलं तपसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र ! पंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण-मीश्वरमनंतमनंगकेतुम् । योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् । धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै

स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! । दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरुसंश्रितमुन्मयूख-माभाति रूपममलं भवतो-नितांतम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशांकशुचिनिर्झर-वारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् । मुक्ता-फलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकज-पुंजकांति-पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ । पादौ

पदानि तव यत्र जिनेंद्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य। यादृक्प्रभादिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूलमत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम्। ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्तमुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः। बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्। विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम्। आक्रामति क्रमयुगेन

निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद- माजौ वलं वलवतामपि भूपतीनाम् । उद्य- द्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगज- शोणितवारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकज- वनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—पाठीनपीठभयदोल्वण- वाडवाग्नौ । रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशा- मुपगताश्च्युतजीविताशाः । त्वत्पादपङ्कज- रजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज- तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद कण्ठमुरुशृङ्खल वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः

स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥४२॥ मत्तद्विपेंद्र-मृगराजदवानलाऽहि,—संग्रामवारिधिमहोदर-बंधनोत्थम्। तस्याशुनाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव, जिनेंद्र!, गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥ इति भक्तामरनामकं सप्तमंस्मरणम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमं (८) कल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीता-भयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम्। संसारसागरनिम-ज्जदशेषजंतु,—पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव

वर्णयितुं स्वरुप—मस्मादृशाः कथमधीश! भवंत्यधीशाः। धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत। कल्पांतवां-न्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा—न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसद-संख्यगुणाकरस्य। बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः? ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश!। वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः!। जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंतिवा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्ताम-चिंत्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते, नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगंति। तीव्रातपोपहत-पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि

विभो ! शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः । सद्यो भुजंगममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र ! । रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन! कथं भविनां? त एव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनमंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुज पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन ?. चिंत्यो न हंत! महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि

विभो! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः? ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी? ॥१३॥ त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयंति हृदयाम्बुजकोशदेशे। पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति। तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्? । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! भवतीह भवत्प्रभावः। पानीयमप्यमृतमित्यनु-चिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति?

॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समही-रुहोऽपि, किं वा विवोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १६ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गंभीरहृदयो-दधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदी-रयन्ति । पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु

शुक्लभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वल-हेमरत्न,-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै—श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छवि रशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भोः! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयाति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ! तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः । मुक्ताकलापकलितोछ्वसितात-पत्र—व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रताप-यशसामिव संचयेन । माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि

॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान्। पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्। युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो! यदसि कर्म विपाक-शून्यः ॥२६॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक! दुर्ग-तस्त्वं, किं वाऽत्तरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!। अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भार-संभृतनभांसि रजांसि रोषा—दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि। छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो, ग्रस्तास्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम्। दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन!

दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृतिमर्त्यमुंड—प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसंध्यमाराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,

प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि, महितोऽपि निरीक्षितोऽपि नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबांध ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !, कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! । भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य–मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !, संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि

संततिसंचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र !, सांद्रोल्लसत्पुलकंचुकिताङ्ग-भागाः । त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद्र ! प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा। ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याण-मन्दिरनामकं अष्टमंस्मरणम् ॥

अथ बृहच्छांतिस्तवनामकं नवमं (९) स्मरणं प्रारभ्यते

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवगुरोरार्हतां भक्ति-भाजः । तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेश विध्वंस हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोकाः ! इह हि भरतैरावतविदेह-संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपा-

नंतरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः, सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवन्तोर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोक-पूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः । ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शान्ति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांता

जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति मति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधाविद्यासाधनप्रवेशन–निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवीवैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारक-बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः स-लोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवाऽऽदित्य-स्कंदविनायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्रामनगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां

अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजन-संबंधिबंधुवर्गसहिता नित्यं चाऽऽमोदप्रमोद-कारिणः अस्मिँश्च भूमंडलायतननिवासिसाधु-साध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःख-दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि । शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट–ग्रहगति-दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंप–न्नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जन-पदराजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुर-

मुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥
श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य
शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्री-
राजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज सन्निवेशानां
शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु,
श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य
शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ
श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्ति प्रतिष्ठा-
यात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा
कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः।
स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः
पुष्पवस्त्रचंदनाऽऽभरणालंकृतःपुष्पमालां कंठे
कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके
दातव्यमिति । नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं,
सृजंति गायंति च मंगलानि । स्तोत्राणि
गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि
जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः,

परहितनिरता भवंतु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इति बृहच्छान्तिनामकं नवमं स्मरणं समाप्तम्।

अथ श्रीग्रहशांतिस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्। ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यै-

स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्डश्चन्द्र-श्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानन्तधर्मारा:, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभा-जितसुपार्श्वाश्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसश्चैषु गीष्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथे भवेद् राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लग्ने च राशौ च, पीडयन्ति यदा ग्रहाः । तदा सम्पूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ नव-कोष्ठकमालेख्यं, मण्डलं चतुरस्रकम् । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या, वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥ ८ ॥ मध्ये हि भास्करः स्थाप्यः,

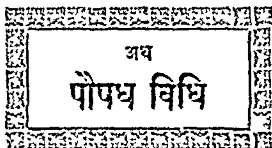
पूर्वदक्षिणतः शशी । दक्षिणस्यां धरासूनुर्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ ९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्वस्यां भृगुनन्दनः । पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ १० ॥ पश्चिमोत्तरतः केतुरिति स्थाप्याः क्रमाद् ग्रहाः । वह्नौ स्यादपराऽऽग्नेय्यां, ईशान्यां गुरुः सदा बुधः ॥ ११ ॥ आदित्यसोमभौमाख्याः शुक्रः शनैश्चरो राहुः । केतु प्रमुखाः

॥ १५ ॥ एवं यथानामकृताभिषेकैरालेपनैर्धूप-
नपूजनैश्च । फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना
ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु ॥ १६ ॥ साधुभ्यो
दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये ।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥१७॥
भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरिता
॥१८॥ ॥ इति श्रीग्रहशान्तिस्तोत्रं समाप्तम् ॥



॥ ॐ ॥

॥ वन्दे श्री वीरमानंदम् वल्लभ सद्गुरुं सदा ॥



पौषध किसे कहते हैं ?

धर्म को पुष्ट करे सो पौषध ।

श्रावक के बारह (१२) व्रतों में से यह ग्यारहवां (११) व्रत है । अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व तिथियों में चार पहर-दिन का अथवा आठ पहर-दिन रात (अहोरात) का तथा रात के चार पहर का पौषध होता है ।

पौषध के चार भेद होते हैं ।

(१) आहार पौषध-उपवास, आयंबिल, नीवी, एकासना करना ।

(२) शरीर सत्कार पौषध-स्नान, विलेपन आदि विभूषा न करना ।

(३) ब्रह्मचर्य पौषध–मैथुन का त्याग, ब्रह्मचर्य पालना।

(४) अव्यापार पौषध–घर और बाहर का सावद्य (पापकारी) व्यापार-कार्य का त्याग करना।

इस चार प्रकार के पौषध में देश (थोड़ा) और सर्व (संपूर्ण) के दो दो भेद होते हैं, जिससे मुख्य आठ भेद होजाते हैं, संयोगी के अस्सी (८०) भेद होते हैं। परन्तु पूर्वाचार्यों की परंपरा से वर्तमान समय में केवल आहार पौषध में ही देश और सर्व का भेद है, अर्थात् चउविहार उपवास करना सो "सर्व" से और तिविहार उपवास, आयंबिल नीवी, एकासना करना हो तो देश से जानना। बाकी तीन प्रकार के पौषध तो "सर्व" से ही हो सकते हैं। रात के चार पहर का पौषध करने वाले को भी उस दिन, उपवास, आयंबिल, नीवी, एकासना, इनमें से कुछ भी तप करना चाहिये।

पौषध करने वालों के लिए उपयोगी बातें।

१. पौषध करने वालों को राई प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। पौषध उच्चर कर (लेकर) के भी राई प्रतिक्रमण कर सकता है। परन्तु यह ध्यान में रहे कि पडिलेहण के पहले प्रतिक्रमण कर लेना।

२. विधि जानने वाले तो राई प्रतिक्रमण करके साथ ही पौषध उच्चर के (लेके) पडिलेहण, देववंदनादि करते हैं।

३. पौषध सूर्योदय होने से पहले लेना चाहिये।

४. वर्तमान समय में यह प्रवृत्ति देखने में आती है कि श्री प्रभु की पूजा करके पौषध लेते हैं। इस भावना वालों को जल्दी प्रभु पूजा का लाभ लेके समया-नुसार (वक्त पर) पौषध लेना (उचरना) चाहिये। देरी से लेने में अतिचार दोष लगता है।

५.

दिन के पौषध में उपयोगी उपकरण	रात के पौषध में उपयोगी उपकरण
१–आसन—ऊन का	दिन के उपकरणों के उपरांत
२–मुहपत्ति	
३–चरवला	१–संथारिया, ऊन का आसन रात को सोते समय बिछाने के लिए।
४–शुद्ध धोती	
५–उत्तरासन, दुपट्टा	२–उत्तरपट्टा, संथारिये के ऊपर बिछाने के लिए सूत का वस्त्र।
६–सूत का कंदोरा (नाड़ी)	
७–देहचिंता करने के समय बदलने के लिए धोती या कोई दूसरा वस्त्र।	३–सर्दी का मौसम हो तो ओढ़ने के लिए

८--ज़रूरत हो तो नाकादि साफ़ करने के लिए वस्त्र (रूमाल)

९--कामली

१०--शुद्धि के लिए गर्म पानी ।

कम्बली, गर्मी या वर्षाऋतु हो तो समयानुसार कम्बली या चादर आदि कोई वस्त्र ।

४-कुंडल कानों में डालने के लिए रूई (रात को सोते समय) ।

५--डंडासण. रात को ज़मीन पूंज के चलने के लिए, यदि डंडासण न हो तो चरवले से काम चला लेना योग्य है ।

६--शौच के लिए चूना डाला हुआ पानी ।

और भी जिस किसी उपयोगी वस्तु की ज़रूरत हो वह ले लेनी चाहिये । पौषध में यदि पानी वग़ैरह किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो किसी आदमी से याच (मांग) लेना चाहिये । बहिनों के उपयोगी उपकरण बहनों (बाइयों) को ले लेना चाहिये ।

६-कदाचित् देरी हो जाने के कारण स्वयं पौषध उच्चर लिया (ले लिया) हो तो भी गुरु महाराज विद्यमान हों तो फिर से उन के पास पौषध उच्चराना चाहिये।

७-पडिलेहण दो पाओं पर बैठ कर मौनता पूर्वक करनी चाहिये, जीवजन्तु प्रकाश में बैठकर बराबर देखना, और धोती बदलते समय उत्तरासन, (दुपट्टा) न पहरना किन्तु मात्रा, (पेशाब) करने जाने का वस्त्र पहनना चाहिये।

८-काजा (परिमार्जन) बराबर यत्नपूर्वक लेने से एक आयंबिल का लाभ होता है।

९-पौषध में जिन मन्दिर में अवश्य जाना चाहिये, जब जावे तब प्रथम अग्रद्वार पर अन्य व्यापार त्यागरूप "निस्सिही" मध्य में जिनमन्दिर की प्रदक्षिणा देने आदि व्यापार का त्यागरूप "निस्सिही" और चैत्यवन्दन के प्रारम्भ में अन्य सर्व क्रिया का त्यागरूप "निस्सिही" कहना चाहिये।

१०-प्रभु दर्शन विधि करके मन्दिर से निकलने समय "आवस्सही" कहना चाहिये।

११-उपाश्रय में प्रवेश करते समय "निस्सिही" और बाहर जाते समय "आवस्सही" कहना चाहिये।

१२-गुरुदेव की उपस्थिति हो तो सब गुरुदेवों को विधि-पूर्वक वन्दन करना चाहिये।

१३-चौमासे में मकान तीन वक्त पडिलेहना चाहिये।

सिर पर कम्बली ओढ़ने का काल।

आषाढ़ शुदि पूनम से कार्त्तिक शुदि चौदस तक सूर्योदय से ६ घड़ी तक (चौवीस मिनिट की एक घड़ी गिनी जाती है) और शाम को सूर्यास्त के पहिले ६ घड़ी तक। और कार्त्तिक सुदि पूनम से फाल्गुण सुदि १४ तक सूर्योदय से चार घड़ी और सूर्यास्त के पहिले चार घड़ी और फाल्गुण सुदी पूनम से सूर्योदय से दो घड़ी तथा सूर्यास्त से पहिले दो घड़ी का काल होता है। अर्थात् सूर्यास्त से दो, चार, छः, घड़ी पूर्व से लेकर सूर्योदय के दो, चार, छः घड़ी बाद तक कामली लेने का काल गिना जाता है, इस लिए ऊपर लिखे समय तक और रात्रि को जब मकान से बाहर निकलना हो तब सिर पर ऊन की कांबली ओढ़ कर निकलना चाहिये।

अचित्त (गर्म) पानी का काल।

आषाढ़ सुदि पूनम से कार्त्तिक सुदि १४ तक गरम पानी जब चूल्हे से उतरे उस समय से तीन प्रहर तक। कार्त्तिक सुदि पूनम से फाल्गुण सुदि १४, चार प्रहर

तक। फाल्गुण सुदि पूनम से आषाढ़ सुदि १४ तक पाँच पहर का काल होता है। अर्थात् गरम पानी चूल्हे से उतरने के समय से इतने समय तक अचित्त रहता है, इसके उपरांत रहे तो सचित (कच्चा) हो जाता है। इस लिए आषाढ़ शुदि पूनम से लेकर कार्तिक शुदि १४ तक तीन बजे, बाकी रहे हुए प्रासुक पानी में चुटकी चूना डाल देना चाहिये और शुद्धि (शौचादि) के उपयोग में ले लेना चाहिये।

तीन बजे के बाद पीने के लिये दश बजे का गरम किया हुआ पानी उपयोग में लाना चाहिए। शाम को पानी पी लेने पर बाकी रहे हुए पानी में भी चुटकी चूना गिरा देना चाहिये। पौषध में गरम पानी का काल पूरा हो जाने पर उसमें चूना न डाले और वैसा ही रह जाय तो १० उपवास का प्रायश्चित्त आता है।

मुहपत्ति पडिलेहणां के ५० बोल।

१-सूत्र अर्थ तत्त्व करी सद्दहूँ (दृष्टि पडिलेहणा के) २-समकित मोहनी। ३-मिश्र मोहनी। ४-मिथ्यात्व मोहनी परिहरूं। ५-काम राग। ६-स्नेह राग। ७-दृष्टि राग परिहरूं। (यह ६ बोल मुहपत्ति खडि करते करते कहना)

८-सुदेव। ९-सुगुरु। १०-सुधर्म, आदरूं।
११-कुदेव। १२-कुगुरु। १३-कुधर्म, परिहरूं।

१४-ज्ञान । १५-दर्शन । १६-चारित्र आदरूं ।

१७-ज्ञान विराधना । १८-दर्शन विराधना । १९-चारित्र विराधना परिहरूं । २०-मन गुप्ति । २१-वचन गुप्ति । २२-काय गुप्ति आदरूं । २३-मनदंड । २४-वचन दंड । २५-काय दंड परिहरूं ।

(यह १८ बोल बायें हाथ की हथेली पर कहना । यहाँ तक के पच्चीस बोल मुहपत्ति के पडिलेहने के हैं) । नीचे लिखे पच्चीस बोल शरीर पडिलेहने के हैं ।

२६-हास्य । २७-रति । २८-अरति परिहरूं (बांई भुजा (हाथ) पर) । २९-भय । ३०-शोक । ३१-दुगंच्छा परिहरूं (दांई भुजा (हाथ) पर) । ३२-कृष्ण लेश्या । ३३-नील लेश्या । ३४-कापोत लेश्या परिहरूं (मस्तक पर) । ३५-रस गारव । ३६-ऋद्धि गारव । ३७-साता गारव परिहरूं (मुख पर) । ३८-मायाशल्य । ३९-नियाणा-शल्य । ४०-मिथ्यात्वशल्य परिहरूं (हृदय पर) । ४१-क्रोध । ४२-मान परिहरूं (बांई भुजा के पीछे) । ४३-माया । ४४-लोभ परिहरूं (दाईं भुजा के पीछे) । ४५–पृथ्वीकाय । ४६–अप्काय । ४७–तेउकाय की रक्षा करूं (बायें पैर) । ४८-वाउकाय । ४९-वनस्पतिकाय । ५०-त्रसकाय की जयणा (बचाव) करूं (दायें पैर पर) ।

इन पचीस बोलों का विशेष ज्ञान जानकार से प्राप्त कर लेना। स्त्रियों को ३ लेश्या, ३ शल्य, ४ कषाय-इन १० बोलों को छोड़ कर बाकी के ४० बोल बोलने चाहियें।

सामायिक के बत्तीस दोषों का निरूपण।

(मन के १० दोष)

१. अविवेक दोष-निर्विवेकता शैली से सामायिक करे।

२. यशोवांछा दोष-सामायिक करके यश (कीर्ति) की इच्छा रक्खे।

३. धनवांछा दोष-सामायिक करके धन की इच्छा करे।

४. गर्वदोष-सामायिक करके मन में गर्व (अभिमान) करे।

५. भयदोष-लोगों के अथवा राज्य दण्ड आदि के भय से सामायिक करे।

६. निदान दोष-नियाणा करे यानि इस सामायिक के फल से मुझे अमुक वस्तु की प्राप्ति होवे।

७. संशय दोष-सामायिक का फल मुझे मिलेगा या नहीं।

८. कषाय दोष-सामायिक में कषाय करे।

९. अविनय दोष-विनय पूर्वक सामायिक न करे।

१०. अबहुमान दोष—बहुमान पूर्वक (आदर सहित) सामायिक न करे ।

वचन के (१०) दोषः—

१. कुबोल (कुवचन) दोष-सामायिक में खराब वचन बोले।
२. सहसात्कार दोष—सामायिक में बिना विचार बोले।
३. असदारोपण दोष—सामायिक में खोटी मति देवे अर्थात् झूठी सलाह दे ।
४. निरपेक्ष वाक्य दोष—सामायिक में शास्त्रमर्यादा से न बोले ।
५. संक्षेप दोष—सामायिक में पाठ संक्षेप से अर्थात् अक्षर-पद छोड़ कर बोले, शुद्ध न बोले ।
६. कलह दोष—सामायिक में क्लेश (झगड़ा) करे ।
७. विकथा दोष—सामायिक में (देश कथा आदि) खोटी कथायें करे ।
८. हास्य दोष—सामायिक में हंसी दिल्लगी करे ।
९. अशुद्ध पाठ दोष—सामायिक में अशुद्ध (गलत) पाठ पढ़े ।
१०. मुनमुन (अस्फुट) दोष-सामायिक में स्पष्टतया न बोले।

काया के १२ दोषः—

१. अयोग्यासन दोष—सामायिक में पैर पर पैर चढ़ाकर बैठे।

२. चलासन दोष—सामायिक में आसन स्थिर न रखे, इधर उधर घूमता रहे।

३. चल दृष्टि दोष-सामायिक में चपलता से इधर-उधर देखता रहे।

४. सावद्य क्रिया दोष—सामायिक में पापकारी क्रिया करे।

५. आलंबन दोष—सामायिक में भीत (दीवार) आदि का सहारा लेकर बैठे।

६. आकुञ्चन प्रसारण दोष—सामायिक में बिना प्रयोजन हाथ पाँव पसारता रहे।

७. आलस दोष—सामायिक में आलस करना अंग आदि मरोड़ना।

८. मोटन दोष—सामायिक में अंगुली वगैरह के कड़ाके निकालना।

९. मल दोष--सामायिक में मैल उतारना खुजली करना।

१०. निषमासन दोष—गले में हाथ देकर बैठे।

११. निद्रा दोष—सामायिक में नींद लेते रहना।

१२. वस्त्र संकोच दोष -सामायिक में कपड़े से सारे शरीर को ढक देना।

इन बत्तीस दोषों को टाल कर सामायिक करना चाहिए।

पौषध के १८ दूषण—दोषः—

१. बिना पौषध वाले का लाया हुआ जल पीवे।

२. पौषध के लिए सरस भोजन करे।

३. पौषध के अगले दिन विविध-प्रकार का सरस भोजन करे।

४. पौषध के निमित्त या पौषध के अगले दिन विभूषा करे।

५. पौषध के निमित्त कपड़े धुलवावे।

६. पौषध के निमित्त आभूषण (गहने) घड़वा कर पहने।

७. पौषध के निमित्त कपड़े रंगवा कर पहने।

८. पौषध में शरीर पर से मैल उतारे।

९. पौषध में विना काल निद्रा लेवे अर्थात् दिन में शयन करे।

१०. पौषध में देश कथा करे।

११. पौषध में भक्त कथा करे।

१२. पौषध में स्त्री कथा करे।

१३. पौषध मे राज-कथा करे।

१४. पौषध में लघुशंका (पेशाब) दीर्घ शंका (मलत्याग) भूमि को पूंजे बिना करे।

१५. पौषध में परनिन्दा करे।

१६. पौषध में माता, पिता, भाई, भगिनी, स्त्री, आदि से सांसारिक वार्तालाप करे।

१७. पौषध मे चोर की कथा करे।

१८. पौषध में स्त्री के अङ्गोपाङ्ग देखे।

श्रावकों को पौषध में ये १८ दूषण अवश्य टालने चाहिएँ।

पौषध संबंधी पांच अतिचारः—

१. शय्या--सन्थारे की जगह अच्छी तरह दृष्टि से भी बराबर देखे नहीं, देखे तो ऐसा वैसा ही देखे। यह प्रथम अतिचार है।

२. संथारे-आसन--की जगह अच्छी तरह प्रमार्जे नहीं, प्रमार्जे तो जैसे-तैसे प्रमार्जे, यह दूसरा अतिचार है।

३. लघुनीति, मात्रा दीर्घ नीति- (स्थंडिल) परगोने

(त्यागने) की भूमि अच्छी तरह देखे नहीं, देखे तो जैसे-तैसे देखे, यह तीसरा अतिचार है।

४. लघुनीति-दीर्घ नीति-परगोने (त्यागने) की भूमि तथा पौषधशाला की भूमि अच्छी तरह प्रमार्जे नहीं, प्रमार्जे तो जैसे तैसे प्रमार्जे यह चौथा अतिचार है।

५. पौषध की क्रिया विधिपूर्वक सम्पूर्ण न करे। पारने की चिंता करे, घर जाकर करने के सावद्य कार्य चिंतन करे। और प्रथम लिखे पौषध के १८ दोष टाले नहीं तो पांचवाँ अतिचार है।

ये पांचों अतिचार टालने चाहियें।



॥ ॐ ॥

वन्दे श्रीवीरमानदम् वल्लभभद्रगुरुम् सदा

पौषध विधि

स्थापनाचार्य स्थापन करने की विधिः—

श्री गुरु महाराज का योग न हो और अपने पास स्थापनाचार्य भी न हो तो नवकार वाली (माला) या धार्मिक पुस्तकादि की स्थापना करके पौषध विधि कर सकते हैं।

अर्थात्-श्रावक, श्राविका पौषध लेने के समय शुद्ध वस्त्र पहन कर, चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर जप माला (नवकार वाली) रख कर, ज़मीन पूंज कर, आसन बिछा कर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ कर बायें हाथ में मुहपत्ति ले मुख के आगे रख कर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुये पुस्तक आदि की स्थापना के सन्मुख करके नवकार और पंचिंदिय पढ़ कर स्थापनाचार्य स्थापन करे।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं।

नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविहबंभचेर गुत्तिधरो ।
चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥
पंचमहव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो ।
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥२॥

इस प्रकार स्थापनाचार्य स्थापन करके पौषध लेने की विधि नीचे लिखे अनुसार करें ।

पौषध लेने की विधि:-

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरिया वहियं पडिक्कमामि इच्छं ! इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,

संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ-ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्जमे काउस्सग्गो ॥३॥ जावअरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥ (एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करे)

(काउस्सग्ग पार कर)*

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि

* नमो अरिहंताणं बोल कर काउस्सग्ग पारना चाहिये ।

॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय, वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुहपत्ति पडिलेहुँ ? इच्छं, (कह कर मुहपत्ति पडिलेह के) इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह संदिसाहुँ ? इच्छं ? इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। पोसह ठाऊं ? इच्छं। (दोनों हाथ जोड़ कर एक नवकार पढ़ कर) इच्छाकारी भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावो जी, (अगर साधु महाराज होवें तो उनके मुखारविंद से उच्चरावें अथवा अपने से पहले किसी ने

पौषध लिया हो तो उनसे उच्चरावे, न लिया हो तो अपने आप पोसह दंडक का पाठ उच्चारण करे।

पोसह दंडक का पाठ।

करेमि भंते पोसह आहार पोसहं देसओसव्वओ, सरीरसकार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ। अव्वावार पोसहं सव्वओ चउव्विहे पोसहं ठामि जाव* दिवस पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहूँ? इच्छं। 'मुहपत्ति पडिलेह कर 'इच्छामि खमासमणो' वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुँ? इच्छं। इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउ? इच्छं। (दो हाथ जोडकर

* केवल दिन का पोसह लेना हो तो जाव दिवस और अहो रात (दिन रात) का लेना हो तो जाव अहो रत्त, केवल रात का ही पोसह लेना हो तो जावशेष दिवस रत्त कहना चाहिये।

एक नवकार गिन कर) इच्छकारि भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी। साधु महाराज हों तो उनसे, या जिसने पहले पौषध ली हो उससे उच्चरावे, न हों तो स्वयं पढ़े।

करेमि भंते का पाठ।

करेमि भंते सम्मायियं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव पोसहं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाहुँ? इच्छं। इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाउं? इच्छं। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूँ? इच्छं। कह कर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गिन कर इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं संदिसाहुँ ? इच्छं । इच्छामि खमासमणो ? वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं करूँ ? इच्छं ।

प्रातःकाल की पडिलेहण विधिः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण करूँ ?* इच्छं ।'(कह कर) मुहपत्ति, चरवला, आसन, धोती, सूत का कंदोरा (तागडी), इन पांच की पडिलेहण करनी। (मुहपत्ति ५०* बोल से, चरवला १० बोल से, आसन-कटासणा-१५ बोल से, सूत का कंदोरा १० बोल से और धोती

*पौषध लेने के पहले घर अथवा उपाश्रय में पडिलेहण किया हो तो उसको यहां और आसन वस्त्रादि मुहपत्ति संबंधी आदेश के समय एकमात्र मुहपत्ति का पडिलेहण करना और आदेश मांगना। दूसरे वस्त्रों का पडिलेहन न करना।

*मुहपत्ति के ५० बोल पृष्ठ ४२७ पर लिखे हैं। चरवले आदि के बोल हों तो ५० में से प्रसंग के अनुसार करना। स्त्री को कपाल के हृदय के और दोनों भुजा के पडिलेहणे के २० बोल वर्जित (छोड़) करके बाकी के ४० बोल से मुहपत्ति पडिलेहनी चाहिए।

२५ बोल से पडिलेहणा) फिर इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए-विराहणाए, गमणाऽऽगमणे, पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कडा, संताणा, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, संक्रमणे, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त करणेणं ।

विसोही-करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण-ऽट्ठाए-ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥२॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । ॥३॥ जाव अरिहंताणं

भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(यहां एक लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार है)।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडि-

लेहावो जी।* कह कर बड़े का एक वस्त्र (उत्तरासण) पडिलेहणा । (खमासमण देकर जहां लिखा हो वहां इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि—यह सारा पाठ बोल कर खमासमण देना) पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? इच्छं कह कर मुहपत्ति पडिलेहना। फिर इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि संदिसाहुँ इच्छं, फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहुँ । इच्छं। कह कर पहले पांच वानों की पडिलेहणा करते बाकी

---

*यह आदेश स्थापनाचार्य पडिलेहण संबंधी है। अर्थात् उपाश्रय के या अपने स्थापनाचार्य हों तो उनको १३ बोल से पडिलेहना, समुदाय में से कोई जानकार व्रतधारी श्रावक हो वह पडिलेहे। यदि माला पुस्तक आदि के स्थापित स्थापनाचार्य हों तो उनका उत्थापन करके फिर से स्थापन करके उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं का आदेश मांग लेना चाहिये, श्री गुरुदेव विराजमान हों तो उनके पडिलेहे हुए स्थापनाचार्य के समक्ष आदेश लेना चाहिये।

नीचे लिखे १३ बोलों से स्थापनाचार्य पडिलेहना चाहिये:—
१—शुद्ध स्वरूप के धारक गुरु, २—ज्ञानमय, ३—दर्शनमय, ४—चारित्रमय, ५—शुद्ध श्रद्धामय, ६—शुद्ध प्ररूपणामय, ७—शुद्ध फरसनामय, ८—पंचाचार पाले, ९—पंचचार पलावे, १०—पंचाचार पालते को अनुमोदे, ११—मनगुप्ति, १२—वचन गुप्ति, १३—काय गुप्ति से गुप्त।

रहे हुए सब वस्त्रों की २५, २५ बोल से पडिलेहणा करनी।

काजा लेने की विधिः—

फिर डंडासन (बहुत से हों तो उनमें से कोई एक जन) याच कर चरवले से उसको पडिलेह कर पृ० ४३६ पर से इरियावहियं पडिकम कर। (जहां इरियावही पडिकम कर लिखा हो वहां खमासमण, इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ ऊससिएणं, पढ़ के एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करके लोगस्स पढ़ना)

काजा लेना कचरा-(कूड़ा लेना)। लेकर इकट्ठा करके उसमें जीव, जन्तु देखना, कोई जीव निकले तो उसको यत्नपूर्वक ठिकाने सर रखना और काजा जीव-जन्तु, वनस्पति आदि रहित स्थान पर जाकर "अणुजाणह जस्सुग्गह, अणुजाणह जस्सुग्गह, अणुजाणह जस्सुग्गह"— कह कर परठवना, (यत्न पूर्वक डाल देना)। पीछे तीन बार वोसिरे, वोसिरे, वोसिरे कहना और फिर इरियावही पडिक्कमणा, पृ० ४३६ के अनुसार।

पीछे मूल स्थान पर आकर देववंदन करना, समुदाय हो तो समुदाय के साथ करना।

देववंदन विधिः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्-मामि ? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे—ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कड़ा, संताणा, संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ, ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोही-करणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेल संचालेहिं,

सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार के उच्च स्वर से लोगस्स पढ़े) ।

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईच । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच मल्लिं वंदे मुणिसुव्वय नमि जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला, पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु, निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

यह पाठ बोल कर कंधे पर उत्तरासन डाल कर

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्य-वंदन करूँ ? इच्छं—

सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त्त मेघो,
दुरिततिमिर भानुः कल्प वृक्षोपमानः ।
भवजल-निधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः ॥ १ ॥

विमलगिरि वर सयल अघहर भविकजन मनरंजनो,
निजरूपधारी पापटारी, आदिजिन मद-भंजनो ।
जग-जीव तारे भरम फारे सयल अरिदल गंजनो,
पुंडरीक गिरिवर शृङ्ग शोभे, आदिनाथ निरंजनो ॥ १ ॥
अज अमर अचल आनंद रूपी, जन्म मरण विहंडनो,
सुर असुर गावे भक्ति भावे, विमलगिरि जग मंडनो ।
पुंडरीक, गणपति, राम, पांडव, आदिले बहु मुनिवरा,
जिहाँ मुक्तिरामा वर्यारंगे, कर्म कंटक सहु जरा ॥ २ ॥
कोई तीर्थ जग में अन्य नाहीं, विमलगिरि सम तारकं,
जे दूर भविया जे अभविया, सदा दृष्टि निवारकं ।
एक तीजे, पाँचमे, भव वरे, शिवसुख कारकं,
यह आशधारी सरण थारो आतमा दुःख वारकं ॥ ३ ॥*

*कोई दूसरा चैत्यवंदन बोलना चाहें तो वह भी बोल सकते हैं ।

जंकिंचि नाम तित्थं. सग्गे, पायालि, माणुस्से लोए, जाईंजिण, बिंबाइं, ताइं, सव्वाइं वंदामि ।

नमुत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सय संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर पुंडरीयाणं, पुरीसवरगंध हत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसण, धराणं, विअट्ट-छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वनूणं, सव्वदरिसीणं, सिव, मयल, मरुअ, मणंत, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नाम धेयं, ठाणं, संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागएकाले, संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(मस्तक पर हाथ रख कर आधा जयवीराय कहे)

जय वीयराय ! जगगुरु ? होउ ममं तुहपभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ, इट्ठफलसिद्धि ॥१॥

लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरु-जोगो, तव्वयण-सेवणा-आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूँ? इच्छं ।

विपुल निर्मल कीर्ति भरान्वितो,
जयति निर्जर नाथ नमस्कृतः ।
लघु विनिर्जितमोहधराधिपो,
जगति यः प्रभुशांतिजिनाधिपः ॥ १ ॥

विहित शांत सुधारसमज्जनं,
निखिल दुर्जयदोषविवर्जितम्
परमपुण्यवतां भजनीयतां,
गतमनन्तगुणैः सहितंसताम् ॥ २ ॥

तमचिरात्मजमीशमनीश्वरं,
भविक पद्मविबोध दिनेश्वरम् ।
महिमधाम भजामि जगत्त्रये,
वरमनुत्तर सिद्धि समृद्धये ॥ ३ ॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि-माणुस्से-लोए जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरीसुत्तमाणं, पुरीससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं-मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाणदंसण धराणं, विअट्ट-छउमाण ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वनूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआसिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

(खड़े हो कर)

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्त-मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर (उच्च स्वर से) "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः" ॥

शांति जिनेसर सेवीये ए,
संपदा शांति दातार तो।
विश्वसेन कुल दीपता ए,
अचिरा माता मलार तो।
राज पाट सब त्याग के ए,
संयम से चित धार तो।
आठ कर्म को जार के ए,
पहुंता मुक्ति मझार तो ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं, सुमइंच पउमप्पहं, सुपासं जिणंच

चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस, वासुपुज्जं च विमलमणंतंच जिणं, धम्मं संतिंच वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं, नमि जिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं; पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं समाहिवर-मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं, पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए, ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं । सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो; अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं,

भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर के दूसरी स्तुति पढ़े ।)

शान्तिनाथ चक्री हुआ ए,
कुँथुं अर पिण तेम तो ।
वासुपूज्य जिन राजजीए,
वीर पास मल्लि नेमतो ।
राज्य सम्पदा नहि ग्रहीए,
शेषा मंडलिक राज्यतो ।
संसार त्याग सवीलियाए,
मुक्ति पुरी का राज्य तो ॥२॥

पुक्खर वरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥
भरहेरवय विदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥

तमतिमिर पडलविद्धं-सणस्स सुरगण नरिंदमहियस्स सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडि अ मोहजालस्स ॥२॥

जाईजरामरण सोगपणासणस्स ॥
कल्लाणपुक्खल विसाल सुहावहस्स ॥
को देव दाणवनरिंदगणच्चिअस्स ॥
धम्मस्स सार मुवलब्भकरे पमायं ॥३॥

सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदीसया संजमे ॥
देवं नाग-सुवन्न-किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए ।
लोगो जत्थपइट्ठिओ जगमिणंतेलुक्कमच्चासुरं ॥
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥

सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके चौथी स्तुति पढ़े)

शांतिनाथ ज्ञानी हुआए,
भाखे सार वचन तो ।

दुविध धर्म को जानीये ए,
श्रावक साधु जतन तो।
आश्रव द्वार को त्यागीए ए,
संवर चित्त में धारतो।
दर्शन ज्ञान चरित्त से ए
पामे भव जल पार तो ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्ग मुवगयाणं नमो सया सव्व सिद्धाणं ॥१॥
जो देवाण वि देवो जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देवदेव महिअं सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥
इक्को वि नमुक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।
संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥
उज्जिंत सेलसिहरे दिक्खानाणं, निसीहिआजस्स।
तं धम्म चक्कवट्टिं अरिहनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस्स दोय-वंदिया जिणवरा-चउव्वीसं।
परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं-खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए

॥ १ ॥ सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥ २ ॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे. काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव काय ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ कहकर चौथी स्तुति पढ़ेः–

गरुड यक्ष को सिमरीये ए,
देवी निर्वानी नामतो ।
शासन सांनिध्य जे करे ए,
करे नित धर्म के कामतो ।
तपगच्छ नायक गुण भरे ए,
श्री विजयानंद सूरि रायतो ।
वल्लभ निश दिन भावसेए,
नमन करत तस पायतो ॥ ४ ॥

नीचे बैठ कर बायां घुटना ऊँचा करकेः–

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ, नामधेयं, ठाणं, संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

खड़े होकर

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदणवत्ति-आए, पूअणवत्तिआए, सकारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-

मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं, दिट्ठि-संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं, वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः (कहकर थुई पढ़े)

यदुवंशाकाशे उडुपति समा नेमि जिन जी,
शरीरे रंभाभा रतिमद हरी राजुल तजी।
ग्रही दीक्षा भारी भविजन विबोधे दिनकरी,
करो दृष्टि स्वामी हरिण पशु जैसे हितकरी ॥ १ ॥
लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ २ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ५ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला, पहीण जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥

कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ७ ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ! ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवन्ताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके:—

गये मुक्ति स्वामी गिरि शिखर उज्जित शिरसी।
अपापा में वीरो शिव सुख अनंतं विफुरसी।
जया भू चंपा में धवलगिरि नाभेय जिनजी।
समेते आनंदामृतरसकरा वीस जिनजी॥ २॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥ १॥
तमतिमिर पडलविद्धं—सणस्ससुरगणनरिंदमहियस्स,
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स॥ २॥

जाई जरामरणसोगपणासणस्स।
कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स।
को देव दाणव नरिंद गणच्चि अस्स।
धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं॥ ३॥

सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे।
देवं नाग-सुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भूअभावच्चिए।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ॥४॥
सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए।
पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए।
बोहिलाभ वत्तिआए। निरुवसग्गवत्तिआए॥२॥

सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामिकाउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं, अगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं । सुहुमेहिं, दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके:—

अनेकांत स्याद्वाद नयगम भंगादि विधिशुं ।
अजेयाही तीर्थान्तर शतवुधैः कीट समसुं ।
निहारी वाणी यो-जन अतिशया पंच सतहा ।
सुधाधारा सारा जिन मुख थकी निर्गत सुहा ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परं परगयाणं ।
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिनवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ, तारेइ नरं वा नारिं वा ॥ ३ ॥

उज्जित सेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ-दस दो-य वंदिया, जिणवरा चउव्वीसं,।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठि समाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छ ए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

अधिष्ठाता अंबा प्रवचन सुरी नेमि जिननी,
करो गोमेधो हीं सतत सुख शांति अति घनी।
विजे आनंद श्री तपगण गणी वल्लभ सदा,
नमो भावे शुद्धे मन, वचन, काया फल तदा ॥४॥

वायां पाँव ऊँचा करके

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरीसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण, दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वनूणं, सव्वदरिसिणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।
जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः' कह कर उवसग्गहरं अथवा कोई स्तवन पढ़ेः—

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विसनिन्नास मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झपणामो वि बहुफलो होइ !
नरतिरिएसुविजीवा, पावंति न दुख दोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरंठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिभरनिब्भरेण हिअएण ।
तादेव दिज्ज बोहिं, भवे भवे भवे पास जिण चंद ॥५॥

(स्तवन)

होइ आनंद बहार रे प्रभु बैठे मगन में ॥ होइ० ॥ आंचली ॥ अष्टादश दूपण नहीं जिनमें, प्रभुगुण धारे बाइ रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ चौतीश अतिशय पैंतीश वाणी, जग जीवन हितकार रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ शांतरूप मुद्रा

प्रभु प्यारी, देखो सब नर नार रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ आनंद थावो प्रभुगुण गावो, मुख बोलो जयकार रे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रभु भक्ति से वल्लभ होवे, आनंद हर्ष अपार रे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

(हाथ जोड़ कर)

जय ! वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुहपभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ, मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआपरत्थकरणं च, सुहगुरु- जोगो, तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि- आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ! इच्छं ।

सामान्यजिनचैत्यवंदन—

जय जय तुं जिनराज, आज, मलीओ मुज स्वामी ।
अविनाशी अकलंक रूप, जग अंतरयामी ॥ १ ॥
रूपारूपी धर्मदेव, आतम आरामी ।
चिदानंद चेतन अचिंत्य शिव लीला पामी ॥ २ ॥
सिद्ध बुद्ध तुज वंदतां ए, सकल सिद्धवर बुद्ध ।
राम प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम ऋद्ध ॥ ३ ॥

काल बहु थावर घरे, भमीयो भव मांही।
विकलेन्द्रिय मांहि वस्यो, स्थिरता नहीं क्यांहीं ॥४॥
तिर्यंच पंचेन्द्रिय मांही देव, कर्में हुं आयो।
करी कुकर्म नरके गयो, तुम दर्शन नहीं पायो ॥५॥
एम अनंत काले करीए, पाम्यो नर अवतार।
हवे जग तारक तुंही मल्यो, भवजल पार उतार ॥६॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुस्से लोए जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरीसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरीसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण, दंसण धराणं, विअटच्छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वनूणं, सव्वदरिसिणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-

मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ।

दोनों हाथ जोड़ कर जय वीराय ! पूरा पढ़े –

जय वीराय ! जग गुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआण-बंधणं वीयराय ! तुह समए ॥ तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ॥ संपज्जउ मह एअं तुह नाह ! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणम् । प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

फिर इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूँ ! इच्छं ।

एक नवकार मंत्र पढ़ कर खड़े ढिंचण (गोडे) बैठ कर मधुर स्वर से सज्झाय पढ़े ।

सज्झाय

मण्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहर धर सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥१॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुकारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिण पूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
वव हारस्स य सुद्धि रहजत्ता तित्थ जत्ताय ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणाय ।
धम्मिअ जण संसग्गो करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थय लिहणं पभावणा तित्थे,
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरु वए सेणं ॥ ५ ॥*

(एक नवकार पढ़ कर) विधि करते अविधि हुई हो तस्स (उसका) मिच्छामि दुक्कडं ॥ देववंदन विधि समाप्त

॥ इति पौषध विधि समाप्तः ॥

अथ पऊण पोरिसी पढ़ाने की विधिः—

सूर्योदय से छः (६) घड़ी दिन अर्थात् २॥ अढाई घण्टा (क्लाक) दिन चढ़ जाने पर पऊण पोरिसी पढ़ावेः—

* दोपहर और शाम के देववंदन में सज्झाय नहीं करना ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए, निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुपडिपुण्णापोरिसी ? इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिया-वहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहिआए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संक्रमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं । सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं

आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करके:—

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे, मुणिसुव्वयं, नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा-सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करूँ ? इच्छं । कह कर मुहपत्ति पड़िलेहे ॥

अथ राइ मुहपत्ति की विधिः—

गुरु महाराज की उपस्थिति हो तो उनके समक्ष राइमुहपत्ति पडिलेहना । यदि उनके साथ राइ प्रतिक्रमण किया हो तो यह विधि न करना ।

प्रथम इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं कहकर (पृ० ४३६) पर से इरियावहियाए से लेकर तस्स मिच्छामि दुकडं तक पाठ बोले बाद "तस्स उत्तरीकरण" और "अन्नत्थ उससीएणं" का पाठ कह कर, एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करे ? पार कर पूर्ववत् लोगस्स का पाठ पढ़े ।

इसके बाद इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइ मुहपत्ति पडिलेहुँ, कह कर मुहपत्ति पडिलेहे । फिर "द्वादशावर्त्त वंदन" नीचे लिखे अनुसार देवे ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि-आए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो-कार्य कॉय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे राइ वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइ आए, आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

फिर दोबारा इसी पाठ को पढ़े, परन्तु "आवस्सिआए" इस पद को छोड़ दे।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउँ? इच्छं। आलोएमि जो मे राइओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते, सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स

सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं (कह कर पदवीधर होवे तो फिर द्वादशावर्त्त वंदन ऊपर लिखे अनुसार दो वार करना) ।

इच्छकारी, सुहराइ, सुहदेवसि ? सुखतप शरीर, निराबाध, सुख संजम यात्रा, निर्वहते होजी, स्वामी साता है जी ! ॥ आहार पानी का लाभ देना जी ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं ? खामेमि राइअं जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर भासाए, उवरि-भासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा । तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

फिर द्वादशावर्त्त वंदन का पाठ नीचे लिखे अनुसार पढ़े ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि-आए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो-कायं काय

संकारा, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहु सुभेण मे राइवइक्कंता जत्ता भे? जवणिज्जं च मे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणं राइआए आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(फिर दोबारा इसी पाठ को पढ़ो परन्तु "आवस्सिआए" इस पद को छोड़ दो)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि इच्छकारि भगवन् पसायकरी पचक्खाण का आदेश देना जी ऐसा कह कर पचक्खाण करे। बाद में सब साधुओं को वंदना नमस्कार करके ज्ञान-ध्यान पठन-पाठनादि शुभ क्रिया में मग्न रहें।

पौषध में सब मुनि महाराजाओं को वन्दना करनी चाहिये।

अथ गुरु वंदन विधिः—

श्री गुरुदेव स्वस्थ चित्त से आसन पर विराजमान

हों तब मत्थएण वंदामि—दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक (सिर) नवां कर फेटा वंदन करके:—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउँ जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि—दो खमासमण देकर ।

सिर झुका कर—इच्छकारी सुहराइ ? सुह देवसी ?* सुख तप ? शरीर निराबाध ? सुख संयम यात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामी साता है जी ? आहार पानी का लाभ देना जी ।

फिर खमासमण देकर—इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर-राइअं-देवसिअं* खामेउँ ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, (दायां हाथ मुख के पास रख कर बायां हाथ ज़मीन पर रख कर) जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चा-ऽऽसणे, समाऽऽसणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ, विणय-परिहीणं-सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं । फिर एक खमासमण देकर सुखसाता पूछना ।

---

* १२ बजे के पहले वंदन करना हो तो राइअं और १२ बजे के पीछे करना हो तो देवसिअं, पाठ बोलना ।

श्री जिन मन्दिर जाने की विधिः—

पौषध लेने के बाद श्री जिन मन्दिर में श्री जिनेश्वर भगवान् के दर्शन करने लिए जरूर जाना चाहिये। न जावे तो आलोयण आती है। इस लिये आसन (कटासणा) बायें कन्धे पर रखकर, उत्तरासण करके, चरवला बायीं बगल में और मुहपत्ति दायें हाथ में रखकर इरियासमिति शोधते हुए (जमीन देखते हुए) श्री जिनेश्वर भगवान् के मन्दिर में जाना चाहिये। वहां प्रथम "निस्सिही" कहकर मन्दिर के पहले दरवाजे में प्रवेश करना। मूलनायक जी के सन्मुख जाते ही "नमो जिणाणं" कह कर नमस्कार करना, और तीन प्रदक्षिणा देना। पीछे दूसरी बार "निस्सीही" कहकर रंग मण्डप में आकर के दर्शन, स्तुति करना। पीछे तीसरी बार निस्सिही कहना। फिर इच्छामि खमासमण देकर, (पृ० ४३६) पर से "इरियावहियं" पडिकम के तीन खमासमण देकर दायां पांव जमीन के साथ टेक कर और बायां पांव ऊँचा करके दोनों हाथ जोड़ कर चैत्यवंदन करे—संस्कृत या अन्य भाषा का जो याद हो वह कहे।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूँ? इच्छं।

श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे।
भाव धरी ने जे चढ़े तेने भव पार उतारे ॥ १ ॥
अनंत सिद्ध नो एह ठाम, सकल तीर्थ नो राय।
पूर्व नवाणुं ऋषभ देव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥
सूरज-कुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम।
नाभिराया कुल मंडणो। जिनवर करूँ प्रणाम ॥ ३ ॥
जंकिंचि नाम-तित्थं. सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

(पृ० ७७) पर से नमुत्थुणं, जावंति चेइआइं, जावंत केविसाहू, नमोऽर्हत्-सिद्धाऽऽचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ॥ स्तवन। (या उवसग्गहरं) जयवीयराय, अरिहंत चेइयाणं, नवकार का काउस्सग्ग कर, थुई कहना।

पीछे खमासमण देकर जो पच्चक्खाण करना हो वह (पृ० ५२) पर से करे।

चउविहार उपवास—व्रत का पच्चक्खाणः—

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ (वोसिरामि)

तिविहार उपवास का पच्चक्खाणः—

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं,* पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणहार* पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ॥ (वोसिरामि)

आयंबिल, नीवि, एकासणा का पच्चक्खाणः—

(आयंबिल नीवि, अथवा एकासणा—इनमें से जो पच्चक्खाण करना हो तो उसे मन में धार लेना चाहिये और नीचे का पाठ पढ़ना चाहिये)

नोटः—* छट्ठ (बेला) करना हो तो "सूरे उग्गए छट्ठभत्तं अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ"। अट्ठम (तेला) करना हो तो सूरे उग्गए अट्ठमभत्तं अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, कहना। इसी प्रकार एक एक उपवास की वृद्धि के साथ दो दो भक्त बढ़ाते जाना, जैसे चार उपवास करने हो तो दसम भत्तं, (५) दुवालस भत्तं, (६) चउदस भत्तं, (७) सोलस भत्तं (८) अट्ठारस भत्तं॥ इत्यादि

* एक से अधिक उपवास का पच्चक्खाण हो तो दूसरे उपवास से पाणहार का पच्चक्खाण करना चाहिये।

उग्गए, सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, सूरे उग्गए परिमुड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं; पाणं; खाइमं; साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं; सहसागारेणं; पच्छन्नकालेणं; दिसा-मोहेणं; साहुवयणेणं; महत्तरागारेणं; सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं; आयंबिल; नीविविगरओ; पच्चक्खाइ। अन्नत्थणा-भोगेणं; सहसागारेणं; लेवालेवेणं; गिहत्थसंसट्ठेणं; उक्खित्तविवेगेणं; पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं; महत्तरागारेणं; सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं, असणं; खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं; सहसागारेणं; सागारि-आगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं; पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा; अलेवेण वा अच्छेण वा; बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ॥ (वोसिरामि)*

फिर खमासमण देकर, प्रभु को नमस्कार कर, श्री जिन मंदिर से बाहिर निकलते समय तीन बार 'आवस्सही' कहना चाहिये और उपाश्रय में प्रवेश करते समय तीन बार 'निस्सिही' कहना और गमणा गमणे आलोचना॥

* नोटः— दूसरे के लिये 'वोसिरइ' और अपने लिये 'वोसिरामि' कहे

अथ गमणा गमण विधिः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं ? इच्छामि। पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए ॥ २ ॥ गमणा गमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कडा, संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं, संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छितकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमंलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं

अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्स अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करके)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि सुव्वयं नमि जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(खड़े खड़े हाथ जोड़ कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! गमणागमणे आलोउ ? इच्छं, इरिया समिति; भाषा समिति; एषणा समिति; आदानभंडमत्तनिक्षेपणा समिति; पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, कायगुप्ति, यह आठ प्रवचन माता श्रावक धर्में सामायिक, पौषह में अच्छी तरह पाली नहीं, खंडना, विराधना हुई होवे वह सब मन; वचन, काया, कर मिच्छामि दुक्कडं ।

मात्रा (पेशाब) लघुशंका करने की विधिः—

मात्रा—(लघुशंका) करने के लिये अथवा कारणवशात् जब जब उपाश्रय से बाहर जाने की जरूरत हो तब तीन बार 'आवस्सही' कहना और प्रवेश करते समय तीन बार 'निस्सिही' कहना ।

मात्रा—(लघुशंका) करने के लिये जाना हो तब पहले मात्रा का अलग वस्त्र (धोती) पहन कर चरवला, मुहपत्ति पास रखकर (काल का समय हो तो ऊन की कांबली सिर पर ओढ़ कर) मात्रा करने की जगह पर जाकर कुंडी दृष्टि से या पूंजणी से पूंज कर लेना । उसमें मात्रा करके परठवणे के स्थान पर कुंडी नीचे रख कर निर्जीव-(जीव-जन्तु-वनस्पति आदि से रहित) भूमि देख

कर–अणुजाणह जस्सुग्गहो तीन बार कह कर मात्रा परठवदेना और कुंडी नीचे रखकर "वोसिरे" तीन बार कहना, कुंडी जहाँ से ली हो वहाँ ही रख देना, और अचित्त(गरम जल)से हाथ धो कर वस्त्र बदल कर स्थापनाचार्य समक्ष (पृ० ४८१) पर से गमणागमणे आलोचना ।

ऊपर लिखे अनुसार धोती बदलकर* अणुजाणह जस्सुग्गो अणुजाणह जस्सुग्गो, अणुजाणह जस्सुग्गो कह कर मात्रा (लघुशंका) बैठ कर लेनी चाहिये उठ कर वोसिरे, वोसिरे, वोसिरे-कहनाऔर धोती बदलकर गमणागमणे आलोचना ।

स्थंडिल (जंगल) जाने की विधिः—

पौषध में स्थंडिल (जंगल) जाना हो तो धोती बदल कर काल का समय हो तो ऊन की कँबली सिर पर ओढ़ कर मुहपत्ति कमर में रख कर दायें बगल में चरवला रख कर याच कर रखा हुआ गरम पानी लोटे आदि किसी में ले जाना । निर्जीव स्थान में अणुजाणह जस्सुग्गो, अणुजाणह जस्सुग्गो, अणुजाणह जस्सुग्गो कह कर बैठना और उठ कर वोसिरे, वोसिरे, वोसिरे—कहना उपाश्रय में आकर गरम पानी से हाथ पाँव धो कर स्थापनाचार्य जी के समक्ष (पृ० ४८१ पर से) गमणागमणे आलोचना॥

---

* निर्जीव— स्थान में जहां वनस्पति वगैरह न हो ऐसे स्थान में श्री कहकर बैठकर मात्रा (लघुशंका) कर लेनी चाहिये ।

मध्यान्ह (दोपहर) के देववंदनः—

मध्यान्ह (१२—१२॥ बजे) के समय पृ० ४४६ से ४६९ तक इरियावहिय, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ, का पाठ पढ़ कर, एक लोगस्स अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स को पढ़ कर पृ० ४४६ पर लिखी हुई विधि अनुसार दोबारा देववंदन करे। "जो चौमासे के दिन हों तो पहिले ही मकान की दूसरी बार पडिलेहना कर लेनी चाहिये—चौमासे में मकान तीन बार पडिलेहना चाहिये" अर्थात् इरियावहि ऊपर लिखे अनुसार पडिकम के डंडासण से मकान पडिलेह के जो कूड़ा कचरा निकला हो उसको तीन बार 'अणुजाणह जस्सुग्गो' कह कर शुद्ध भूमि में परठवे और तीन बार 'वोसिरे' कहे। पीछे फिर इरियावहिय पडिकमे लेवे। फिर विधि सहित देववंदन करे॥

पच्चक्खाण पारने की विधिः—

देववंदन के बाद जिसको तिविहार उपवास (व्रत) होवे और पानी पीना होवे वह और जिसने आयंबिल, नीवि, एकासणा किया होवे वह नीचे लिखी विधि से पचक्खाण पारे। पृ० ४३६ पर से इरियावहिय, पडिकमे*

* जहां इरियावहिय पडिकमे लिखा हो वहां इच्छामि खमासमण, इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ, एकलोगस्स अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करके लोगस्स कहना।

फिर इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूँ ? इच्छं।

जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ।
जगबंधव जगसत्थवाह जगभाव विअक्खण ।
अट्ठावय संठविअरूव कम्मट्ठ विणासण ।
चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहय सासण ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढमसंघयणि, उक्कोसय, सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहुंकोडिहिं वरनाण समणह कोडिसहसदुअ थुणिज्जिअ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरि मंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवर विदेहिं तित्थयरा । चिहुं दिसि-विदिसि जिं के वि तीआणागय संपरअवंदु जिण सव्वेवि ॥३॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ।
बत्तीस सयबासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥

पनरस कोडी सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना।
छत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाई पणमामि ॥५॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं-तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयल, मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

* * * *

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

* * * *

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोगमारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुख दोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ४ ॥

(दोनों हाथ जोड़ कर)

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं!
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥

लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थ करणं च ।
सुहगुरु जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइ वि नियाण-बंधणं वीयराय ! तुह समए।
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ महएअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? इच्छं !

एक नवकार पढ़ कर खड़े घुटने बैठ कर मन्नह जिणाणं सज्झाय कहे:-

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥

उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणाय ।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

एक नवकार पढ़े, पीछे खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुँ ? इच्छं, कह कर मुहपत्ति पडिलेहे । फिर खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाणं पारेमि ? यथाशक्ति, खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण पारियं 'तहत्ति' कह पीछे दाहिना हाथ चरवले पर रखकर एक नवकार मंत्र पढ़ कर उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं, पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं, परिमुड्ढ गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, पच्चक्खाण किया चउव्विहाहारं, आयंबिल*, नीवि, एकासणा पच्चक्खाण किया तिविहार पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । फिर एक नवकार पढ़े ।

*आयंबिल नीवि, एकासणा, । इनमें से जो पच्चक्खाण किया हो उसका नाम बोलना चाहिये, अर्थात् आयंबिल, एकासणा या नीवि एकासणा, पच्चक्खाण किया तिविहार ऐसा बोलना चाहिये, अकेला एकासणा किया हो तो एकासणा पच्चक्खाण किया तिविहार ऐसा बोलना चाहिये ।

तिविहार उपवास (व्रत) का पच्चक्खाण पारने वाला इस प्रकार बोले—सूरे उग्गए उपवास किया तिविहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, परिमुड्ढ, मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण किया पाणहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअ, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं। एक नवकार पढ़े पीछे जलपान का विधि अनुसार अवसर देखो।

जलपान और भोजन करने की विधिः—

पौषध में जब पानी पीना हो तो पच्चक्खाण* (पृ० ४७८) पर लिखी विधि से पार कर, याचना किया हुआ अचित्त (गरम) पानी आसन (कटासणा) ऊपर बैठकर पीना चाहिये। पानी पीये बाद गलास आदि को कपड़े से पोंछ कर रखना चाहिये। पानी वाले बरतन को खुला न रखना चाहिये।

यदि आयंबिल नीवि या एकासणा करने के लिए अपने घर को जाने की जरूरत हो तो ईर्या समिति शोधते हुए जाना चाहिये। और घर में प्रवेश करते हुए जयणा मंगल कह कर आसन बिछा कर स्थापनाचार्य स्थापन

* चउविहार उपवास वाले को पच्चक्खाण पारने की विधि करने की जरूरत नहीं।

करके (पृ० ४८१) पर से गमणागमणे आलोचना। बाद जागा चरवला से प्रमार्जन कर,-पाटला, थाली आदि भाजन प्रमार्जन करके यथा संभव अतिथि संविभाग (मुनिराज को दान) देकर, स्थिर बैठ कर, मौन हो, भोजन करना चाहिये। साथ ही झूठा-ऐंठा न छोड़ना चाहिये। थाली आदि भाजन को धो कर पीना चाहिये। जिसको घर न जाना हो तो पौषधशाला में पूर्व प्रेरित (पुत्रादि को सूचना की हुई) का लाया हुआ (भोजन) जागादि को प्रमार्जन करके, आसन पर स्थिर बैठ कर, सावधानी से मौन हो भोजन करना चाहिये। स्वादिष्ट भोजन न करना चाहिये, मुखवास तांबूल, इलायची आदि भी नहीं लेना। भोजन कर लेने पर मुख शुद्ध करके तिविहार का पच्चक्खाण नीचे लिखे अनुसार कर लेना चाहिये।

दिवस—चरिमं पच्चक्खाइ ति-विहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणा-ऽऽभोगेणं, सहसाऽऽगारेणं, महत्ताऽऽगारेणं, सव्व समाहि-वत्तियाऽऽगारेणं, वोसिरइ॥

भोजन के बाद भोजन के स्थान पर से काजा लेलेना चाहिये। (पीछे चाहे घर जाकर भोजन किया हो चाहे उपाश्रय में) स्थापनाचार्य जी के समक्ष इरियावहियं पडिक्कमके जगचिंतामणि का चैत्यवंदन जयवीयराय

तक करना चाहिये। (पृ० ४७८ से पच्चक्खाण पारने की विधि में से)।

शाम की पडिलेहणा की विधिः—

जब छः घड़ी दिन बाकी रहे लगभग (३-४ बजे) जब मुनिराज की उपस्थिति हो तो तब स्थापनाचार्य जी की पडिलेहणा कर लेवे, पीछे उन्हीं स्थापनाचार्य के सन्मुख दूसरी बार की पडिलेहणा करनी, उसकी विधि नीचे लिखे अनुसार हैः—

इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णापोरिसी कह कर फिर खमासमण देकर इरियावहियं पडिकमें, (पृ० ४३६ पर से)। पीछे "इच्छामि खमासमण देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! गमणागमणे आलोऊं ? इच्छं" कह कर "इरियासमिति, भासासमिति, एसणासमिति, आदान-भंडमत्त-निक्खेवणासमिति, पारिट्ठावणियासमिति, मनो-गुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, एवं पंच समिति, तीन गुप्ति, ये आठ प्रवचन माता श्रावक धर्म सामायिक पोसह में अच्छी तरह पाली नहीं, खण्डना विराधना हुई हो वह सब मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं" पढ़े। पीछे "इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !

पडिलेहण करूं ? इच्छं, इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौषधशाला प्रमार्जूं ? इच्छं" कह कर उपवास किया हो तो मुहपत्ति, आसन, चरवला, ये तीन पडिलेहे। और जो खाया हो तो धोती और कंदोरा मिला कर पांच वस्तु पडिलेहे। पीछे भोजन खाया हो तो फिर इरियावहिय पडिक्कमके (पृ० ४३६ से) "इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावो जी" (यह आदेश स्थापनाचार्य पडिलेहण संबंधी है-देखो (पृ० ४३५) ऐसा कह कर जो बड़ा हो उसका कोई एक वस्त्र पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कह कर मुहपत्ति पडिलेह कर 'इच्छामि खमासण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? इच्छं' कह एक नवकार पूर्वक (पृ० ४६९) पर से 'मन्नह जिणाणं' की सज्झाय करे। पीछे भोजन खाया हो तो द्वादशावर्त्त वंदना दे (उपवास हो तो न देवे)

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश दीजिये जी ! ऐसा कह कर पानी न पीना हो तो पाणहार का और पानी पीना हो तो मुट्ठी सहियं का पच्चक्खाण करे— उपवास करके पानी पीया हो तो वह भी इसी प्रकार

पच्चक्खाण करे। यदि पानी न पिया हो तो चउव्विहार उपवास का पच्चक्खाण करे। यदि पहिले ही चउव्विहार उपवास का पच्चक्खाण किया हो तो भी फिर से कर लेवे।

पाणहार का पच्चक्खाणः—

पाणहार दिवस चरिमं पचक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरई ॥

मुट्ठी सहियं का पच्चक्खाणः—

मुट्ठी सहियं पचक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ॥

चउव्विहार उपवास का पच्चक्खाणः—

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पचक्खाइ, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ॥

पच्चक्खाण करके इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि संदिसाहुं? इच्छं। इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि पडिलेहुं? इच्छं। कहकर बाकी के वस्त्रों की पडिलेहणा करे। (रात्रि पौसह करने वाला पहले से ही

कम्बल, आसन, संथारिया (बिछौना) का प्रबंध कर लेवे)। पृ० ४३६ पर से इरियावहियं पडिकम के डंडासण पडिलेह कर उससे काजा (कचरा) लेकर निर्जीव स्थान में 'अणुजाणह जस्सुग्गो' तीन वार कह कर यत्नपूर्वक परठ (गेर) देवे। और तीन बार 'वोसिरे' कहकर वोसरा देवे। और इच्छामि खमासमण देकर फिर इरियावहियं पडिकमे।

मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण किया हो तो चरवले पर बायां हाथ रख कर तीन नवकार गिन कर पच्चक्खाण पार लेना चाहिये।

शाम की देववंदन विधिः—

पानी चूका कर (बढ़े हुए पानी में चूना डाल देवे) तीसरे समय के खमासमण देकर, इरियावहियं पडिकम पृ० ४४६ से ४६९ तक लिखी हुई विधि अनुसार देववंदन करे। पडिकमणे का समय होने पर इरियावहियं पडिकम के चैत्यवंदन से शुरू करे—(सामायिक में ही होने से सामायिक लेने की जरूरत नहीं) सात लाख के स्थान में गमणागमणे कहे। और करेमिभंते में जावनियमं के स्थान पर 'जावपोसहं' कहे।

जिसने आठ पहर का पोसह लिया हो या जिसने

केवल रात्रि पोसह लिया हो वह कुण्डल (कान में डालने के लिये रुई) डंडासण, और रात्रि की शुचि के लिये चूना डाला हुआ पानी याचना कर रख लेवे ।

पडिक्कमण के समय इच्छामि खमासमण इरियावहियं पडिक्कमके इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! स्थंडिल पडिलेहुं ? इच्छं। कह कर चरवले को हिलाता हुआ नीचे लिखे २४ मांडले करे:—

१. आघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अणहिआसे ।
२. आघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे ।
३. आघाडे मज्झे उचारे पासवणे अणहिआसे ।
४. आघाडे मज्झे पासवणे अणहिआसे ।
५. आघाडे दूरे उचारे पासवणे अणहिआसे ।
६. आघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे ।
७. आघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अहिआसे ।
८. आघाडे आसन्ने पासवणे अहिआसे ।
९. आघाडे मज्झे उचारे पासवणे अहिआसे ।
१०. आघाडे मज्झे पासवणे अहिआसे ।
११. आघाडे दूरे उचासणे पासवणे अहिआसे ।
१२. आघाडे दूरे पासवणे अहिआसे ।
१३. अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।

१४. अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे ।
१५. अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
१६. अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहिआसे ।
१७. अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
१८. अणाघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे ।
१९. अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
२० अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहिआसे ।
२१. अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
२२. अणाघाडे मज्झे पासवणे अहिआसे ।
२३. अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
२४. अणाघाडे दूरे पासवणे अहिआसे ।

पीछे इच्छामि खमासमण इरियावहिय पडिकमके फिर चैत्यवंदन करे ।

पौषध पारने की विधिः—

इच्छामि खमासमण देकर इरियावहिय पडिकमे (पृ० ४३६ पर से) बैठ कर बायां पाँव ऊँचा करके दोनों हाथ जोड़ करः—

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लुरणु, दुज्जय मयण बाण-मुसुमूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ, पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसुतणु-कंतिकडप्पसिणिद्धउ,

सोहइफणमणि किरणालिद्धउ। नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥ फिर (पृ० ४७९) पर से नमुत्थुणं, जावंति, जावंत, उवसग्गहरं, जयवीयराय, तक पढ़ कर इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं, कह कर मुहपत्ति पडिलेहे। फिर इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसहं पारेमि?*१। इच्छं, यथाशक्ति फिर इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्२! पोसहो पारिअं तहत्ति कह कर एक नवकार पढ़ कर दाहिना हाथ चरवले पर रख कर 'सागरचंदो कामो' इत्यादि पौषध पारने का पाठ पढ़े।

पोसह पारने का पाठ।

सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुंदसणो धन्नो।
जेसिं पोसहपडिमा, अखंडिआ जीविअंते वि ॥१॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय।
जास पसंसइ भयवं, दढव्वयत्तं महावीरो ॥२॥

* १– यदि गुरु महाराज के समक्ष यह विधि की जावे तो पोसहं पारेमि के उत्तर में गुरु म० कहें 'पुणोविकायव्वं' तब यथा शक्ति कहना। २– पोसहो पारिअं के उत्तर में गुरु म० कहें 'आयारो न मोत्तव्वो' तब तहत्ति कहना। सामायिक में भी ऐसा ही समझना।

पौषध व्रत विधि से लिया और विधि से पूर्ण किया। तथापि कोई अविधि हुई हो तो मन, वचन और काया से मिच्छामि दुक्कडं।

बाद 'इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं' कह कर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामाइयं पारेमि? यथाशक्ति, इच्छामि० इच्छा० सामाइअं पारिअं, तहत्ति कह कर नवकार पढ़कर सामाइयवयजुत्तो' पढ़े।

सामाइयवयजुत्तो, जावमणे होइ नियम संजुत्तो।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्ति आवारा॥ १॥

सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।
एएण कारणेणं, वहुसो सामाइअं कुज्जा॥ २॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि से करते जो कोई अविधि हुई होवे वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं॥ कह कर पुस्तकादि के स्थापित स्थापनाचार्य हों तो दाहिने हाथ को सीधा स्थापनाचार्य की तरफ करके तीन नवकार गिन कर स्थापनाचार्य जी का उत्थापन कर लेना चाहिये।

केवल रात्रि के चार पहर का पोसह लेने की विधिः-

इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिय (पृ० ४३६) से लेकर यावत् बहुवेलं करेमि पर्यन्त सुबह के पोसह लेने की विधि के अनुसार विधि करे। उसके बाद शाम की पडिलेहणा की विधि करे (पृ० ४९३) पर, से पीछे देव वांदे, मांडले करे और पडिकमणा करे।

यदि सुबह चार पहर का पोसह लिया हो और पीछे आठ पहर का पोसह लेने का विचार हो तो शाम की पडिलेहणा करते समय (पृ० ४३६ से) इरियावहिय पडिकमके 'इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे' आलोच कर (पृ० ४८१) पर से, 'इरियावहियं से लेकर 'बहुवेलं करेमि' इस आदेश—पर्यन्त सुबह के पोसह लेने की विधि के अनुसार विधि करे, (पृ० ४३६) से, सज्झाय करूं?' इसके स्थान में 'सज्झायमें हूं' ऐसा बोले और तीन नवकार के बदले एक नवकार गिने। पीछे (पृ० ४९३) पर से शाम की पडिलेहणा की विधि करे। बाद देव-वंदन (पृ० ४४६ से ४६९ तक) मांडले और प्रतिक्रमण भी पूर्ववत् करे। प्रतिक्रमण किये बाद संथारा पोरिसी के समय* ।

*(पहर रात) तक स्वाध्याय, धर्म चर्चा, माला वगैरह करे। फिर संथारा पोरिसी पढावे।

संथारा पोरिसी पढ़ाने की विधिः—

पृ० ४७० पर से इच्छामि खमासमण देकर इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? तहत्ति; इच्छामि खमासण देकर इरियावहियं (पृ० ४३६ पर से) कह कर एक लोगस्स का काउस्सग्ग पार कर लोगस्स कहकर 'इच्छामि खमासण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी, राइयसंथारए ठामि ? इच्छं' कहे । (पृ० ४९८ पर से) चउक्कसाय, नमुत्थुणं, जावंति, जावंत, उवसग्गहरं, जय वीयराय" तक सम्पूर्ण पढ़कर 'इच्छामि खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइयसंथारा पोरिसी पढ़वा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेह कर संथारा पोरिसी का पाठ पढ़े ।

संथारा पोरिसी का पाठः—

निसीहि, निसीहि, निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं । नवकार, करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव पोसहं, पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं मणेणं, वायाए, कायेणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं, वोसिरामि ॥

(इतना पाठ, नवकार मंत्र और करेमि भंते ये सब तीन बार कह कर आगे का पाठ पढ़े)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा ।
बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसंथारए ठामि ॥ १ ॥
अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेण ।
कुक्कुडिपायपसारण, अंतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥
संकोइअ संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ।
दव्वाईउवयोगं, ऊसासनिरुंभणालोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली-पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥
कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइ-अरइ-समाउत्तं ।
परपरिवायं माया—मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ ९ ॥
वोसिरसु इमाइं मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूआइं ।
दुग्गइनिबंधणाइं, अट्ठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥
एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ११ ॥
एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १२ ॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ १३ ॥
अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिनपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥

(यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गिन कर नीचे की तीन गाथा कहे)

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिकाय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥
सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पाव ।
जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१७॥इति॥

संथारा पोरिसी पढ़ा कर डंडासण या चरवले से जमीन पूंज कर संथारा बिछा कर पंचपरमेष्ठी का स्मरण करता हुआ निद्रा आधीन होवे ।

पिछली रात (प्रातःकाल) उठ कर पंचपरमेष्टी का स्मरण करके वस्त्र (धोती) बदल कर राइपडिक्कमणा करे ।

(पोसह वालों को सामायिक लेने की जरूरत नहीं) इरियावहिय करके कुसुमिण दुसुमिण कायोत्सर्ग से प्रारंभ करे ।

फिर प्रकाश होने पर इरियावहिय पडिकम के (पृ० ४४१ पर) लिखी हुई विधि अनुसार सुबह की पडिलेहणा करे ।

फिर (पृ० ४४६ पर से) देववंदन करके याची हुई चीजें जो कोई उस वक्त खुल्ला गृहस्थ श्रावक या श्राविका हाजिर होवे उसको "यह सब तुमको सुपुर्द है" ऐसा कह कर सम्हाल देवे । बाद आठ पहर का हो अथवा युक्त चार पहर (रात्रि) का हो (पृ० ४९८ पर) लिखी हुई विधि अनुसार पौषध पारना चाहिये ।

इति शुभम् भवतु

पंन्यास—समुद्रविजय गणि संपादित पौषध विधि समाप्तः

श्री २४ तीर्थङ्करों के माता-पिता आदि संबंधी संक्षिप्त विवरण

नंबर	तीर्थङ्कर नाम	पिता	माता	जन्म स्थान	लांछन	शरीरमान	वर्ण	आयुष्य
१	ऋषभदेवजी	नाभिराजा	मरूदेवी	अयोध्या	वृषभ	५०० धनुष	सुवर्ण	८४ लाख पूर्व
२	अजितनाथजी	जितशत्रु	विजया	अयोध्या	हस्ती	४५० धनुष	सुवर्ण	७२ लाख पूर्व
३	संभवनाथजी	जितारि	सेना	श्रावस्ति	अश्व	४०० धनुष	सुवर्ण	६० लाख पूर्व
४	अभिनंदनजी	संवर	सिद्धार्था	अयोध्या	बंदर	३५० धनुष	सुवर्ण	५० लाख पूर्व
५	सुमतिनाथजी	मेघरथ	सुमंगला	अयोध्या	क्रौंचपक्षी	३०० धनुष	सुवर्ण	४० लाख पूर्व
६	पद्मप्रभुजी	श्रीधर	सुसीमा	कौशांबी	पद्म	२५० धनुष	रक्त	३० लाख पूर्व
७	सुपार्श्वनाथजी	सुप्रतिष्ठ	पृथ्वी	काशी	स्वस्तिक	२०० धनुष	सुवर्ण	२० लाख पूर्व
८	चन्द्रप्रभुजी	महासेन	लक्ष्मणा	चंद्रपुरी	चंद्र	१५० धनुष	श्वेत	१० लाख पूर्व
९	सुविधिनाथजी	सुग्रीव	रामा	काकंदी	मगरमच्छ	१०० धनुष	श्वेत	२ लाख पूर्व
१०	शीतलनाथजी	दृढ़रथ	नंदा	भद्दिलपुर	श्रीवत्स	९० धनुष	सुवर्ण	१ लाख पूर्व
११	श्रेयांसनाथजी	विष्णुराज	विष्णु	सिंहपुर	गेंडा	७० धनुष	सुवर्ण	८४ लाख पूर्व
१२	वासुपूज्यजी	वसुपूज्य	जया	चंपा	भैंसा	७० धनुष	रक्त	७२ लाख पूर्व

१३	विमलनाथजी	कृतवर्म	श्यामा	कपिलपुर	सूअर	६० धनुष	सुवर्ण	६० लाख वर्ष
१४	अनंतनाथजी	सिंहसेन	सुयशा	अयोध्या	सिचाणा पक्षी	५० धनुष	सुवर्ण	३० लाख वर्ष
१५	धर्मनाथजी	भानु	सुव्रता	रत्नपुर	वज्र	४५ धनुष	सुवर्ण	१० लाख वर्ष
१६	शांतिनाथजी	विश्वसेन	अचिरा	हस्तिनापुर	मृग	४० धनुष	सुवर्ण	१ लाख वर्ष
१७	कुंथुनाथजी	सूर	श्री	हस्तिनापुर	बकरा	३५ धनुष	सुवर्ण	९५ हजार वर्ष
१८	अरनाथजी –	सुदर्शन	देवी	हस्तिनापुर	नंदावर्त	३० धनुष	सुवर्ण	८४ हजार वर्ष
१९	मल्लिनाथजी	कुंभ	प्रभावती	मिथिला	कुंभ	२५ धनुष	नील	५५ हजार वर्ष
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	सुमित्र	पद्मा	राजगृही	कछुआ	२० धनुष	कृष्ण	३० हजार वर्ष
२१	नमिनाथजी	विजय	वप्रा	मिथिला	नीलकमल	१५ धनुष	सुवर्ण	१० हजार वर्ष
२२	नेमिनाथजी	समुद्रविजय	शिवा	शौरिपुर	शंख	१० धनुष	श्याम	१ हजार वर्ष
२३	पार्श्वनाथजी	अश्वसेन	वामा	काशी	सर्प	९ हाथ	नील	१०० वर्ष
२४	वर्धमान स्वामी (महावीर स्वामी)	सिद्धार्थ	त्रिशला	क्षत्रिय कुंड	सिंह	७ हाथ	सुवर्ण	७२ वर्ष

सूतक विचार ।

१ पुत्र जन्मे तो दस दिन का, पुत्री जन्मे तो ग्यारह दिन का, रात को जन्मे तो ग्यारह तथा १२ दिन का सूतक जानना ।

२ उस घर के मनुष्य १२ दिन तक जिन पूजा, प्रतिक्रमण, सामायिक न करें । जप माला, पुस्तक, स्थापना आदि का स्पर्श न करें ।

३ यदि दूसरी जगह जीमते हों, और उस घर का पानी तक भी स्पर्श न करते हों तो जिन पूजा कर सकते हैं ।

४ सूतक वाला घर दुगंछनीय है वहां अशुद्ध परमाणुओं का प्रसार होता है इसलिए उस घर की अग्नि तक भी धूप के लिए नहीं लेना चाहिये ऐसा 'चर्चरी ग्रंथ' में कहा है ।

५ प्रसूति वाली स्त्री ३० दिन तक जिनेश्वर देव के दर्शन न करे और ४० दिन तक जिनेश्वर देव की पूजा न करे । सामायिक प्रतिक्रमण भी न करे तथा साधु को वहरावे भी नहीं ।

६ प्रसूति स्त्री की परिचर्या (सेवा) करने वाली दूसरी स्त्री भी ३० तक जिन पूजा तथा मुनि को दान न देवे, सामायिक, प्रतिक्रमण नमस्कार मंत्र नहीं गुणे ।

७ घर के गोती जनों को पांच दिन का सूतक लगता है, अगर वे सूतक वाले घर खाते पीते हों अन्यथा नहीं।

८ गाय, भैंस, घोड़ी, ऊँटणी इत्यादि घर में प्रसवे तो २ दिन का सूतक, अगर बन में प्रसवे तो एक दिन का सूतक जानना।

९ अपनी निश्राय में रही हुई दासी प्रमुख के प्रसव हो तो ३ दिन का सूतक जानना।

१० भैंस प्रसूत हुए के १५ दिन पीछे, गौ प्रसवे के १० दिन पीछे, बकरी प्रसवे के ९ दिन पीछे, ऊँटणी प्रसवे के १० दिन के पीछे दूध काम में लाना कल्पता है।

ऋतु सम्बन्धी सूतक।

ऋतु वाली स्त्री तीन दिन तक (२४ पहर तक) भांडे, (बर्तनों) इत्यादि को भी स्पर्श नहीं करे, एकांत में रहे, किसी का मुख नहीं देखे, संभाषण नहीं करे, सदा भोजन कांच, पत्थर के बर्तन में अथवा पीतल के बर्तन में करे।

चार दिन तक प्रतिक्रमण नहीं करे। तपस्या करे तो प्रमाण है, पाँचवें दिन जिन दर्शन करे, फलादिक चढ़ावे, छठे दिन जिन पूजा करे पश्चात् सर्व छूट है। चार दिनों के पीछे रोगादिक कारणों से रुधिर देखने में आवे तो दोष नहीं। ऐसा 'महानिशीथ' सूत्र में कहा है। परन्तु उपयोग रखना सर्वत्र श्रेष्ठ है।

मृत्यु सम्बन्धी सूतक।

१ जिसके घर मृत्यु हो उसको १२ दिन का पातक लगता है, उसके घर का आहार, पानी साधु १२ दिन तक नहीं लेवे तथा जिन पूजा न करे, दूर से दर्शन करे, उसके घर का जल, अग्नि, प्रमुख कोई भी द्रव्य जिनपूजा के काम में नहीं लेना चाहिये।

२ मृतक के पास में सोने वाला मनुष्य तीन दिन तक जिन-पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण नहीं करे। दूर से दर्शन करे, पूजा करने वालों को स्पर्श नहीं करे। मृतक को छूने वाला, कंधा देने वाला भी

२४ पहर तक उपरोक्त कार्य नहीं करे। मन ही मन में मनन कर सकता है।

३ श्मशान भूमि तक साथ जाने वालों को आठ पहर तक का पातक रहता है। अगर किसी से भी स्पर्श नहीं हुआ हो, अलहदा रहे तो तीन चार स्नान करे पीछे पूजा, प्रतिक्रमणादि कर सकते हैं किन्तु स्पर्श-दोष नहीं होने देना चाहिये।

४ जिनके घर जन्म और मृत्यु का सूतक-पातक हो उनके घर भोजन करने वाले १२ दिन तक जिन-पूजा न करें।

५ बालक जन्मे और उसी दिन मरे तो एक दिन का पातक।

६ देशान्तर में किसी का मरण हो तो भी एक दिन का पातक।

७ आठ वर्ष के अन्दर उम्र वाला बालक मरे तो जितने वर्ष का हो उतने ही दिन का पातक।

८ गर्भपात जितने महीने का हो उतने ही दिन का पातक ।

९ गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट वगैरह घर में मरे तो उनका कलेवर बाहर ले जाएँ तब तक सूतक है। दूसरे भी पंचेंद्रिय जीव का कलेवर उठाये बाद शुद्ध है ।

१० दास दासी की कन्या अपने निश्राये घर में रहती हो उसके बालक होकर मर जायँ तो तीन रात्रि का सूतक लगे, गर्भपात हो तो जितने महीने का गर्भ गिरे उतने ही पहर का सूतक जानना ।

(अभक्ष्य-अनंतकाय विचार से उद्धृत)



अथ

वीस स्थानक तप की विधि

१. यह तप शुद्ध निर्मल भावना से और उत्तम आचार विचार से आराधन करने वाले भव्य जीव तीर्थङ्कर गोत्र बांध सकते हैं।

२. वीस स्थानक की २० ओलियें यथा शक्ति तप से चाहे उपवास (व्रत) छट्ठ (बेला) अट्ठम (तेला) आयबिल, नीवि, एकासणा से आराधन कर सकता है।

३. जघन्य २ महीने में, उत्कृष्ट ६ महीने में, एक ओलीका आराधन तो जरूर करना चाहिये। १० वर्ष में २० ओलियों का आराधन होना चाहिये। जल्दी करे तो हर्ज नहीं।

४. तपश्चर्या वाले दिन तीन वक्त देववंदन, दो वक्त प्रतिक्रमण, काउस्सग्ग, खमासमणे और २० मालायें यंत्र में लिखे अनुसार करे।

५. कदाचित् देववंदन करने का समय न हो अथवा न आते हों तो सुबह, दोपहर, शाम को चैत्यवंदन करलें। प्रतिक्रमण न आता हो या कराने वाला कोई न हो तो सुबह, शाम को सामायिक तो अवश्य कर लेना।

६. बहनों को कारण वश बाकी रही हुई क्रिया शुद्ध होने के बाद पूरी कर लेनी चाहिये।

इरियावहियं पडिक्कम के खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अरिहंत पद (जिस पद की आराधना करनी हो उस पद का नाम लेकर)

आराधन निमित्तं काउस्सग्ग करूं इच्छं अरिहंत पद आराधन निमितं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए अन्नत्थ० बोल कर जिस पद का जितने लोगस्स का काउस्सग्ग हो उतने ही लोगस्स का चंदेसु निम्मलयरातक काउस्सग्ग करना।

७. वीस स्थानक तप का आराधन करने वाले भाई बहन प्रत्येक (हरएक) पद के खमासमण देकर उपयोग सहित नीचे अनुसार दोहे बोलें।

(१) अरिहंत पदः—

परम पंच परमेष्ठीमां, परमेश्वर भगवान्।
चार निक्षेपे ध्याइए, नमो नमो जिनभाण ॥१॥

(२) सिद्ध पदः—

गुण अनंत निर्मल थया, सहज स्वरूप उजाश।
अष्ट कर्म-मल क्षय करी, सिद्ध भये नमो तास ॥२॥

(३) प्रवचन पदः—

भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि।
त्रिभुवन जीवने सुखकरी, जय जय प्रवचन दृष्टि ॥३॥

(४) आचार्य पदः—

छत्रीश छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुणींद।
जिनमत परमत जाणता, नमो नमो तेह सूरींद ॥४॥

(५) स्थविर पदः—

तजी पर परिणती रमणता, लहे निज भाव स्वरूप।
स्थिर करता भवि लोकने, जय जय थिविर अनूप ॥५॥

(६) उपाध्याय पदः—

बोध सूक्ष्म विणउ जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत।
भणे भणावे सूत्रने जय जय पाठक गीत ॥६॥

(७) साधु पदः—

स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग।
साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभ रंग ॥७।

(८) ज्ञान पदः—

अध्यात्म ज्ञाने करी, विघटे भव भ्रम भीति।
सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति ॥८॥

(९) दर्शन पदः—

लोकालोकना भाव जे, केवलि भापित जेह ।
सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥९॥

(१०) विनय पदः—

शौच मूल थी महागुणी, सर्व धर्मनो सार ।
गुण अनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार ॥१०॥

(११) चारित्र पदः—

रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल कही सदीव ।
भाव रयणनु निधान छे, जय जय संजम जीव ॥११॥

(१२) ब्रह्मचर्य पदः—

जिन प्रतिमा जिन मंदिरा, कंचनना करे जेह ।
ब्रह्मचर्य थी वहु-फल लहे, नमो नमो शियल सुदेह ॥१२॥

(१३) क्रिया पदः—

आतम बोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल ।
तत्वारथ थी धारिये, नमो क्रिया सुविशाल ॥१३॥

(१४) तप पदः—

कर्म खपावे चीकणा भाव मंगल तप जाण ।
पचास लब्धि ऊपजे, जय जय तप गुण खाण ॥१४॥

(१५) गौतम पद।

छट्ठ छट्ठ तप करे पारणु, चउनाणी गुण धाम।
ऐ सम शुभ पात्र को नहीं, नमो नमो गोयम स्वाम ॥१५॥

(१६) जिन पद।

दोष अहार क्षम थया, उपन्या गुण, जस अंग।
वैयावच्च करीये मुदा नमो नमो जिनपद संग ॥१६॥

(१७) संयम पद।

शुद्धातम गुण में रमे, तजी इंद्रिय आशंस।
थिर समाधि संतोषमा, जय जय संयम वंश ॥१७॥

(१८) अभिनव ज्ञान पद।

ज्ञानपद सेवो भविक, चारित्र समकित मूल।
अजर अमर पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥१८॥

(१९) श्रुत पद।

वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीत।
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुख लीन ॥१९॥

(२०) तीर्थ पद।

तीर्थ यात्रा प्रभाव से, शासन उन्नति काज।
परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज ॥२०॥

नोट.—तपस्या करने वाला, पद के काउस्सग्ग अनुसार हर एक वक्त दोहा बोल कर खमासमण देवे।

श्री वीस स्थानक पद का जाप, काउस्सग्ग, साथिये और खमासमण आदि का यंत्र।

नं०	जाप	माला	काउस्सग्ग	खमासमण	साथिया
१	ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं	२०	२४	२४	२४
२	,, नमो सिद्धाणं	२०	१५	१५	१५
३	,, नमो पवयणस्स	२०	४५	४५	४५
४	,, नमो आयरियाणं	२०	३६	३६	३६
५	,, नमो थेराणं	२०	१०	१०	१०
६	,, नमो उवज्झायाणं	२०	२५	२५	२५
७	,, नमो लोए सव्व साहूणं	२०	२७	२७	२७
८	,, नमो नाणस्स	२०	५	५	५
९	,, नमो दंसणस्स	२०	६७	६७	६७
१०	,, नमो विणयस्स	२०	१०	१०	१०
११	,, नमो चरित्तस्स	२१	७०	७०	७०
१२	,, नमो बंभवय धारिणं	२०	९	९	९
१३	,, नमो किरियाणं	२०	२५	२५	२५
१४	,, नमो तवस्स	२०	१२	१२	१२
१५	,, नमो गोयमस्स	२०	२८	२८	२८

नं०	जाप	माला	काउस्सग्ग	खमासमण	साथिया
१६	ॐ ह्रीं नमो जिणाणं	२०	२०	२०	२०
१७	,, नमो संयम धारिणं	२०	१७	१७	१७
१८	,, नमो अभिनव नाणस्स	२०	५१	५१	५१
१९	,, नमो सुयस्स	२०	१२	१२	१२
२०	,, नमो तित्थस्स	२०	५	५	५

नोट—हर एक काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा तक करना।

॥ बीस स्थानक विधि समाप्तः ॥

❁ श्री वर्द्धमान तपो विधान ❁

इस तप को करने वाले को पहले पांच ओलियां पूरी कर लेनी चाहियें। वे ओलियां इस प्रकार होंगीः-एक आयंबिल, एक उपवास दो आयंबिल, एक उपवास, तीन आयंबिल, एक उपवास चार आयंबिल, एक उपवास, पांच आयंबिल, एक उपवास, इस प्रकार एक साथ में बीस दिन तक पन्द्रह आयंबिल और पांच उपवास एक साथ करने से पांच ओलियां पूर्ण हो जाती हैं। बाद में शक्ति अनुसार धीरे धीरे आयंबिल बढ़ाते हुए आखिर १०० ओलियां पूर्ण करने में ५०-५० आयंबिल और १००

उपवास होते हैं। इन्हें एक साथ करने वाले भव्य आत्मा को चौदह वर्ष, तीन मास और बीस दिन लगते हैं।

इस तप की आराधना करने वाले को सदैव उभय काल (दोनों समय) प्रतिक्रमण व अष्ट प्रकारी जिनपूजा और दोनों समय प्रातः व सायं पडिलेहन तीन बार देव वंदन यथा शक्ति करने चाहियें।



योगिनी यन्त्र

ईशान ८-३०	पूर्व १-६	अग्नि ३-११
उत्तर २-१०	×	दक्षिण ५-१३
वायव्य ७-१५	पश्चिम ६-१४	नैऋत्य ४-१२

दिशा शूल

पूर्व	सोम	शनि
दक्षिण	गुरु	•
पश्चिम	शुक्र	रवि
उत्तर	मङ्गल	बुध

काल वासा

ईशान •	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	×	दक्षिण गुरु
वायव्य चन्द्र	पश्चिम मङ्गल	नैऋत्य बुध

दिन का चौघड़िया

सं	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
१	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
२	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
३	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
४	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
५	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
६	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
७	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
८	उ	अ	रो	ला	शु	च	का

चन्द्र वासा

पूर्व	मेष	सिंह	धन
दक्षिण	वृष	कन्या	मकर
पश्चिम	मिथुन	तुला	कुम्भ
उत्तर	कर्क	वृश्चिक	मीन

रात्रि का चौघड़िया

सं	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
१	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
२	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
३	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
४	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
५	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
६	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
७	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
८	शु	च	का	उ	अ	रो	ला

—: दूज का स्तवन :—

वीर प्रभु आतम गुरु, प्रणमी मन वच काय।
पर्व तिथि स्तवना करूं, सीमरी शारद माय ॥ १ ॥
पर्व तिथि जिन शासने, वर्णवी श्री जिनदेव ।
दूज पचमी अष्टमी, एकादशी स्वयेम ॥ २ ॥
चतुर्दशी शुदि पूणिमा, वदि अमावश इमवार ।
आराधे शुभ भाव से, श्री संघ चार प्रकार ॥ ३ ॥
दूज एकादशी पंचमी, ज्ञानाराधन सार ।
अष्टमी पूनम चउदशी, चरणाराधन धार ॥ ४ ॥
इन में से तिथि दूज की, स्तवना करूं उदार ।
पूर्व पुरुष आचार्य की, परम्परा आधार ॥ ५ ॥

(चालः- विमलाचल धारा)

ढाल पहली।

तिथि दूज आराधो आतम साधो भाखे श्री भगवान्,
धर्म दोय प्रकारे शास्त्रानुसारे, भविजन धारे (भाखे श्री भगवान)
ज्ञान धर्म श्रुत धर्म के नामे, धर्म का पहला प्रकार ।
चरण धर्म चारित्र के नामे, दूजा धर्म प्रचार ॥ १ ॥
(तिथि दूज आराधो)

ज्ञान क्रिया भ्यास् मोक्षज करिए, दोनों एक समान।
ज्ञान चक्षु और पाद क्रिया से पावे पद निर्वाण रे ॥ २ ॥
अन्धा और लूला दो मिल कर, पहुंचे इच्छित स्थान।
दोनों ही (जब) जुदे एकान्ते, पावे नहीं समानरे ॥ ३ ॥
अथवा दुविध धर्म प्रकाशे, तीर्थंकर गणधार।
दोनों ही मुक्ति के साधक सागार अरु अणगार रे ॥ ४ ॥

ढाल दूसरी (कव्वाली)

कल्याणक पांच जिनवर के, अनादि काल की रीति।
करे उत्सव मिली देवा, जिन्हें हो धर्म से प्रीति ॥ १ ॥
च्यवन जन्म दीक्षा केवल ज्ञान, पांचवां मोक्ष कल्याणक।
करे सब देवता भावे, बजाते दुन्दुभि आनक ॥ २ ॥
आराधन करते नरनारी, द्वितीया दिवस शुभ भावे।
सुने द्वितीया के कल्याणक, मनोहर भावना लावे ॥ ३ ॥

ढाल तीसरी (होई आनन्द बहार रे)

कल्याणक सुखकार रे, प्रभु देवाधि देवा
देवाधिदेवा जिनवर सेवा, (कल्याणक सुखकार रे) प्रभु।
माघ शुदि द्वितीया जन्म रे, अभिनन्दन जिनधार रे ॥१॥
वासुपूज्य जिन केवल पाया, माघशुदिदूज सार रे ॥२॥
अरनाथ जिन च्यवन कल्याणकफाल्गुनशुदि दूज तार रे॥३॥

वैशाख(माधव)शुदि द्वितीया दिनरे, शीतलनाथ भव पाररे ४॥
सुदि दूज नभ मास की रे, सुमतिनाथ अवतार रे ॥५॥
ज्ञान ध्यान, जप जाप से रे, आराधे नर नार रे ॥६॥
विजयानन्द सूरि महाराया, तपगच्छ नभ दिनकार रे ॥७॥
तस्स पट्टधर सूरि सोहावे, वल्लभ चरण आधार रे ॥८॥
६ ० ० ९
संवत रस नभ गगन हस्ते, मृगसुदि दूज भौमवार रे ॥९॥
हस्ती तुंडी तीरथ के स्वामी, राता महावीर गुलजार रे १०॥
आतम लक्ष्मी वल्लभ हर्षे, बीजापुर मोजार रे ॥११॥

॥ दूज का स्तवन समाप्त ॥

(महावीर तोर समवसरण की रे ।

—: पंचमी का स्तवन :—

दोहा:—

वीर प्रभु आतम गुरु, प्रणमी मन वच काय ।
पर्व तिथि स्तवना करूं सीमरी सारदमाय ॥ १ ॥
पर्व तिथि जिन शासने, वर्णवी श्री जिन देव ।
दूज. पंचमी. अष्टमी. एकादशी स्वयेम ॥ २ ॥

चतुर्दशी शुदि पूर्णिमा, वदि अमावस इमवार ।
आराधे शुभ भाव से, श्री संघ चार प्रकार ॥ ३ ॥
दूज. एकादशी. पंचमी ज्ञानाराधन सार ।
अष्टमी पूनम चउदशी चरणाराधन धार ॥ ४ ॥
इन में से तिथि पंचमी, स्तवना करूं उदार ।
पूर्व पुरुष आचार्य की, परम् परा आधार ॥ ५ ॥

(देशीः— जिनंदा तोरे चरण कमल की रे)

ढाल पहली

जिनंदा तोरे ज्ञान की महिमा रे
कथिता पारन आवे,
गणधर स्वामी फरमावे,
पावे सो तुम सभपावे (जिनंदा तोरे)

द्रव्य प्रर्याय अनंता रे, अनभिलाप्य अनंत तारे
अभिलाप्य अनंते भागे,
वदे केवली परसद आगे,
सुनते भविजन अनुरागे (जिनंदा तोरे)

एकावन भेदे रे,ज्ञानी ज्ञान को वेदे रे
अष्टा विंशति मतिधारा,
श्रुत चउदश विंश विचारा,

ओहि पट् असंख्य प्रकारा(जिनंदा तोरे)
मन पर्यन दोय प्रकारा रे, केवल एक उदारारे,
ए बोला चउ एक बोला,
श्रुत ज्ञान ही एक अमोला,
पररूप निजातम खोरा (जिनंदा तोरे)

आराधना करिये रे, ज्ञान-पंचमी उच्चरिये रे,
तप पांच वरस पांच मासे,
पूरण होवे उल्लासे,
उद्यापन साथे मासे (जिनंदा तोरे)

आराधना ज्ञानी रे, विराधना हानी रे,
वरदत्त गुण मंजरी जानो,
दृष्टान्त दोय वखानो,
धार्मिक व्यवहारिक मानो(जिनंदा तोरे)

(चाल ढूंढ फिरा, मैं जग सारा)
ढाल दूसरी ।

कल्याणक तप सारा तप सारा भविजन भावे करे,
जिन कल्याणक तप सुखकारी, भावे करे भविजन नर नारी,
निज आतम उद्धारा उद्धारा (भविजन०)॥१॥

आत्म लक्ष्मी प्रभु परतापे
वल्लभ हर्षे विचर्णी ने (वन्दो) ९

॥ पंचमी का स्तवन समाप्त ॥

—: अष्टमी का स्तवन :—

(दोहा)

वीर प्रभु आत्म गुरु प्रणमी मन वच काय
पर्व तिथि स्तवना करूं सिमरी शारद माय (१)

पर्व तिथी जिन शासने वर्णवी श्री जिन देव
दूज पंचमी अष्टमी एकादशी स्वयेम (२)

चतुर्दशी सुदि पूर्णिमा, वदि अमावस इमबार
आराधे शुभ भाव से, श्री संघ चार प्रकार (३)

दूजएकादशी पंचमी, ज्ञानाराधन सार
अष्टमी पूनम चउदसी, चरणा राधन धार (४)

इन में से तिथि अष्टमी, स्तवना करूं उदार
पूर्व पुरुष आचार्य की, परंपरा आधार (५)

(चाल-मल्लि जिन नाथ जी व्रत लीजे रे) ढाल पहली

वरकाणा पार्श्व जी सुखकारी रे,
तुम चरण कमल बलिहारी (वरकाणा)

नमि पारस प्रभु जिन चन्दा रे,
अष्टमी तप शिव सुख कन्दा रे,
करूं वर्णन आतमा नन्दा (वरकाणा) १

प्रभु वीर जिनेश्वर वाणी रे,
करो धर्म तमे भवि प्राणी रे,
...आतम कल्याण पिछानो (वरकाणा) २

दान शील तपस्या भारी रे,
भाव धर्म ए चार प्रकारी रे,
जिन में है तप निर्जराकारी (वरकाणा) ३

तप से सर्व सिद्धि थावे रे,
अष्टमी अष्ट कर्म खपावे रे,
जीव मोक्ष परम पद पावे (वरकाणा) ४

नित्य धर्म करण उपदेश रे,
बन आवे नहीं हमेश रे,
करो पर्व दिनों में विशेष (वरकाणा) ५

आयु बंध पर्व में थावे रे,
प्राणी धर्म से सद् गति जावे रे,
जिन गणधर मुनि फरमावे (वरकाणा) ६

अष्टमी आराधो प्राणी रे,
चारित्र तिथि सन्मानी रे,
आतम लक्ष्मी की निशानी (वरकाणा) ७

(देशीः– चिंतामणि स्वामी रे) ढाल दूसरी

कल्याणक धारी रे, कल्याणक कारी रे
कल्याणक सेविये हो.........जी

कल्याणक देवाधिदेव प्रमाण,
कल्याणक करे भविजीव कल्याण (कल्याणक)

महा सुदि अष्टमी दिने, जनमे अजित जिनंद
फागणसुदि अष्टमी च्यवन, संभवनाथ जिनंद (कल्याणक) १
चैत्र वदि अष्टमी दिने, जनमे आदि जिनंद
दीक्षा भी इस दिन गही, हुवे प्रथम मुनिंद (कल्याणक) २
वैशाखसुदि की अष्टमी, अभिनंदन निर्वाण
जन्म हुआ इसही तिथि, सुमतिनाथ भगवान् (कल्याणक) ३
मुनि सुव्रत जिन जनमियाँ, जेठवदि दिन आठ
अषाढ़सुदि की अष्टमी, मोक्ष नमि जिन ठाठ (,,) ४
श्रावणवदि की अष्टमी, जन्मे नमिजिन भाण
इसही तिथि को जानिये, पार्श्वनाथ निर्वाण (,,) ५

भादरवा वदि अष्टमी, च्यवन कल्याणक जाण
श्री सुपार्श्व जिन देवका, करे कोढी कल्याण ६
पर्व तिथि आराधिये, अष्टमी आतम काज
आतम लक्ष्मी पामिये, मिले चिदानन्दराज (कल्याणक) ७
वरकाणा पारस प्रभु, पास बिजोवा गाम
वीर चोविसो छोंत्तरे, चोपन आतम राम (......) ८
दोय हजार पट् विक्रमे, सुदि अष्टमी पोष मास
स्तवना अष्टमी पर्वकी, करी पूर्ण उल्लास (......) ९
तप गच्छ नायक हीरला, विजयानन्द सूरीश
तस्स पट्टधर वल्लभ सूरि, नमे हर्ष निशदीस (......)१०

॥ अष्टमी का स्तवन समाप्त ॥

—: महावीर का स्तवन :—

(चाल माता मरू देवी नानद)

राता वीर प्रभु जी तार,
तारो सेवक अर्ज करत है भवोदधि पार उतार
तु प्रभु राता सेवक राता, राता राता मेल
पीन नही वीर प्रभु जी राता, ए आतम का खेल(राता वीर)१
वीर प्रभुजी संगे राता, सेवक तुम गुण रंग
अंगा अंगी संग मिले तब, दोनों ही निरंग (राता वीर)२

हस्ती तुण्डी तीरथके मंडन, प्रभु राता महावीर
समीप बीजापुर मरू देशे, भवदावानल नीर (राता वीर)३

संवत् षट् नभ नभ मगशीर, सुदि षष्टी कविवार
बीजापुर संघे करवाया, वर्तमान उच्चार (.....)४

शीशोदिया वंशज देवीसिंह, राज्य शुभ महकार
आतम लक्ष्मी प्रभु यात्रा से, वल्लभ हर्ष अपार(.....)५

॥ महावीर का स्तवन समाप्त ॥

—: राणक पुर का स्तवन :—

(चालः—जिनंदा तोरे चरण कमल की रे)

जिनंदा तोरे समोसरण की रे
शोभा है अपरं पारी
देखत सब सुर नर नारी
पावत हैं आनंद भारी (जिनंदा.) १

आदि जिन देवा रे. जग वल्लभ तुम सेवा रे
करे भविजन ललित प्रकारे
समुद्र शास्त्र आधारे
पूर्णानन्द पदवी धारे (जिनंदा) २

समोसर धरती रे, बारा योजन फरती रे

आधा योजन कम जाणो
जिन अजित से निमि मानो
पारस गाउ पाँच वखानो (जिनंदा) ३
योजन भूमि सोहंदा रे, महावीर जिन चंदा रे
चौमुख वाणी फरमावे
शिव मार्ग विशुद्ध बतावे
गुण इन्द्र प्रभुके गावे (जिनंदा) ४
ज्ञान चरण जनको रे, सम्यग् प्रकाश मनको रे
आतम बलवंता सेवे
आतम लक्ष्मी फल लेवे
हर्ष वल्लभ जय लेवे (जिनंदा) ५
तपगच्छ गगन सोहे रे विजयानंद सूरीमोहे रे
वल्लभ सूरी पट्टधारी
त्रैलोक्य दीपक स्तवकारी
राणकपुर तीर्थ मझारी (जिनंदा) ६
संवत् षट् दोय हजारी रे, सादडी रहे चार मासी रे
मगशर वदी द्वितीया रंगे
एकादश साधु उमंगे
करी यात्रा श्री संघ संगे (जिनंदा) ७

॥ राणकपुर का स्तवन समाप्त ॥

—: एकादशी का स्तवन :—

दोहा:—

वीर प्रभु आतम गुरु, प्रणमी मन वच काय
पर्व तिथि स्तवना करूं, समरी सारद माय ॥१॥
पर्व तिथि जिन शासने, वर्णवी श्री जिनदेव ।
दूज पंचमी अष्टमी, एकादशी स्वयमेव ॥२॥
चतुर्दशी शुदि पूर्णिमा, वदि अमावस इमवार।
आराधे शुभ भाव से, श्री संघ चार प्रकार ॥३॥
दूज एकादशी पंचमी, ज्ञानाराधन सार ।
अष्टम पूनम चउदशी, चरणाराधन धार ॥४॥
इन मेंसे तिथि एकादशी, स्तवना करूं उदार ।
पूर्व पुरुष आचार्य की, परंपरा आधार ॥५॥

ढाल-१ली (आंचली:— वलिहारी वलिहारी)

वलिहारी वलिहारी वलिहारी नेमिनाथ जाऊं तोरी,
ब्रह्मचारी प्रभु जी सेवक तारिये जी ।
नगरी सुन्दर सोहे, द्वारावती मानो मोहे,
राज करत गिरधारी ··· नेमि ॥ १ ॥
प्रभुजी आण पधारे, चौंतीस अतिशय धारे,
गुण पैंतीस वाणी धारी ··· नेमि ॥ २ ॥

कृष्ण बलभद्र आए, यादव साथ सोहाए।
करते बन्दन विधिसारी ··· नेमि ॥ ३ ॥

पर्षदा बैठी बारे, वाणी प्रभु जी उच्चारे।
आराधो एकादशी भारी ··· नेमि ॥४॥

पूछी नृप वासुदेवा, कृपा करो देवाधिदेवा।
हेतु एकादशी गुणकारी ··· नेमि ॥५॥

कहे प्रभु सुनियो काना, एकादशी जिनवर नाना।
कल्याणक अवधारी ······ नेमि ॥६॥

पद्म प्रभु मोक्ष पाया, मागसर मास गाया।
एकादशी वदि प्यारी ··· नेमि ॥७॥

मौन एकादशी मोटी, कल्याणक जिनवर कोटी।
मास मागसर उजियारी ·· नेमि ॥८॥

आतम लक्ष्मी धारी, हर्ष वल्लभ सुविचारी।
कल्याणक मंगलकारी ··· नेमि ॥९॥

ढाल २री (आंचली:-धन धन वे जग में नर नार
विमलाचल के जाने वाले)

धन धन नमिनाथ भगवान्, एकादशी व्रत फरमाने वाले
अरनाथ जी दीक्षा जान, नमिनाथ जी केवल ज्ञान

मल्लिनाथ जी जन्म प्रमाण,
चरण केवल त्रिक पाने वाले ॥ १ ॥

अष्टादश में जिनदेव करो, एकवीस में जिनसेव,
एकोनवीस में एव जिनेश्वर पदको दियानेपाले ॥२॥

ऐसे पाच भरत में मान, ऐरावत मांच पिछान,
तीर्थङ्कर दशक प्रधान ।
कल्याणक पंचाशत सर वाले ॥३॥

तीन काल के श्री भगवान्, संख्या में तीस बखान,
कल्याणक डेढ़ सौ ठान ।
एकादशी महिमा गाने वाले ॥४॥

इस कारण महिमा खास, करे मौन पणे उपवास,
पौषध विधि सह उल्लास
मौन एकादशी करने वाले ॥५॥

व्रतधारी सुव्रत सेठ मेरु सम निश्चल ठेठ,
लीनो अन्तिम फल ।
जेठ आतम आनन्द धराने वाले ॥६॥

सुन वाणि नेमि जिनंद, कृष्णादि भविजन वृन्द,
आतम लक्ष्मी का कंद
धरी व्रत आनन्द पाने वाले ॥७॥

ढाल तीसरी (चाली:- सिद्धाचलके वासी तुमको लाखोंप्रणाम)
कल्याणक आराधो साधो आतम काज, साधो आतम काज।
पौष वदि अगियारस सारी, पार्श्वनाथ जी दीक्षा धारी।
लीना संयम राज–साधो आतम ॥ १॥
अजितनाथ जिन केवल पाया, पोषवदि इगिपारस गाया।
क्षय करी मोह समाज–साधो आतम काज ॥२॥
फागणवदि अगिपारस जाणो, महिमा केवल ज्ञान वखानो।
ऋषभदेव महाराज–साधो आतम काज ॥३॥
चैत्रसुदि अगिपारस सुन्दर, केवल महिमा करे पुरंदर।
सुमतिनाथ मुनिराज–साधो आतम काज ॥४॥
ज्ञान तिथि अगिपारस धारो, भणो भणावो ज्ञान वधारो।
मिटे कर्मकी खाज–साधो आतम काज ॥५॥
रसखं खं कर विक्रम वर्षे,(२००६)रसऋषि जिनवरवीर सहर्षे।
पचपने आतम राज–साधो आतम काज ॥६॥
श्रावणसुदि एकम विधुवारे, प्रल्हादन पुर संघ जयकारे।
विजयानन्द सूरीराज–साधो आत्म काज ॥७॥
तपगच्छस्वच्छ दिवाकर सोहे, गुणगणसे भविजनको मोहे।
सूरीश्वर सिरताज–साधो आत्म काज ॥८॥
रामपट्टे वल्लभ सूरी गाया, आतम लक्ष्मी प्रभु ध्याया।
वल्लभ सीधा काज–साधो आतम काज ॥९॥
॥ एकादशी स्तवनं समाप्तम् ॥

धन्यवादः—

इस पुस्तक के छपवाने व चित्रों के बनवाने में जिन महानुभावों ने उदार हृदयसे आर्थिक सहायता की है हम सभा की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं, उन का परिचय निम्नलिखित है।

पुस्तक के लिये

२००) सेठ भैरोंदान प्रसन्नचन्द जी कोचर बीकानेर।

२००) श्रीमती धन्नाबाई जी धर्मपत्नी भैरोंदान जी सेठिया ,,

६००) सेठ इन्द्रचन्द्र जी ढड्ढा बीकानेर (जैनकन्या पा० फंड से)

२५) केसर बहू (बेन) पाटन बीकानेर।

१००) ला. शिवचन्द रोशनलाल ब्रजलाल कोचर आहलूवाला कटरा, अमृतसर।

१००) ला. तिलकचन्द उमरकुमार (लाहौर वाले) अम्बाला०

२५) ला. नानकचन्द मुलखराज (गुजरांवालिये) लुधियाना

चित्रों के लिये

५०) ला. ताराचन्द नरंजनदास ओसवाल जैन अम्बालाशहर

५०) ला. सुन्दरलाल रोशनलाल जैन स्टेशनर, अम्बाला शहर

१००) ला. इन्द्रसेन प्रेमचन्द ओसवाल जैन अम्बाला शहर।

५०) ला. सदासुखराय केसरदास जैन अम्बाला शहर।

३००) श्री छन्नालाल सोहनलाल करनावट कलकत्ता।

३४७॥≡)। ला. बनारसीदास विजयकुमार जैन अम्बाला शहर।

सुन्दरलाल, मन्त्री

श्री आत्मानन्द जैन सभा, अम्बाला शहर।